नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 259, नई दिल्ली, मंगलवार 25 नवम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

रिश्ता चाहे इस धरती पर कोई भी हो, सबका सिर्फ़ एक ही पासवर्ड है, 'भरोसा'

02 पर्यावरण पाठशाला : वेदों से सीख – प्रकृति की रक्षा ही जीवन की रक्षा है

06 आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कब और कैसे करना है

08 एसआईआर पर बयान को लेकर मंत्री इरफान फंसे , झारखंड में राजनीतिक घमासान

दिल्ली परिवहन आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त और प्रवर्तन शाखा (दिल्ली यातायात पुलिस और परिवहन विभाग) के कारण दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली के आदेश दरकिनार

संजय बाटला

सड़को पर लगने वाले जाम, दुर्घटनाओं और असुरक्षा से दिल्ली की सड़को को मुक्त करने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 31 जुलाई 2014 को उच्च न्यायालय द्वारा आदेश जारी किया गया था और दिसम्बर 2014 को उपराज्यपाल दिल्ली ने 236 सड़को की सूची जारी कर घोषणा के माध्यम से उन सड़कों पर ई रिक्शा चलाने पर प्रतिबंध लगाया था जो दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के अनुरूप सार्वजनिक सुरक्षा और यातायात नियंत्रण के लिए निर्धारित की गई थी पर दिल्ली में प्रवर्तन शाखाओं ने उसे दरकिनार कर रखा हैं और परिवहन विभाग के आयुक्त, दिल्ली पुलिस आयुक्त भी बैठे है सब कुछ देखते हुए चुप आखिर क्यों ?

आपकी जानकारी हेतु बता दें की दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल द्वारा जारी घोषणा के खिलाफ कई लोगों ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी पर दिल्ली की सड़को पर सुरक्षा और यातायात नियंत्रण को मद्देनजर रखते हुए उच्च न्यायालय ने ई रिक्शा पर पाबंदियां लागू रखी

अब आप को बताते है **इन 236 सड़कों की नियोजन और वर्गीकरण के मानदंड क्या थे ?**

दिल्ली में ई-रिक्शों पर लगी रोक के तहत 236 सड़कों की सूची बनाते समय नियोजन और वर्गीकरण के मुख्य मानदंड निम्न थेः

सुरक्षा और प्रमुख मार्गों का ध्यान सूची में शामिल सड़कें वे थीं जो मुख्य यातायात के मार्ग, वीआईपी क्षेत्र, और संवेदनशील स्थलों से गुजरती थीं जैसे कि बाराखंबा रोड, राजपथ, तिलक मार्ग, आदि। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इन क्षेत्रों में सार्वजनिक और सरकारी सुरक्षा बाधित न हो, वहां ई-रिक्शों के चलने पर प्रतिबंध लगाया गया।

ट्रैफिक प्रबंधन जिन सड़कों पर यातायात का दबाव अधिक था या जहां भारी वाहन और तेज गति से वाहन चलते हैं, उन पर ई-रिक्शों की अनुमति नहीं दी गई क्योंकि उनकी धीमी गति ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाओं का कारण बन सकती थी।

पब्लिक सेफ्टी और नियम पालन वे सड़कें चयनित की गईं जहां ई-रिक्शा संचालक नियमों का उल्लंघन करते पाए गए या जैसे कोई उचित कानूनी पंजीकरण, हेलमेट पालन, और यातायात नियमों का पालन न हो।

संवेदनशील और प्रशासनिक क्षेत्र दिल्ली के प्रशासनिक, सरकारी और इतिहासिक क्षेत्रों को विशेष सुरक्षा के तहत रखा गया, जिनमें ई-रिक्शों को प्रतिबंधित किया गया ताकि सुरक्षा और सार्वजनिक व्यवस्था बाधित न हो।

ये मानदंड दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल के निर्देशों के परिप्रेक्ष्य में तय किए गए थे, ताकि राजधानी में ट्रैफिक और सुरक्षा की उचित व्यवस्था बनाई जा सके।

अब आप को बताते है **इन प्रतिबंधों के खिलाफ कौन से कानूनी कदम उठाए गए थे**

दिल्ली में ई-रिक्शा प्रतिबंध के खिलाफ कई कानूनी कदम उठाए गए थे। प्रमुख कानूनी कार्रवाई में एक जनहित याचिका (PIL) शामिल थी, जिसे सामाजिक कार्यकर्ता शहनवाज खान ने दायर किया था। इस याचिका में ई-रिक्शों को बिना पंजीकरण और लाइसेंस के चलाने को असंवैधानिक और सार्वजनिक सुरक्षा के लिए खतरा बताया गया था। इस याचिका पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने 2014 में ई-रिक्शों पर प्रतिबंध लगा दिया था।ई-रिक्शा ऑपरेटरों और अन्य पक्षों ने इस प्रतिबंध की समीक्षा याचिका दायर की थी, जिसमें सरकार के द्वारा बनाए गए अंतरिम दिशानिर्देशों के तहत ई-रिक्शा चलाने की अनुमति मांगी गई थी, लेकिन उच्च न्यायालय ने अपने फैसले को बरकरार रखा था और कहा कि वर्तमान नियमों के तहत ये वाहन अवैध हैं जब तक केंद्र सरकार इनके संचालन के लिए कानून नहीं बनाती।

इसके अतिरिक्त, कई ई-रिक्शा चालक और उनके संगठन इस प्रतिबंध के खिलाफ कानूनी लड़ाई लड़ते रहे, और समय-समय पर दिल्ली सरकार और पुलिस की कार्रवाई के खिलाफ भी दलीलें दी गईं, जिसमें अवैध पंजीकरण, रजिस्ट्रेशन और लाइसेंस के मुद्दे थे।

सारांश में, कानूनी कदम मुख्यतः याचिकाओं और अदालतों में संगठित विरोध के रूप में उठाए गए, जो ई-रिक्शा के संचालन के नियमों और प्रतिबंधों को चुनौती देते थे, लेकिन दिल्ली उच्च न्यायालय ने सुरक्षा और ट्रैफिक प्रबंधन कारणों से प्रतिबंध को लागू रखा

अब आपको बताते हैं **ई रिक्शे को दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़को पर चलने से रोका और कब**

ई रिक्शे को दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली ने किन सड़को पर चलने से रोका और कब दिल्ली उच्च न्यायालय और उपराज्यपाल दिल्ली द्वारा ई-रिक्शों को राजधानी की 236 सड़कों पर चलने से रोका गया था, जिसमें मुख्य रूप से वीआईपी और प्रमुख मार्ग शामिल हैं। यह रोक 2014 में अधिसूचित की गई, जब लि. गवर्नर नजीब जंग के अनुमोदन के बाद दिल्ली ट्रांसपोर्ट विभाग ने नोटिफिकेशन जारी किया था।

किन सड़कों पर रोक लगी ? यह प्रतिबंधित सड़कों की सूची दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है, विशेष रूप सेः

- ***नई दिल्ली:** * 77 सड़कें, जैसे बाराखंबा रोड, तिलक मार्ग, राजपथ, अशोक रोड, तुगलक रोड, शाहजहाँ रोड, रफी मार्ग, फिरोजशाह रोड, संसद मार्ग, और औरंगजेब रोड।
- ***साउथ दिल्ली:** * 38 मार्ग, जैसे लाला लाजपत राय मार्ग, ओरोबिंदो मार्ग, लोधी रोड, RTR, नेल्सन मंडेला मार्ग, सीरी फोर्ट रोड, NH-8, अरुणा आसफ अली रोड।
- ***ईस्ट दिल्ली:** * विकास मार्ग, यूपी लिंक रोड, शकर्पुर चौक से मदर डेयरी रोड, पुस्ता रोड, जीटी रोड, लोनी रोड।
- ***वेस्ट दिल्ली:** * जेल रोड, आउटर रिंग रोड, पायल सिनेमा रोड, मायापुरी रोड।
- ***नॉर्थ-ईस्ट, साउथ-वेस्ट, नॉर्थ आदि:** * इन जिलों की कुछ विशेष सड़कें भी सूचीबद्ध थीं, जैसे रिंग रोड, कैप्टन गौर मार्ग, मथुरा रोड।

कब लगी रोक ? दिल्ली उच्च न्यायालय ने 31 जुलाई 2014 को आदेश दिया था कि ई-रिक्शे रपब्लिक सेफ्टीर को देखते हुए बैन किए जाएँ। इसके बाद दिल्ली सरकार और उपराज्यपाल ने 10-11 दिसंबर 2014 को 236 सड़कों के लिए नोटिफिकेशन जारी किया।

वजह यह रोक दिल्ली के सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक और नागरिकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए लगाई गई थी, क्योंकि बिना नियमों के ई-रिक्शों का संचालन खतरनाक माना गया था।

इन प्रतिबंधों का उद्देश्य मुख्य यातायात मार्गों, वीआईपी क्षेत्रों और संवेदनशील जंक्शनों की सुरक्षा सुनिश्चित करना था।

प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और फैसलों का सार प्रयोजित याचिकाओं के मुख्य तर्क और दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसलों का सार निम्न हैःयाचिकाकर्ताओं के तर्क याचिकाकर्ताओं ने मुख्य रूप से यह तर्क दिया कि ई-रिक्शे गरीब और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए आवश्यक सार्वजनिक परिवहन का साधन हैं, जिससे रोजगार और सामान ढुलाई का भी जरिया है। उन्होंने कहा कि ई-रिक्शा संचालन पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाना संवैधानिक अधिकारों और स्थानीय लोगों के आजीविका के अधिकार के विरुद्ध है।याचिकाकर्ताओं ने केंद्र और राज्य सरकारों से ई-रिक्शों के लिए नियमन और पंजीकरण का उचित कानून बनाने की मांग की, ताकि उनका सुरक्षित और नियंत्रित संचालन हो सके।यह भी तर्क दिया गया कि प्रतिबंध लगाने से आम जनता को आर्थिक और यात्रा में भारी कठिनाई होती है।उच्च न्यायालय के फैसलों का सार दिल्ली उच्च न्यायालय ने इस पर बल दिया कि ई-रिक्शा सार्वजनिक सुरक्षा, यातायात की जाम तथा नियमों के उल्लंघन के कारण खतरनाक साबित हो रहे थे।अदालत ने कहा कि जब तक ई-रिक्शा के लिए उपयुक्त रूप से नियम और मानक न बनें, तब तक बिना नियंत्रण के उनका संचालन शहर के लिए खतरा है। न्यायालय ने ई-रिक्शों को 236 प्रमुख और संवेदनशील सड़कों पर चलने से प्रतिबंधित कर दिया और इसे सार्वजनिक हित में आवश्यक माना। अदालत ने सरकारों को निर्देश दिया कि वे ई-रिक्शा संचालन के लिए कड़े सुरक्षा और पंजीकरण नियम बनाएं।

निष्कर्ष याचिकाकर्ताओं का उद्देश्य था ई-रिक्शा को पकड़ा जाना या पूरी तरह प्रतिबंधित होने से बचाना, जबकि न्यायालय ने सार्वजनिक सुरक्षा, ट्रैफिक प्रबंधन और नियम पालन को सर्वोपरि रखा। इसीलिए, उच्च न्यायालय ने ई-रिक्शा पर पाबंदियाँ लगाते हुए उन्हें सुरक्षित और नियंत्रित संचालन के लिए पंजीकरण की आवश्यकता पर जोर दिया।

अब दिल्ली की सड़को पर ई रिक्शा के कारण धीमी गति, जाम, दुर्घटनाएं और नुकसान के लिए जन समुदाय किसे जिम्मेदार मानती हैं स्वयं फैसला करें।

[TO BE PUBLISHED IN DELHI GAZETTE PART- IV EXTRA –ORDINARY]
GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
(TRANSPORT DEPARTMENT)
5/9,UNDER HILL ROAD,DELHI-54.

No.F.DC/ARU/TPT/245/2014/PART-II/269 Dated the 11th December,2014

NOTIFICATION

No.F. DC/ARU/TPT/245/2014/PART-II/269 . –In exercise of the powers conferred by section 115 of the Motor Vehicles Act, 1988 (Act 59 of 1988), the Lieutenant Governor of the National Capital Territory of Delhi on being satisfied that it is necessary in the interest of public safety and convenience of general public of National Capital Territory of Delhi to regulate the movement of E-Rickshaws on Delhi/New Delhi roads, hereby prohibits the plying and idle parking of E-Rickshaws on the roads mentioned in the Schedule annexed to this notification.

By order and in the name of the
Lieutenant Governor of the
National Capital Territory of Delhi,

(Gyanesh Bharti)
Secretary-cum-Commissioner (Transport)

मुरादाबाद में ई-रिक्शा और ई-ऑटो का आतंक बढ़ा, डबल फाटक चौराहे पर चालक के पैर को कुचला, विरोध पर बदतमीजी

क्या दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली पुलिस दिल्ली में कर रही है ऐसे ही हालातों का इंतजार, बड़ा सवाल ?

परिवहन विशेष न्यूज। मुरादाबाद की सड़कों पर ई-रिक्शा और ई-ऑटो चालकों की मनमानी लगातार बढ़ती जा रही है। तेज रफ्तार, गलत दिशा में चलना, जहां-तहां रुकना और विरोध करने पर झगड़े पर उतर आना—यह रोजमर्रा की समस्या बन चुकी है। रविवार शाम डबल फाटक चौराहे पर एक ऐसा ही खतरनाक मामला सामने आया।

जाम के दौरान एक ई-ऑटो गलत दिशा से आया और एक वाहन चालक के पैर पर पहिया चढ़ा दिया। हादसे में चालक दर्द से चीख उठा, लेकिन आरोपी ई-ऑटो चालक ने माफी तो दूर, उल्टा उस पर अभद्रता शुरू कर दी।

जब पीड़ित ने विरोध किया और उसका वीडियो बनाना शुरू किया, तो ई-ऑटो चालक गालियां देते हुए फरार हो गया।

घटना के तुरंत बाद मौजूद ट्रैफिक कर्मी को इसकी शिकायत की गई, जिस पर ट्रैफिक पुलिसकर्मी आरोपी को पकड़ने के लिए उसकी दिशा में गया, लेकिन तब तक ऑटो चालक मौके से भाग चुका था।

स्थानीय लोगों ने कहा कि शहर में अनियंत्रित ई-रिक्शा और ई-ऑटो संचालन सड़क सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। उनसे प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग की है, ताकि ऐसे चालकों पर लगाम लगाई जा सके।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

पिंकी कुंडू, सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश, सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

अयोध्या में गिलहरी की मूर्ति ये दर्शाती है कि आपका छोटा सा योगदान भी याद किया जाता है ये प्रभु श्रीराम की मर्यादा

यह बात बिल्कुल सच है कि ईश्वर की कृपा उन पर भी होती है जो उनकी भक्ति करते हैं, और रामचरितमानस की गिलहरी की कथा इसी करुणा का प्रतीक है। यह दिखाता है कि ईश्वर किसी को भी भूलता नहीं है, और तुलसीदास की रामकथा ने ईश्वर के इस विशाल हृदय और सभी जीवों के प्रति प्रेम को उजागर किया है।

यह विश्वास कि ईश्वर हर किसी की याद रखता है, रामचरितमानस की घटनाओं से स्पष्ट होता है।

रामचरित मानस में गिलहरी के योगदान को याद किया गया है। गिलहरी ने सेतु निर्माण में अपनी भूमिका निभाई थी। यह घटना दर्शाती है कि ईश्वर छोटे से छोटे प्रयास को भी महत्व देता है।

ईश्वर का यह रूप करुणा का प्रतीक है, जहाँ वह देव, असुर और ऋषि जैसे बड़े प्राणियों के साथ-साथ एक छोटी गिलहरी को भी याद रखता है।

वोटर लिस्ट और SIR की महत्वपूर्ण जानकारी...

2003 की वोटर लिस्ट यहाँ से डाउनलोड करें

https://ceouttarpradesh.nic.in/rollpdf/rollpdf.aspx

अपना ज़िला और असेंबली चुनकर पोलिंग स्टेशन की लिस्ट डाउनलोड करें और अपना नाम चेक करें।

BLO और ERO की जानकारी यहाँ से देखें

https://electoralsearch.eci.gov.in/pollingstation

अपने EPIC नंबर (वोटर ID नंबर) से BLO और ERO का नाम और नंबर पता करें।

ऑनलाइन SIR फॉर्म भरें

https://voters.eci.gov.in/enumeration-form-new

पहले Sign-up, फिर Login करें
अपना प्रदेश चुनें
EPIC नंबर डालें
और फॉर्म भरें।

अगर BLO फॉर्म नहीं ले/दे रहा है या उसकी रिसीविंग नहीं दे रहा है, तो उसकी शिकायत इस ईमेल पर भेजें..

complaints@eci.gov.in

ध्यान देकर अपना नाम वोटर बनवाये

समाज सुधार के लिए एकजुट हों
नशे के खिलाफ आवाज उठाएं, समाज को सुधारें

क्या आपके आसपास नशे का अवैध कारोबार चल रहा है ?
क्या माता, बहन, बुज़ुर्ग माता के अधिकारों का हनन हो रहा है ?
क्या किसी का शोषण हो रहा है या दहेज के लिए परेशान किया जा रहा है ?
_हम आपके साथ हैं हमारे साथ संपर्क करें और अपने अधिकारों की रक्षा करें।
हमारे उद्देश्यः
- मानवाधिकारों की रक्षा और संरक्षण
- सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का समाधान
- शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का प्रावधान
- मानव तस्करी और बाल श्रम जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जागरूकता फैलाना
- महिलाओं और बच्चों के अधिकारों की रक्षा और सशक्तिकरण
- पर्यावरण संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
- आपदा प्रबंधन और राहत कार्यों में सहायता
हमारे साथ जुड़ने के लिए कोई धर्म, जाति, या समाज की बाध्यता नहीं है सभी धर्म और समाज के लोग हमारे साथ जुड़ सकते हैं और समाज सुधार के लिए काम कर सकते हैं।
कैसे संपर्क करें:
व्हाट्सएप्प करें: 9811731095
वीडियो, फोटो और सबूत भेजें और हमें समाज को सुधारने में मदद करें।
आपकी खबर की गोपनीयता रखी जाएगी आपकी पहचान गुप्त रखी जाएगी, आपकी खबर को पूरी तरह से गोपनीय रखा जाएगा।
आओ हम सब मिलकर समाज सुधार के लिए काम करें टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
एकता में शक्ति, सेवा में समर्पण
संपर्क करें: 9811731095 (व्हाट्सएप्प नंबर)
धन्यवाद
आशा है कि आप हमारे साथ जुड़ेंगे और समाज सुधार के लिए काम करेंगे।

आज का साइबर सुरक्षा विचार

अब साइबर फ्रॉड की शिकायत हर थाने में दर्ज की जा सकेगी। दिल्ली पुलिस ने सभी थानों में इंटीग्रेटेड हेल्प डेस्क स्थापित किए हैं। ये एक साइबर शील्ड की तरह काम करेंगे, जिससे साइबर अपराध पीड़ितों को बिना परेशानी शिकायत दर्ज करने की सुविधा मिलेगी।

1. इंटीग्रेटेड हेल्प डेस्क की स्थापना
दिल्ली पुलिस ने सभी थानों में इंटीग्रेटेड हेल्प डेस्क स्थापित किए हैं।
इनका उद्देश्य है कि साइबर अपराध पीड़ितों को एक ही स्थान पर सभी सेवाएँ उपलब्ध कराई जाएँ।
सेवाओं में शामिल हैं:
o शिकायत दर्ज कराना
o मार्गदर्शन प्राप्त करना
o केस की स्थिति जानना
o आवश्यक परामर्श और सहायता
१. नागरिकों के लिए लाभ
त्वरित सेवा: शिकायत दर्ज करने और उसका निस्तारण तेज़ी से होगा।
पारदर्शिता: नागरिक सीधे देख सकेंगे कि उनकी शिकायत कहाँ और किस स्तर पर दर्ज हुई है।
सुलभता: सब कुछ एक ही विंडो पर उपलब्ध होगा।

विश्वास निर्माण: नागरिकों का पुलिस पर भरोसा और बढ़ेगा क्योंकि प्रक्रिया सरल और स्पष्ट होगी।
3. अन्य सेवाओं का एकीकरण
हेल्प डेस्क को अन्य सरकारी सेवाओं से भी जोड़ा जा रहा है। विशेष रूप से डॉट की "संचार साथी" सेवा का उपयोग बढ़ाया जाएगा।
इससे मोबाइल नंबर, सिम कार्ड और संचार से जुड़े धोखाधड़ी मामलों में तुरंत सत्यापन और कार्रवाई संभव होगी।
4. साइबर शिकायत दर्ज करने की नई सुविधा
हेल्प डेस्क पर दर्ज की गई शिकायतें सीधे cyberpolice.nic.in पोर्टल पर दर्ज होंगी।
इससे डिजिटल ट्रेल तुरंत शुरू हो जाएगा और वित्तीय धोखाधड़ी के मामलों में:
o फ्रॉड के पैसे का तुरंत पता लगाया जा सकेगा।
o बैंक और वित्तीय संस्थानों को अलर्ट भेजकर रकम को होल्ड किया जा सकेगा।
यह व्यवस्था गेम चेंजर साबित होगी क्योंकि इससे धोखाधड़ी रोकने और पीड़ितों को राहत देने की क्षमता कई गुना बढ़ जाएगी।
5. समग्र प्रभाव
यह पहल दिल्ली पुलिस की डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और नागरिक-केंद्रित सेवा की दिशा में एक बड़ा कदम है।
इससे न केवल साइबर अपराध पीड़ितों को राहत मिलेगी, बल्कि अपराधियों के खिलाफ त्वरित और प्रभावी कार्रवाई भी संभव होगी।
नागरिकों को लगेगा कि पुलिस उनके साथ खड़ी है और उनकी शिकायतें अब तेज़, पारदर्शी और तकनीकी रूप से सक्षम प्रणाली में दर्ज हो रही हैं।
इंटीग्रेटेड हेल्प डेस्क साइबर अपराध पीड़ितों के लिए वन-स्टॉप समाधान है, जो शिकायत दर्ज करने से लेकर वित्तीय धोखाधड़ी रोकने तक हर स्तर पर मददगार साबित होगा।

सतर्क रहें। सशक्त बनें।
डिजिटल सतर्कता = राष्ट्रीय सुरक्षा

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

आयुर्वेद शास्त्र में एक से बढ कर एक गुणकारी योग मौजूद हैं जिनका आवश्यकता के अनुसार उचित ढंग से उययोग करके लाभ उठाया जा सकता है

पिंकी कुंडू
सदस्य बंगाली प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश
सदस्य उज्जवला योजना भाजपा दिल्ली प्रदेश

ऐसे ही उत्तम योगों में एक उत्तम योग है काया कल्प चूर्ण इस योग की गुणवत्ता और उपयोगिता का परिचय पढने पर आप जान जाएंगे कि अनेक व्याधियों को नष्ट करने के लिए अकेला ही काफी है काया कल्प का परिचय प्रस्तुत है। भाव प्रकाश निघण्टु में लिखा है - अश्वगन्धानिलश्लेषश्वित्र शोथक्षयापहा।।

बल्या रसायनी तित्का कषायोष्णातिशुक्रला।।

1. अश्वगन्धा,
2. नागौरी 250 ग्राम,
3. सफेद मूसली 500 ग्राम,
4. मजीठ, 50ग्राम
5. हरड, 50ग्राम
6. हल्दी, 50ग्राम
7. दारुहल्दी, 50ग्राम
8. मुलहठी, 50ग्राम
9. रास्ना, 50ग्राम
10. विदारीकन्द, 50ग्राम
11. अर्जुन की छाल, 50ग्राम
12. नागरमोथा निसोत 50ग्राम
13. अनन्तमूल सफेद, 40 ग्राम
14. अनन्त मूल काला, 40 ग्राम
15. सफेद चन्दन, 40 ग्राम
16. वच, 40 ग्राम
17. चीते की छाल, 40 ग्राम
18. स्वर्ण भस्म, 200 मिली ग्राम,
19. लोह भस्म, 6 ग्राम
20. जसद भस्म 6 ग्राम और
21. अभ्रक भस्म 6 ग्राम

इसका उपयोग करने की सरल सेवन विधि यह है कि इसे कूट पीस कर खूब महीन चूर्ण कर कपड छन करके शीशी में भर लें इस चूर्ण को सुबह खाली पेट और शाम को भोजन के दो घण्टे बाद मीश्री मिले हुए कुनकुने गर्म दूध के साथ आधा चम्मच (लगभग 3 ग्राम) मात्रा में लगातार 6 से 8 माह तक सेवन करना चाहिए।

लाभ-इस योग की यह विशेषता है कि इसमें कोई भी मादक द्रव्य,पारा या अदि नहीं है फिर भी यह अत्यन्त शुक्रल अर्थात शुक्र उत्पन्न करने वाली है यह स्तम्भनशक्ति बढाने वाला और शीघ्रपतन रोग नष्ट करने वाला अदभुत योग है यह बहुत पुष्टिकारक, बलवीर्यवर्धक, कामोत्तेजक तथा भारि यौनशक्ति बढाने वाला योग है।

वाजीकारक प्रभाव होता है इसके सेवन से वीर्य का पतलापन दूर होकर गाढापन आ जाता है जो विवाहित पुरुष यौनशक्ति की कमी तथा शीघ्रपतन के कारण दुःखी हों उन्हें इस योग का प्रयोग अवश्य करना चाहिए हानिकारक आहार-विहीर का त्याग और उचित आचरण का पालन करते हुए इस योग का प्रयोग करें और लाभ उठाएं।

ब्रोकली स्प्राउट्स और सल्फोराफेन

ब्रोकली स्प्राउट्स छोटे पौधे हैं जिनमें सल्फोराफेन 20–100 गुना अधिक पाया जाता है, बड़ी ब्रोकली की तुलना में सल्फोराफेन शरीर में एनआरएफ 2 नाम का सुरक्षा स्विच ऑन करता है, जो सैकड़ों सुरक्षा जीन सक्रिय कर देता है।

इस स्विच के सक्रिय होने पर शरीर:

1. कैंसर पैदा करने वाले टॉक्सिन्स को तेजी से बाहर निकालता है (डिटॉक्स).
2. डीएनए की मरम्मत करता है, जिससे कैंसर बनने की संभावना कम होती है।
3. सूजन (इंफ्लेमेशन) कम करता है, जो कैंसर की जड़ है।
4. असामान्य/कैंसर सेल्स को खुद खत्म होने के लिए मजबूर करता है (अपोप्टोसिस)।
1. रोज सिर्फ आधा कप ब्रोकली स्प्राउट्स काफी हैं।
2. इसे सलाद, सैंडविच, स्मूदी में आसानी से खाया जा सकता है और घर पर भी बहुत कम खर्च में 4–5 दिन में उगाया जा सकता है।
3. यह एक मजबूत, प्राकृतिक और बेहद किफ़ायती कैंसर-रक्षक भोजन है।

निचोड़: ब्रोकली स्प्राउट्स शरीर की अपनी कैंसर-रोधी शक्ति को सक्रिय करते हैं। रोज़ एक छोटी मुट्ठी, लंबे समय तक मजबूत सुरक्षा।

पनीर बनाम अंडे बनाम चिकन: प्रोटीन के सर्वोत्तम स्रोतों की तुलना। कौन सा भोजन शरीर में सबसे बेहतर अवशोषित होता है

सबसे कुशल प्रोटीन स्रोत का सारांश पनीर, अंडे और चिकन भारतीय आहार में प्रोटीन के सबसे आम स्रोतों में से हैं और इनमें से प्रत्येक का पोषण स्तर अलग-अलग होता है।

अंडे विटामिन और एंटीऑक्सीडेंट के साथ-साथ अत्यधिक जैव उपलब्ध प्रोटीन प्रदान करते हैं,

पनीर धीरे-धीरे पचने वाला प्रोटीन, कैल्शियम और स्वस्थ वसा प्रदान करता है, और

चिकन उच्च प्रोटीन प्रदान करता है, जिसमें कट के आधार पर कैलोरी का स्तर अलग-अलग होता है।

स्वास्थ्य, हार्मोन की कार्यप्रणाली और लंबे समय तक तृप्ति। जैसे-जैसे लोग अपने आहार के प्रति जागरूक हो रहे हैं—चाहे वज़न घटाने के लिए हो, मांसपेशियों को बढ़ाने के लिए हो या सामान्य स्वास्थ्य के लिए—प्रोटीन के सर्वोत्तम स्रोतों के बारे में सवाल आम होते जा रहे हैं। रोज़मर्रा के विकल्पों में, पनीर, अंडे और चिकन तीन ऐसे खाद्य पदार्थ हैं जिनकी तुलना सबसे ज़्यादा की जाती है। हर एक की अपनी पोषण संबंधी खूबियाँ होती हैं, लेकिन इनमें से कौन सा सबसे प्रभावी प्रोटीन अवशोषण प्रदान करता है? उपलब्ध शोध और पोषण संबंधी आँकड़ों के आधार पर यहाँ एक विस्तृत जानकारी दी गई है।

दैनिक आहार में प्रोटीन क्यों ज़रूरी है? प्रोटीन मांसपेशियों, त्वचा, बालों और कई एंजाइमों व हार्मोनों की संरचना बनाता है जो महत्वपूर्ण कार्यों को सक्षम बनाते हैं। प्रोटीन युक्त भोजन ऊर्जा बनाए रखने, चयापचय को बढ़ावा देने और लंबे समय तक भूख को नियंत्रित रखने में मदद करता है। चूँकि नाश्ता ही वह भोजन है जो दिन की शुरुआत तय करता है, इसलिए उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन स्रोत—जैसे अंडे, पनीर या चिकन—को शामिल करने से ऊर्जा का स्तर निरंतर बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

अंडे: उच्च गुणवत्ता वाला, अत्यधिक अवशोषित करने योग्य प्रोटीन अंडे सबसे अधिक पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थों में से हैं। लगभग 44 ग्राम वजन वाला एक उबला या उबला अंडा 5.5 ग्राम प्रोटीन के साथ-साथ विटामिन बी - 12 और डी, सेलेनियम, स्वस्थ वसा और ल्यूटिन व ज़ेक्सैंथिन जैसे एंटीऑक्सीडेंट प्रदान करता है। यह पोषक तत्व चयापचय, संज्ञानात्मक स्वास्थ्य और आँखों के कार्य में सहायक होते हैं।

अंडे के प्रोटीन के स्वास्थ्य कार्यों पर किए गए अध्ययन में पाया गया है कि अंडे के प्रोटीन का अमीनो एसिड स्कोर 100 है और इसका शुद्ध प्रोटीन उपयोग सबसे ज़्यादा है, यानी शरीर इसे कुशलता से अवशोषित और उपयोग करता है। शोधकर्ताओं ने बताया है कि अंडे की सफेदी में दूध के प्रोटीन के बराबर उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन होता है, जबकि अंडे की जर्दी में ज़रूरी अमीनो एसिड और एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। अध्ययन के अनुसार, अंडे का प्रोटीन मांसपेशियों की मज़बूती बढ़ाता है, आंतरिक वसा कम करने में मदद करता है और अनुशंसित मात्रा में सेवन करने पर सीरम कोलेस्ट्रॉल कम करने में भी मदद करता है।

पनीर: शाकाहारियों के लिए उपयुक्त धीमी गति से पचने वाला प्रोटीन स्रोत

चालीस ग्राम पनीर में लगभग 7.5 ग्राम प्रोटीन, कैल्शियम, फॉस्फोरस, फोलेट और स्वस्थ वसा होती है। इसे अक्सर निरंतर ऊर्जा के लिए अनुशंसित किया जाता है क्योंकि इसका धीमा पाचन लंबे समय तक तृप्ति प्रदान करता है। आयुर्वेद में पनीर को सात्विक भोजन भी माना जाता है—हल्का, पौष्टिक और मानसिक स्पष्टता के लिए सहायक।

पनीर - एक भारतीय सॉफ्ट चीज़ वैरिएंट नामक एक शोध समीक्षा में कहा गया है कि पनीर पोषक तत्वों से भरपूर होता है, जो लगभग 16-18% प्रोटीन और 22-25% वसा प्रदान करता है, जबकि इसमें स्वाभाविक रूप से लैक्टोज़ की मात्रा कम होती है। अध्ययन में इसके मज़बूत पोषण गुणों का श्रेय छे प्रोटीन को दिया गया है, जो उच्च जैविक मूल्य वाले आवश्यक अमीनो एसिड प्रदान करता है। शोधकर्ताओं के अनुसार, पनीर बच्चों, गर्भवती महिलाओं और वयस्कों के आहार में एक स्वास्थ्यवर्धक घटक हो सकता है, और मधुमेह या हृदय संबंधी बीमारियों से जूझ रहे लोगों के लिए भी उपयुक्त हो सकता है।

चिकन: प्रति सर्विंग सबसे ज़्यादा प्रोटीन देने वाला चिकन अपनी उच्च प्रोटीन सामग्री और बहुमुखी प्रतिभा के कारण व्यापक रूप से खाया जाता है। हेल्थलाइन के अनुसार, चिकन ब्रेस्ट में सबसे ज़्यादा प्रोटीन घनत्व होता है—प्रति 100 ग्राम 32 ग्राम प्रोटीन—जो इसे फ़िटनेस प्रेमियों के बीच लोकप्रिय बनाता है।

पका हुआ, तीनों खाद्य पदार्थों की तुलना करने पर:

1. अंडे बेहतर अमीनो एसिड संरचना और उच्च जैवउपलब्धता के कारण उच्चतम प्रोटीन गुणवत्ता प्रदान करते हैं।
2. चिकन ब्रेस्ट प्रति सर्विंग कम कैलोरी के साथ सबसे अधिक प्रोटीन प्रदान करता है।
3. पनीर धीमी गति से प्रोटीन, स्थिर ऊर्जा और अतिरिक्त कैल्शियम और वसा प्रदान करता है, लेकिन इसमें अधिक कैलोरी भी होती है।

मटन (या व्यापक रूप से लाल मांस) प्रोटीन का एक और महत्वपूर्ण स्रोत है, और पनीर, अंडे और चिकन से इसकी तुलना करने पर पूरी तस्वीर मिलती है

यहाँ बताया गया है कि मटन कैसा है, और यह आपके लिए ₹कुशल अवशोषण₹ या ₹सबसे कुशल प्रोटीन₹ के अर्थ के आधार पर एक अच्छा (या कम अच्छा) विकल्प हो सकता है।*

मटन की तुलना (पनीर, अंडे, चिकन से)

1. प्रोटीन सामग्री और गुणवत्ता मटन उच्च गुणवत्ता वाले संपूर्ण प्रोटीन का एक बहुत अच्छा स्रोत है - यह सभी आवश्यक अमीनो एसिड प्रदान करता है। पोषक तत्वों की तुलना के अनुसार, मटन में प्रति 100 ग्राम लगभग 33.4 ग्राम प्रोटीन होता है (फूडस्ट्रक्चर से प्राप्त कच्चा डेटा)।
1. चिकन की तुलना में मटन में आयरन और जिंक कुछ अधिक होता है।
2. अण्डों की तुलना में मटन में विटामिन बी12, आयरन, जिंक और कुछ अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व अधिक होते हैं।

आप कैलोरी के प्रति उतने संवेदनशील नहीं हैं और अधिक वसा का सेवन कर सकते हैं।

आप केवल ₹प्रति कैलोरी अधिकतम प्रोटीन ग्राम₹ पर ही ध्यान केंद्रित नहीं कर रहे हैं, बल्कि समग्र पोषण पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

चेतावनी / ध्यान देने योग्य बातें

1. कटौती मायने रखती है: दुबले कट (पैर, कमर) अधिक वसायुक्त कटों की तुलना में प्रति वसा अधिक प्रोटीन देंगे।
2. खाना पकाने की विधि: ग्रिलिंग / भूनने से वसायुक्त स्टू की तुलना में वसा की मात्रा में परिवर्तन हो सकता है।
3. स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ: लाल मांस के अत्यधिक सेवन को (कुछ अध्ययनों में) कुछ स्वास्थ्य जोखिमों से जोड़ा गया है। संतुलन ही सबसे ज़रूरी है।
4. लागत: क्षेत्र के आधार पर, मटन चिकन या पनीर से अधिक महंगा हो सकता है।

निष्कर्ष मटन बहुत अच्छा होता है, इसमें संपूर्ण प्रोटीन, सूक्ष्म पोषक तत्व प्रचुर मात्रा में होते हैं तथा यह शरीर के लिए बहुत उपयोगी होता है। लेकिन यदि आपका एकमात्र लक्ष्य न्यूनतम वसा के साथ अधिकतम अवशोषित प्रोटीन प्राप्त करना है, तो अंडे या चिकन (विशेष रूप से कम वसा वाला) अभी भी अधिक 'कुशल' हो सकते हैं।

यदि आपका लक्ष्य पोषक तत्वों से भरपूर होना है, तो मटन एक मजबूत दावेदार है।

तिल का तेल ... पृथ्वी का अमृत

यदि इस पृथ्वी पर उपलब्ध सर्वोत्तम खाद्य पदार्थों की बात की जाए तो तिल के तेल का नाम अवश्य आएगा और यही सर्वोत्तम पदार्थ बाजार में उपलब्ध नहीं है और ना ही आने वाली पीढ़ियों को इसके गुण पता हैं, क्योंकि नई पीढ़ी तो टी वी के इश्तिहार देख कर ही सारा सामान ख़रीदती है।

तिल के तेल का प्रचार कंपनियाँ इसलिए नहीं करती क्योंकि इसके गुण जान लेने के बाद आप उन द्वारा बेचा जाने वाला तरल चिकना पदार्थ जिसे वह तेल कहते हैं लेना बंद कर देंगे.

तिल के तेल में इतनी ताकत होती है कि यह पत्थर को भी चीर देता है. प्रयोग करके देखें। आप पर्वत का पत्थर लिजिए और उसमे कटोरी के जैसा खडडा बना लिजिए, उसमे पानी, दुध, धी या तेजाब संसार में कोई सा भी कैमिकल, ऐसिड डाल दीजिए, पत्थर वैसा का वैसा ही रहेगा, कही नहीं जायेगा लेकिन अगर आप ने उस कटोरी नुमा पत्थर / खड्डे में तिल का तेल भर कर 2 दिन बाद देखेंगे तो तिल का तेल... पत्थर के अन्दर भी प्रवेश करके, पत्थर के नीचे नजर आएगा. यह होती है तिल के तेल की ताकत, इस तेल की मालिश करने से हड्डियों को मजबूती मिलती है.

तिल के तेल के अन्दर फास्फोरस होता है जो हड्डियों की मजबूती को अहम भूमिका अदा करता है और तिल का तेल ऐसी वस्तु है जो अगर कोई भी भारतीय चाहे तो थोड़ी सी मेहनत के बाद आसानी से प्राप्त कर सकता है उसे किसी भी कंपनी का तेल खरीदने की आवश्यकता ही नही होगी.

तिल खरीद लीजिए और किसी भी तेल निकालने वाले से उनका तेल निकलवा लीजिए. लेकिन सावधान तिल का तेल सिर्फ कच्ची घाणी ही प्रयोग करना चाहिए.

तैल शब्द की व्युत्पत्ति तिल शब्द से ही हुई है। जो तिल से निकलता वह है तैल। अर्थात तेल का असली अर्थ ही है ₹तिल का तेल₹.

तिल के तेल का सबसे बड़ा गुण यह है की यह शरीर के लिए आयुषधि का काम करता है.. चाहे

1. आपको कोई भी रोग हो यह उससे लड़ने की क्षमता शरीर में विकसित करना आरंभ कर देता है. यह गुण इस पृथ्वी के अन्य किसी खाद्य पदार्थ में नहीं पाया जाता.
2. सौ ग्राम तिल में 1000 मिलीग्राम कैल्शियम प्राप्त होता हैं। बादाम की अपेक्षा तिल में छः गुना से भी अधिक कैल्शियम है।
3. काले और लाल तिल में लौह तत्वों की भरपूर मात्रा होती है जो रक्तअल्पता के इलाज़ में कारगर साबित होती है।
4. तिल में उपस्थित लेसिथिन नामक रसायन कोलेस्ट्रोल के बहाव को रक्त नलिकाओं में बनाए रखने में मददगार होता है।
5. तिल के तेल में प्राकृतिक रूप में उपस्थित सिस्मोल एक ऐसा एंटी-ऑक्सीडेंट है जो इसे ऊँचे तापमान पर भी बहुत जल्दी खराब नहीं होने देता। आयुर्वेद चरक संहित में इसे पकाने के लिए सबसे अच्छा तेल माना गया है।
6. तिल में विटामिन सी छोड़कर वे सभी आवश्यक पौष्टिक पदार्थ होते हैं जो अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक होते हैं।
7. तिल विटामिन बी और आवश्यक फैटी एसिड्स से भरपूर है।
8. इसमें मीथोनाइन और ट्रायप्टोफन नामक दो बहुत महत्त्वपूर्ण एमिनो एसिड्स होते हैं जो चना, मूँगफली, राजमा, चौला और सोयाबीन जैसे अधिकांश शाकाहारी खाद्य पदार्थों में नहीं होते।
9. ट्रायोप्टोफन को शांति प्रदान करने वाला तत्व भी कहा जाता है जो गहरी नींद लाने में सक्षम है। यही त्वचा और बालों को भी स्वस्थ रखता है। मीथोनाइन लीवर को दुरुस्त रखता है और कॉलेस्ट्रोल को भी नियंत्रित रखता है।
10. तिल बीज स्वास्थ्यवर्द्धक वसा का बड़ा स्त्रोत है जो चयापचय को बढ़ाता है।
11. यह कब्ज भी नहीं होने देता।
12. तिलबीजों में उपस्थित पौष्टिक तत्व, जैसे-कैल्शियम और आयरन त्वचा को कांतिमय बनाए रखते हैं।
13. तिल में न्यूनतम सैचुरेटेड फैट होते हैं इसलिए इससे बने खाद्य पदार्थ उच्च रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकता है सीधा अर्थ यह है की यदि आप नियमित रूप से स्वयं द्वारा निकलवाए हुए शुद्ध तिल के तेल का सेवन करते हैं तो आप के बीमार होने की संभावना ही ना के बराबर रह जाएगी.

जब शरीर बीमार ही नही होगा तो उपचार की

भी आवश्यकता नही होगी. यही तो आयुर्वेद है.

आयुर्वेद का मूल सीधांत यही है की उचित आहार विहार से ही शरीर को स्वस्थ रखिए ताकि शरीर को औषधि की आवश्यकता ही ना पड़े.

एक बात का ध्यान अवश्य रखिएगा की बाजार में कुछ लोग तिल के तेल के नाम पर अन्य कोई तेल बेच रहे हैं जिसकी पहचान करना मुश्किल होगा. ऐसे में अपने सामने निकाले हुए तेल का ही भरोसा करें. यह काम थोड़ा सा मुश्किल ज़रूर है किंतु पहली बार की मेहनत के प्रयास स्वरूप यह शुद्ध तेल आपकी पहुँच में हो जाएगा. जब चाहें जाएँ और तेल निकलवा कर ले आएँ।

तिल में मोनो-सैचुरेटेड फैटी एसिड (mono-unsaturated fatty acid) होता है जो शरीर से बैड कोलेस्ट्रोल को कम करके गुड कोलेस्ट्रोल यानि एच.डी.एल. (HDL) को बढ़ाने में मदद करता है।

यह हृदय रोग, दिल का दौरा और धमनीकलाकाठिन्य (atherosclerosis) के संभावना को कम करता है।

कैंसर से सुरक्षा प्रदान करता है-

तिल में सेसमीन (sesamin) नाम का एन्टीऑक्सिडेंट (antioxidant) होता है जो कैंसर के कोशिकाओं को बढ़ने से रोकने के साथ-साथ है और उसके जीवित रहने वाले रसायन के उत्पादन को भी रोकने में मदद करता है।

यह फेफड़ों का कैंसर, पेट के कैंसर, ल्यूकेमिया, प्रोस्टेट कैंसर, स्तन कैंसर और अग्नाशय के कैंसर के प्रभाव को कम करने में बहुत मदद करता है।

तनाव को कम करता है-

इसमें नियासिन (niacin) नाम का विटामिन होता है जो तनाव और अवसाद को कम करने में मदद करता है।

हृदय के मांसपेशियों को स्वस्थ रखने में मदद करता है-

तिल में ज़रूरी मिनरल जैसे कैल्सियम, आयरन, मैग्नेशियम, जिन्क और सेलेनियम होता है जो हृदय के मांसपेशियों को सुचारू रूप से काम करने में मदद करता है और हृदय को नियमित अंतराल में धड़कने में मदद करता है।

शिशु के हड्डियों को मजबूती प्रदान करता है- तिल में डायटरी प्रोटीन और एमिनो एसिड होता है जो बच्चों के हड्डियों के विकसित होने में और मजबूती प्रदान करने में मदद करता है। उदाहरण स्वरूप 100 ग्राम तिल में लगभग 18 ग्राम प्रोटीन होता है, जो बच्चों के विकास के लिए बहुत ज़रूरी होता है।

गर्भवती महिला और भ्रूण (foetus) को स्वस्थ रखने में मदद करता है- तिल में फोलिक एसिड होता है जो गर्भवती महिला और भ्रूण के विकास और स्वस्थ रखने में मदद करता है।

शिशुओं के लिए तेल मालिश के रूप में काम करता है- अध्ययन के अनुसार तिल के तेल से शिशुओं को मालिश करने पर उनकी मांसपेशियाँ सख्त होती है साथ ही उनका अच्छा विकास होता है।

आयुर्वेद के अनुसार इस तेल से मालिश करने पर शिशु आराम से सोते हैं।

अस्थि-सुषिरता (osteoporosis) से लड़ने में मदद करता है-

तिल में जिन्क और कैल्सियम होता है जो अस्थि-सुषिरता से संभावना को कम करने में मदद करता है।

मधुमेह के दवाईयों को प्रभावकारी बनाता है- डिपार्टमेंट ऑफ बायोथेक्सनॉलॉजी विनायक मिशन यूनवर्सिटी, तमिलनाडु (Department of Biothechnology at the Vinayaka Missions University, Tamil Nadu) के अध्ययन के अनुसार यह उच्च रक्तचाप को कम करने के साथ-साथ इसका एन्टी ग्लिसेमिक प्रभाव रक्त में ग्लूकोज़ के स्तर को 36% कम करने में मदद करता है जब यह मधुमेह विरोधी दवा ग्लिबेक्लेमाइड (glibenclamide) से मिलकर काम करता है। इसलिए टाइप-2 मधुमेह (type 2 diabetic) रोगी के लिए यह मददगार साबित होता है।

दूध के तुलना में तिल में तीन गुना कैल्शियम रहता है। इसमें कैल्शियम, विटामिन बी और ई, आयरन और जिंक, प्रोटीन की भरपूर मात्रा रहती है और कोलेस्टरोल बिल्कुल नहीं रहता है।

तिल का तेल ऐसा तेल है, जो सालों तक खराब नहीं होता है, यहाँ तक कि गर्मी के दिनों में भी वैसा की वैसा ही रहता है.

तिल का तेल कोई साधारण तेल नहीं है। इसकी मालिश से शरीर काफी आराम मिलता है। यहां तक कि लकवा जैसे रोगों तक को ठीक करने की क्षमता रखता है।

इससे अगर महिलाएं अपने स्तन के नीचे से ऊपर की ओर मालिश करें, तो स्तन पुष्ट होते हैं। सर्दी के मौसम में इस तेल से शरीर की मालिश करें, तो ठंड का एहसास नहीं होता।

इससे चेहरे की मालिश भी कर सकते हैं। चेहरे की सुंदरता एवं कोमलता बनाये रखेगा। यह सूखी त्वचा के लिए उपयोगी है।

तिल का तेल-

1. तिल विटामिन ए व ई से भरपूर होता है। इस कारण इसका तेल भी इतना ही महत्व रखता है। इसे हल्का गरम कर त्वचा पर मालिश करने से निखार आता है। अगर बालों में लगाते हैं, तो बालों में निखार आता है, लंबे होते हैं।
2. जोड़ों का दर्द हो, तो तिल के तेल में थोड़ी सी सोंठ पावडर, एक चुटकी हींग पावडर डाल कर गर्म कर मालिश करें। तिल का तेल खाने में भी उतना ही पौष्टिक है विशेषकर पुरुषों के लिए।इससे मर्दानगी की ताकत मिलती है!
3. हमारे धर्म में भी तिल के बिना कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है, जन्म, मरण, परण, यज्ञ, जप, तप, पित्र, पूजन आदि में तिल और तिल का तेल के बिना संभव नहीं है अतः इस पृथ्वी के अमृत को अपनावे और जीवन निरोग बनावे।

घर में आसानी से इलायची का पौधा कैसे उगाया जा सकता है

अगर इलायची का पौधा घर पर ही लगा होगा तो आपको बाजार से महंगी इलायची खरीदने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी जिससे इलायची खरीदने के पैसे भी बच जाएंगे। इसके पौधे को उगाने में ज्यादा कुछ मेहनत की जरूरत नहीं पड़ती है तो चलिए जानते है इलायची का पौधा घर में कैसे उगाते है।

घर में उगाएं इलायची का पौधा

घर में इलायची का पौधा उगाना बहुत आसान है बस आपको करना ये है की एक छोटा गमला या कंटेनर लेना है उसमे बगीचे की मिट्टी और गोबर की खाद मिलाकर भर देना है। उसके बाद 4 से 5 इलायची लेनी है और उसमे से बीज निकाल कर छिलका अलग कर देना है फिर एक कप में पानी भर के बीजों को पानी में डालकर 7 से 8 घंटे के लिए भिगोकर रख देना है फिर इलायची छानकर पानी को अलग कर लेना है और जो गमला तैयार किया था उस गमले की मिट्टी में इलायची के दानों को हल्का-हल्का दबा देना है और उपर से सुखी भुरभुरी मिट्टी को डालकर पानी की सिंचाई कर देना है। 2 हफ्ते बाद बीजों में से पौधा निकल आएगा और 2 महीने में इलायची का पौधा अच्छा तैयार हो जाएगा।

इलायची के पौधे में डालें ऑर्गेनिक खाद

अगर इलायची के पौधे में जल्दी ग्रोथ चाहिए तो ये ऑर्गेनिक खाद आपके इलायची के पौधे के लिए से बहुत ज्यादा उपयुक्त है। इसे आप घर में आसानी से तैयार कर सकते है। इसको बनाने के लिए सब्जियों के छिलके और पके हुए केले के छिलके की जरूरत पड़ेगी। इन छिलकों को पानी में 8 से 10 घंटे के लिए भिगोकर रख देना है फिर इसका उपयोग इलायची के पौधे में कर सकते है जिससे पौधे की ग्रोथ जल्दी होगी क्योकि सब्जियों और केले के छिलकों में कई पोषक तत्वों के गुण होते है जो पौधे के लिए बहुत उपयोगी साबित होते है।

संस्कारशाला : श्री हनुमान चालीसा के नियमित जप से जीवन की अनमोल सीख

डॉ. अंकुर शरण

प्रिय पाठकों,

संस्कारशाला के इस विशेष अध्याय में आज मैं आपसे वह व्यक्तिगत अनुभव साझा कर रहा हूँ, जो मेरे जीवन में ऊर्जा, शांत चेतना और अद्भुत स्थिरता का स्रोत है—प्रतिदिन श्री हनुमान चालीसा का जप।

मेरे इष्ट देव श्री हनुमान जी हैं, और प्रातः एवं सायं—बिना किसी अंतराल के—मैं चालीसा का जप करता हूँ। यह केवल पूजा नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है, एक अनुशासन है, जो भीतर की शक्ति को जगाता है।

आज मैं आपके साथ उन 5 श्रेष्ठ जीवन-सीखों को साझा कर रहा हूँ, जो श्री हनुमान चालीसा हमें सहज और गहन रूप से सिखाती है—

1. विनम्रता और सेवा भावना – "दीनबंधु दुखहारी"

हनुमान जी की सबसे बड़ी पहचान सेवा है।

चालीसा हमें सिखाती है कि सच्चा बल विनम्रता में है।

किसी भी भूमिका में हों—परिवार, समाज या कार्यक्षेत्र—जब हम सेवा भाव से कार्य करते हैं, तब जीवन स्वतः ही सरल हो जाता है।

2. निर्भयता और आत्मविश्वास – "भूत पिशाच निकट नहिं आवै"

चालीसा बताती है कि भय केवल मन का भ्रम है।

हनुमान जी के नाम का स्मरण ही आत्मविश्वास की लौ प्रज्वलित करता है।

यह हमें सिखाता है कि चुनौतियों से भागना नहीं, साहस के साथ उनका सामना करना ही धर्म है।

3. बुद्धि, विवेक और स्थिर विचार – "बुद्धिहीन तनु जानिकै"

यह पंक्ति हर दिन स्मरण कराती है कि बुद्धि का दान सबसे श्रेष्ठ है।

चालीसा हमें संकल्प की शक्ति देती है, निर्णय लेने की क्षमता बढ़ाती है और मन को स्थिर रखती है।

4. अनुशासन और निरंतरता – "राम दूत अतुलित बलधामा"

हनुमान जी का सम्पूर्ण जीवन अनुशासन का प्रतीक है।

चालीसा का नियमित जप हमें दिनचर्या में संतुलन और निरंतरता सिखाता है—

कुछ भी असंभव नहीं जब हम लगातार प्रयास करते हैं।

5. समर्पण और भक्ति – "राम रसायन तुम्हरे पासा"

समर्पण का अर्थ कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मा का विश्वास है।

हनुमान जी का राम-कार्य के प्रति समर्पण हमें सिखाता है कि जीवन में लक्ष्य वही सफल होता है, जिसमें हृदय का भाव जुड़ा हो।

इन पाँच सीखों ने मेरे जीवन को दिशा दी है, और मैं चाहता हूँ कि ये हर पाठक के जीवन को भी प्रकाशमान करें। श्री हनुमान चालीसा केवल स्तुति नहीं—जीवन प्रबंधन का चमत्कारी सूत्र है।

आइए, हम सब संस्कारशाला के माध्यम से जीवन में यह संकल्प लें—

नियमित जप, शुद्ध आचरण और दृढ़ विश्वास।

श्री हनुमान जी की कृपा सदा हम सभी पर बनी रहे।

सादर,
डॉ. अंकुर शरण
संस्कारशाला – जीवन मूल्यों की सीख का एक विनम्र प्रयास

पर्यावरण पाठशाला : वेदों से सीख — प्रकृति की रक्षा ही जीवन की रक्षा है

- डॉ. अंकुर शरण

वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि प्रकृति के संरक्षण और संतुलन का गहन ज्ञान प्रदान करने वाले जीवन-सूत्र हैं। हजारों वर्ष पहले हमारे ऋषियों ने पर्यावरण को जीवन का आधार माना और मानव को उसके साथ सह-अस्तित्व का संदेश दिया। ऋग्वेद में पृथ्वी को माता और आकाश को पिता कहा गया है, जिसका तात्पर्य है कि प्रकृति का सम्मान और उसका संरक्षण हमारा प्रथम कर्तव्य है। वेदों में वर्णित पंचमहाभूत—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश—न केवल ब्रह्मांड की संरचना का आधार हैं, बल्कि जीवन के नैतिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शक भी हैं। पृथ्वी धैर्य सिखाती है, जल पवित्रता, अग्नि ऊर्जा, वायु जीवन-संचार और आकाश उदारता का भाव जगाता है।

आज जब प्रदूषण, जल संकट, कचरा फैलाव, वृक्षों की कटाई और प्लास्टिक प्रदूषण जैसे संकट हमारे सामने हैं, तब वेदों की पर्यावरणीय शिक्षाएँ पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठती हैं। वेद हमें बताते हैं कि प्रकृति का धर्म संरक्षण और संतुलन है, और जब हम इस धर्म से विचलित होते हैं, तब उसका प्रभाव सीधे हमारे ही जीवन पर पड़ता है। आधुनिक जीवन में वेदों का संदेश यही है कि हम संसाधनों का जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करें, पेड़ों को बचाएँ, जल का सम्मान करें, पशु-पक्षियों और पर्यावरण के सभी घटकों के साथ संवेदनशीलता से व्यवहार करें। वेदों का सार एक वाक्य में समाया है—प्रकृति की रक्षा ही जीवन की रक्षा है। पार्यावरण पाठशाला आप सभी से अपील करती है कि वेदों की इन अमूल्य शिक्षाओं को अपने व्यवहार, जीवनशैली और सोच में शामिल करें। प्रकृति हमारा बोझ नहीं, बल्कि हमारा ऋण है—और इसे चुकाना हम सबका कर्तव्य भी।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के दिल्ली जोन का मासिक संगठित योग कार्यक्रम हुआ सम्पन्न

नवदीप सिंह

पश्चीम्र विहार नई दिल्ली सेवाकेंद्र के द्वारा डिस्ट्रिकट पार्क फुटबाल ग्रांड मे दनांक 23 नवंबर 2025 को आयोजित किया गया था।। ₹सफलता स्वरुप₹ थीम के अंतर्गत शक्तिशाली योग के कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ।

मंच पर सुंदर कमल पुष्पों पर विराजित ब्रह्मकुमारी बहनों ने अपने तपस्वी स्वरुप के द्वारा पूरी सभा में योग तपस्या के प्रकंपन फैला दिऐ। मंच की शोभा दिल्ली ओ.आर.सी की डायरेक्टर आशा दीदी ,दिल्ली हरी नगर सब जोन की प्रभारी शुक्ला दीदी और दिल्ली डेरावल नगर की प्रभारी चक्रधारी दीदी के शिक्षाप्रद आशिर्वचनो से कई गुणा बढ़ गई।

दिल्ली जोन की सभी सीनियर टीचर बहने इस कार्यक्रम में उपस्थित थी। सभी बहनों का स्वागत पुष्प गुच्छ, तिलक और प्लांट देकर किया गया।

इस कार्यक्रम के आयोजन में पश्चिम विहार के एम. एल. ए श्री करनैल सिंह जी ने भी अपना महत्वपूर्ण सहयोग दिया और उन्होंने आध्यात्मिकता के प्रति अपने विचार पेश किया और विशेषता उन्होंने आज के अनिश्चित परिस्थितियों में सभी इस और पॉलीटिशियंस को भी इस राजयोग विद्या से लाभान्वित करने के लिए ब्राह्माकुमारीज संस्थान को अनुरोध किया।

आशा दीदी जी चक्रधारी दीदी जी और शुक्ला दीदी जी ने उनको संस्था के द्वारा और सौगात टोली भेट की। इस योग कार्यक्रम मे दिल्ली NCR के लगभग 3000 भाई बहन बडे उमंग उत्साह से शिमिल हुऐ।

पश्चिम विहार सेवा केंद्र की रीना बहन ने अपने मधुर गीत से सभी में योग का बल भर दिया।

पश्चिम विहार सेवा केंद्र के वरिष्ठ भरता रमेश भाई जी और और पश्चिम विहार सेवा केंद्र की इंचार्ज सुषमा दीदी जी ने बहुत ही नम्रता से सभी का स्वागत और धन्यवाद किया।ब्रह्माकुमारी सरिता दीदी जी ने स्टेज का बहुत ही सुचारू रूप से संचालन किया।

इस कार्यक्रम की विशेषता यह रही की प्रातः काल पार्क में आने वाले जो भी भाई-बहन थे उन्होंने भी ईश्वरीय संदेश को सुना और योग का अनुभव किया।

सर्वे के सहयोग से यह कार्यक्रम बहुत ही सफलता पूर्वक ढंग से संपन्न हुआ।

पुल प्रहलादपुर और तुगलकाबाद गाँव में पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी के नेतृत्व में निकाला गया यूनिटी मार्च...

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर तुगलकाबाद विधानसभा क्षेत्र में यूनिटी मार्च पदयात्रा का आयोजन पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी द्वारा किया गया। इस पदयात्रा का उद्देश्य एकता और अखंडता के संदेश को जन-जन तक ले जाना था। यह पदयात्रा पुल प्रहलादपुर में निकाली गई जिसके बाद तुगलकाबाद वार्ड में गली न0-4 छुरिया मोहल्ला (बंगाली कॉलोनी) तुगलकाबाद से शुरू हुई और नौघरा मोहल्ला गाँव तुगलकाबाद में समाप्त हुई। सैंकड़ों की संख्या में क्षेत्र के लोग इस पत्रयात्रा में शामिल हुए और यात्रा मार्ग पर जगह-जगह गाँव के लोगों ने पूर्ण उत्साह व जोश के साथ यात्रा में शामिल लोगों का स्वागत किया। पूर्व सांसद रमेंश बिधूड़ी ने अपने सम्बोधन में कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल ने देश को एकता के सूत्र में पिरोकर उसकी नींव मजबूत की थी। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश सरदार पटेल के आदर्शों पर चल रहा है। देश आत्मनिर्भर एवं विकसित भारत के लक्ष्य की ओर तेज गति से अग्रसर है, यही एक भारत श्रेष्ठ भारत का मन्त्र है। भारत विश्व मंच पर एक सशक्त राष्ट्र के रूप में खड़ा है, जिसका श्रेय लौह पुरुष सरदार पटेल को जाता है। उनकी दूरदर्शिता और दृढ़ नेतृत्व ने सैकड़ों रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर भारतीय गणराज्य की मजबूत नींव रखी। जिसमें हमारी युवा शक्ति सबसे बड़ा आधार बनकर उभर रही है। मैं सभी युवाओं से आग्रह करता हूँ कि सरदार पटेल जी के जीवन, संघर्ष और विचारधारा को गहराई से समझें तथा उनकी प्रेरणा को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

छोटे कदम, बड़ा बदलाव: मांसाहार छोड़ने का प्रभाव [धरती के लिए, जीवन के लिए: मांसाहार निषेध दिवस]

[धरती के लिए, जीवन के लिए : मांसाहार निषेध दिवस]
[मांसाहार रहित जीवन : स्वास्थ्य, न्याय और नैतिकता का प्रतीक]

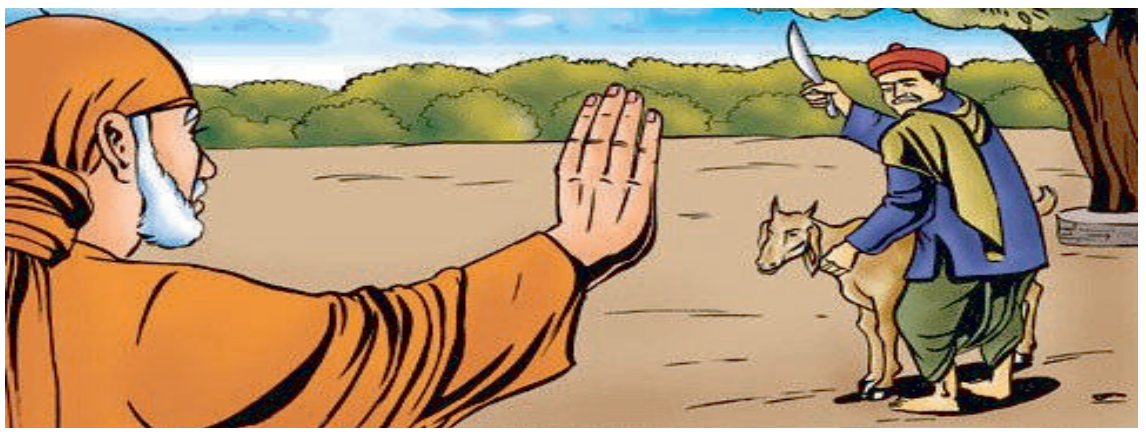

हर वर्ष, जब विश्व मांसाहार निषेध दिवस की ओर कदम बढ़ते हैं, यह केवल एक दिन नहीं, बल्कि मानवता की संवेदना, प्रकृति की संतुलन-शक्ति और सभी प्राणियों के सहअस्तित्व की जीवंत चेतना का प्रतीक बन जाता है। यह हमें यह स्मरण कराता है कि हमारी दुनिया केवल मनुष्यों की नहीं, बल्कि हर जीवित प्राणी की साझा धरोहर है। मांसाहार न केवल निर्दोष प्राणियों के जीवन के लिए एक घातक खतरा है, बल्कि यह हमारे स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता और नैतिक जिम्मेदारियों पर भी गहन असर डालता है। यह दिवस हमें अपने आहार और जीवनशैली पर गंभीर प्रश्न उठाने, सोचने और संवेदनशील बदलाव लाने का अवसर प्रदान करता है। जब हम मांसाहार के पर्दे के पीछे छिपे दर्द, हिंसा और प्रकृति पर पड़े संकट को समझते हैं, तब यह केवल व्यक्तिगत चुनाव नहीं रह जाता, बल्कि यह सामाजिक और वैश्विक चेतना का शक्तिशाली संदेश बन जाता है।

पशु जीवन की पीड़ा को अनदेखा करना आज की मानवता की सबसे बड़ी विडंबनाओं में से एक बन चुका है। खेती-बाड़ी, मांस उत्पादन और बाज़ार तक पहुँचने की प्रक्रिया में हजारों निर्दोष जीव अनैसर्गिक और जकड़े हुए हालात में जीवन यापन करने को मजबूर होते हैं, जहां उन्हें असहनीय दर्द, मानसिक आतंक और शारीरिक दबाव सहना पड़ता है। उनके जीवन का मूल्य केवल उत्पादक इकाई के रूप में आँका जाता है। क्या हम सच में ऐसे जीवन के समर्थन में अपनी नैतिकता को रख सकते हैं? यह सवाल हर संवेदनशील हृदय को झकझोर देता है। मांसाहार निषेध दिवस हमें यह स्पष्ट करता है कि प्रत्येक प्राणी मशीन नहीं है; प्रत्येक के भीतर प्रेम, पीड़ा और स्वतंत्रता का अधिकार समाया है। हमारे हाथों की छोटी-छोटी हरकतें उनके जीवन की दिशा और गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करती हैं।

स्वास्थ्य की दृष्टि से देखें तो मांसाहार सिर्फ पशुओं के लिए ही खतरा नहीं, बल्कि हमारे अपने शरीर और जीवन के लिए भी घातक है। वैज्ञानिक अनुसंधान बार-बार यह प्रमाणित कर रहे हैं कि अत्यधिक मांसाहार हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, मोटापा, और विभिन्न प्रकार के कैंसर के जोखिम को बढ़ाता है। इसमें मौजूद विषाक्त पदार्थ, हार्मोन और संक्रमण फैलाने वाले जीवाणु सीधे हमारे स्वास्थ्य पर आघात करते हैं। इसलिए यह दिवस केवल पशु हितैषी चेतना का प्रतीक नहीं है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य, दीर्घायु और जीवन की गुणवत्ता के प्रति हमारी जिम्मेदारी का सशक्त संदेश भी है। जब हम मांसाहार को त्यागने या सीमित करने का निर्णय लेते हैं, हम केवल अपने आहार को बदलते नहीं, बल्कि अपनी सोच, दृष्टिकोण और जीवनशैली को भी नया आकार देते हैं।

पर्यावरणीय दृष्टि से मांसाहार का असर और भी विनाशकारी है। पशुपालन से जुड़ी प्रत्येक गतिविधि—चाहे वह भोजन उत्पादन हो या चारे की खेती—कार्बन उत्सर्जन, जल संकट और भूमि के अपव्यय में योगदान करती है। मांसाहार केवल उपभोग की आदत नहीं, बल्कि पृथ्वी की संसाधनों की अविवेकपूर्ण खपत का प्रतीक बन जाता है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और जैव विविधता का नुकसान—इन सभी संकटों में मांसाहार की भूमिका अनदेखी नहीं की जा सकती। विश्व मांसाहार निषेध दिवस हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हमारी छोटी-छोटी आदतें कैसे वैश्विक स्तर पर बड़े और सकारात्मक बदलाव की चिंगारी बन सकती हैं।

इस दिवस की सबसे बड़ी सीख है—सहानुभूति और संवेदनशीलता की ताकत। जब हम मांसाहार का त्याग या सीमित करने का साहस दिखाते हैं, हम केवल निर्दोष प्राणियों के जीवन की रक्षा नहीं करते, बल्कि मानवता की अपनी दृष्टि और नैतिक आधार को भी पुनर्परिभाषित करते हैं। यह निर्णय हमारे भीतर छिपी करुणा, परोपकार और नैतिक चेतना को जगाता है, और हमें याद दिलाता है कि हर जीवन, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, समान रूप से मूल्यवान है। प्रत्येक शाकाहारी भोजन, प्रत्येक मांस छोड़ने का कदम, समाज में एक अनजाने बदलाव की लहर पैदा करता है, जो दूसरों के विचारों, आदतों और विकल्पों को भी प्रभावित करता है। यह केवल व्यक्तिगत परिवर्तन नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक क्रांति की पहली झलक हो सकती है।

विश्व मांसाहार निषेध दिवस यह भी संदेश देता है कि बदलाव कठिन हो सकता है, लेकिन असंभव नहीं। हमारे चारों ओर विकल्प मौजूद हैं—फल, सब्जियां, दालें, अनाज और पौष्टिक शाकाहारी भोजन। ये विकल्प न केवल हमारे स्वास्थ्य को सशक्त बनाते हैं, बल्कि पृथ्वी के सीमित संसाधनों की रक्षा भी करते हैं। छोटे-छोटे कदम, जैसे धीरे-धीरे मांसाहार छोड़ना या सप्ताह में एक दिन मांस रहित रखना, समाज में बड़े संदेश के रूप में गूंजते हैं। यह आंदोलन सिर्फ पशुओं के लिए नहीं, बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों, पर्यावरण और स्वयं हमारे भविष्य के लिए भी है।

यह दिवस हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि मानवता की असली शक्ति तकनीकी या आर्थिक सामर्थ्य में नहीं, बल्कि हमारी संवेदनशीलता, करुणा और विवेक में निहित है। हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वह केवल हमारे उपभोग के लिए नहीं, बल्कि सभी प्राणियों का साझा जीवनस्थल है। मांसाहार छोड़ना या कम करना केवल आहार का विकल्प नहीं, बल्कि यह एक चेतना का प्रतीक है—जीववैज्ञानिक, नैतिक और सामाजिक रूप से। यह दिन हमें याद दिलाता है कि प्रत्येक जीवन अनमोल है, और हमारी हर छोटी-छोटी क्रिया इस अनमोलता का सम्मान कर सकती है।

विश्व मांसाहार निषेध दिवस केवल विरोध या आलोचना का दिन नहीं है, बल्कि यह आशा, संवेदनशीलता और जागरूकता का एक उत्सव है। यह हमें हमारे चुनावों की शक्ति और उनके दूरगामी प्रभावों का एहसास कराता है, और प्रेरित करता है कि हम अपने जीवन में करुणा, विवेक और नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दें। जब हम अपनी खाने की आदतों में बदलाव करते हैं, तो हम केवल अपने लिए नहीं, बल्कि पूरे ग्रह, उसके जीव-जंतु और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जिम्मेदार और स्थायी संदेश छोड़ते हैं। यही दिवस हमें यह याद दिलाता है कि असली बदलाव की जड़ हमेशा हमारे अपने छोटे-छोटे निर्णयों में छिपी होती है, और वही छोटे कदम दुनिया में बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

मदनपुर ख़ादर में डोमा की महत्वपूर्ण बैठक, "वोट और संविधान बचाओ रैली" को सफल बनाने पर ज़ोर

शम्स आगाज

नई दिल्ली: दलित, ओबीसी, अल्पसंख्यक और आदिवासी समुदायों के साझा मंच डोमा के बैनर तले आगामी 30 नवम्बर 2025 को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में आयोजित होने वाली विशाल "वोट और संविधान बचाओ रैली" के संबंध में आज मदनपुर ख़ादर में एक अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता डोमा के राष्ट्रीय महासचिव एडवोकेट शाहिद अली ने की। बैठक में क्षेत्र के ज़िम्मेदार व्यक्तियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, उलेमा, युवाओं और स्थानीय आबादी के प्रतिनिधियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

प्रतिभागियों ने रैली के उद्देश्यों का समर्थन करते हुए इसे देश में संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावी कदम बताया।

अपने संबोधन में एडवोकेट शाहिद अली ने कहा कि आज देश की लोकतांत्रिक आत्मा, संवैधानिक मूल्यों और सभी के अधिकार खतरे में हैं। ऐसे समय में हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम आवाज़ उठाएँ और अपने अधिकारों की रक्षा करें।

उन्होंने कहा कि यह रैली केवल एक विरोध प्रदर्शन नहीं, बल्कि संवैधानिक अधिकारों की सुरक्षा और वंचित वर्गों की पहचान एवं न्याय के लिए एक बड़ी राष्ट्रीय मुहिम है।

बैठक में संगठन की ओर से रैली की मुख्य माँगें भी रखी गयीं, जिनमें प्रमुख रूप से शामिल हैं-सभी वर्गों को समानता और सम्पूर्ण विकास का अधिकार दिया जाए, अल्पसंख्यकों के साथ आर्थिक, व्यावसायिक और राजनीतिक अन्याय बंद किया जाए, अल्पसंख्यकों के बहिष्कार, नफ़रत फैलाने और हिंसा को तत्काल रोका जाए, वक्फ़ बोर्ड को बचाया जाए और उसकी स्वायत्तता बरकरार रखी जाए, मस्जिदों, गिरजाघरों और अन्य धार्मिक स्थलों पर हमले रोके जाएँ, अल्पसंख्यक शैक्षणिक, सामाजिक और कल्याणकारी संस्थानों पर की जा रही प्रतिशोधात्मक कार्रवाइयाँ बंद की जाएँ, अल्पसंख्यक समाज की ज़रूरतों के अनुरूप सरकारी सुविधाएँ और बजट उपलब्ध कराया जाए, देश के विकास में अल्पसंख्यकों की भागीदारी के लिए विशेष सरकारी योजनाएँ और प्रोत्साहन प्रदान किए जाएँ।

बैठक में शामिल स्थानीय सम्मानित व्यक्तियों ने संकल्प व्यक्त किया कि वे घ-घर जाकर लोगों को जागरूक करेंगे और मदनपुर ख़ादर से बड़ी संख्या में लोग इस रैली में शामिल होंगे।

जन-मानस के कल्याण के लिए आजीवन समर्पित रहे स्वामी गीतानन्द महाराज "भिक्षु"

गीता आश्रम में धूमधाम से मनाया गया 21वां पुण्यतिथि महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृंदावन। गांधी मार्ग स्थित गीता आश्रम में मुमुक्षु मंडल (रजि.) के द्वारा प्रख्यात संत गीतानन्द महाराज 'भिक्षु' का 21वां पुण्यतिथि महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति एवं धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसके अंतर्गत समस्त सन्तों विद्वानों व धर्माचार्यों द्वारा हिंदुओं की एकता और संत-भक्त-जीव सेवा का आह्वान किया।साथ ही स्वामी गीतानन्द महाराज 'भिक्षु' की दयालुता, सेवा, परोपकार, देशभक्ति, सत्कर्मों, दानवीरता की सराहना करते हुए पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता कर रहे महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. अवशेषानन्द महाराज ने कहा कि हमारे पूज्य सदगुरुदेव स्वामी गीतानन्द महाराज 'भिक्षु' परम भजनानंदी व वीतरागी संत थे।वे जन-मानस के कल्याण के लिए आजीवन समर्पित रहे।

हाईकोर्ट के सेवानिवृत्त रजिस्ट्रार जनरल व जज एस.एस. कुलश्रेष्ठ व नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिस्ट (इण्डिया) के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं ब्रज प्रेस क्लब के अध्यक्ष डॉ. कमल कांत उपमन्यु, एडवोकेट ने कहा कि गीता आश्रम के संस्थापक स्वामी गीतानंद महाराज 'भिक्षु' संत समाज के गौरव थे। उनकी संत सेवा व विप्र सेवा अद्वितीय थी।उन जैसी पुण्यात्मायें पृथ्वी पर कभी-कभार ही अवतरित होती हैं।

प्रख्यात साहित्यकार 'यूपी रत्न' डॉ. गोपाल चतुर्वेदी,एडवोकेट एवं पुराणाचार्य डॉ. मनोज मोहन शास्त्री ने कहा कि यों तो इस संसार में प्रतिदिन असंख्य व्यक्ति जन्म लेते हैं और असंख्य व्यक्ति यहां से विदा होते हैं परन्तु याद केवल और केवल स्वामी गीतानंद महाराज जैसी विभूतियों को ही किया जाता है, जिन्होंने कि लोक कल्याण के अनेकानेक कार्य किए हुए होते हैं।

श्रद्धांजलि सभा में चतुःसंप्रदाय के श्रीमहंत फूलडोल बिहारी दास महाराज, सन्त महेशानंद सरस्वती, स्वामी गोविंदानन्द तीर्थ, महामण्डलेश्वर स्वामी भास्करानन्द महाराज, श्रीपीपाद्वाराचार्य जगद्गुरु बाबा बलरामदास देवाचार्य महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी चितप्रकाशानन्द महाराज, महामण्डलेश्वर स्वामी सच्चिदानंद शास्त्री, महंत सुंदरदास महाराज, महंत जयराम दास, महामण्डलेश्वर स्वामी सुरेशानन्द परमहंस, भागवत आचार्य डॉ. अनुराग कृष्ण पाठक, प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. विनोद बनर्जी, डॉ. रमेशचंद्राचार्य विधिशास्त्री, महंत प्रहलाद दास, महामण्डलेश्वर नवल गिरि महाराज, मधुर कार्ष्णि विशाखा सखी, साध्वी डॉ. राकेश हरिप्रिया, अशोक व्यास रामायणी एवं वैष्णवाचार्य मारुति नंदनाचार्य वागीश महाराज आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन सन्त सेवानन्द ब्रह्मचारी ने किया। आचार्य विमल महाराज ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर पण्डित बिहारी लाल वशिष्ठ, डॉ. प्रहलाद सिंह, साध्वी राधा दासी, डॉ. अनूप शर्मा, संजय शर्मा, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, प्रकाश अरोड़ा, संजय अरोड़ा (लंदन), दर्शनलाल बवेजा, देवेंद्र वाधवा, वीरेंद्र गोयल, डिंपल बवेजा, बीना धींगड़ा, सुरेश मंगला, डॉ. सतनारायण सिंह, श्रीराम अग्रवाल, दीवानी न्यायालय कर्मचारी संघ के अध्यक्ष रूपकिशोर शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महोत्सव में पधारे समस्त सन्तों, विद्वानों व धर्माचार्यों को महामण्डलेश्वर स्वामी डॉ. अवशेषानन्द महाराज ने माल्यार्पण कर व पटुकाप्रसादी माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।साथ ही हजारों साधु-संतों, निर्धनों-निराश्रितों को भोजन प्रसाद ग्रहण कराकर उन्हें ऊनी वस्त्र, कंबल एवं दक्षिणा आदि प्रदान की।

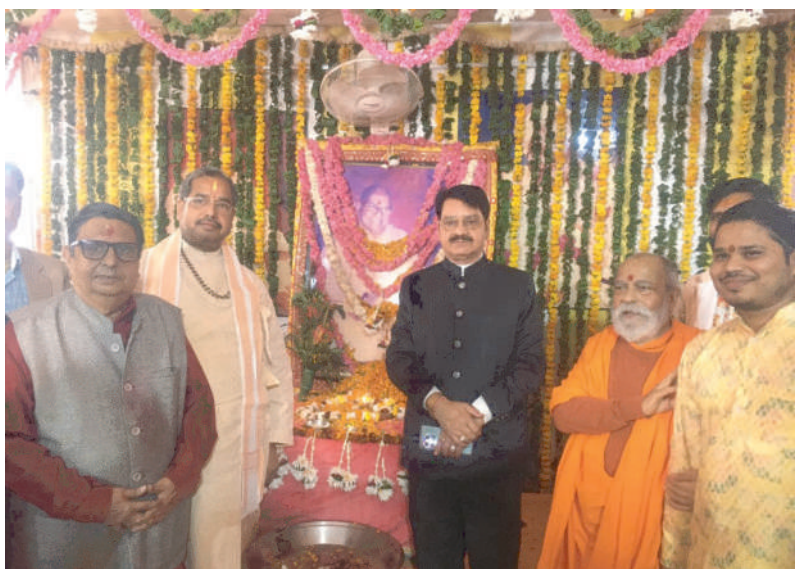

बीजेपी के छुटभैया नेता ने महिला पर तहरीर वापस लेने को लेकर बनाया नाजायज दबाव

परिवहन विशेष न्यूज

बदायूं: बदायूं में दबंगों ने घर में घुसकर महिला से मारपीट कर मौके से फरार हो गए। पीड़ित महिला ने कहा कि बिनावर पुलिस को आरोपितों के खिलाफ कार्रवाई हेतु शिकायत प्रार्थना पत्र दिया गया है लेकिन दबंगों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। जिससे परेशान होकर उसने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूं डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह से शिकायत की है। मामला बिनावर क्षेत्र के कस्बा मोहल्ला कस्तूरी नगर का है।

यहां की रहने वाली पीड़ित महिला ने आरोप लगाया है कि दिनांक 14 नवंबर की शाम लगभग 7:00 बजे वह अपने घर पर बच्चों के साथ बैठी हुई थी। आरोप है कि तभी पड़ोसी महिला सहित तीन लोग वहां पहुंचे और गाली-गलौज करने लगे जब पीड़ित महिला ने विरोध किया तो दबंगों ने उसके साथ मारपीट की। शोर शराब सुनकर स्थानीय लोगों को आता देख दबंग मौके से धमकी देते हुए फरार हो गए पीड़ित महिला ने पुलिस से शिकायत की।

थाना बिनावर पुलिस द्वारा दबंग पर कोई सख्त कार्रवाई न होने के चलते पीड़ित महिला ने एसपी ऑफिस बदायूं पहुंचकर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक से शिकायत की और दबंग पर सख्त कार्रवाई की मांग की। फिलहाल वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूं ने जांच कराकर कार्रवाई का आश्वासन दिया।

पीड़ित महिला ने बताया कि थाना

बिनावर पुलिस को शिकायत प्रार्थना पत्र देने के बाद दिनांक 19 नवंबर की सुबह लगभग 10:30 बजे छुट भैया भाजपा नेता पंकज गुप्ता व मुकेश दो सिपाहियों को लेकर बिना अनुमति उनके घर में घुस गए। पीड़ित महिला का आरोप है कि वह बाथरूम में जब नहा रही थी तब नग्न अवस्था में पुलिस के सामने अपने दोनों हाथों से पीड़ित महिला को पकड़ लिया और बोले पीड़ित महिला से की अपनी तहरीर वापस ले, वरना हम तुझे व तेरे पति पर झूठा मुकदमे में फंसा देंगे।

पीड़ित महिला ने मजबूरन परेशान होकर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूं डॉ बृजेश कुमार सिंह को शिकायत प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है। महिला एक गरीब परिवार से है जिसका पति टेंपो चलाकर अपने बच्चों का भरण पोषण करता है।

श्रीव्यास तपोवन (श्रीराम गौ सेवा कुंज) में श्रीहनुमान मन्दिर का भूमि पूजन 25 नवम्बर को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। गोवर्धन रोड़-ग्राम बहुलावन (बाटी) स्थित श्रीव्यास तपोवन (श्रीराम गौ सेवा कुंज) में श्रीराम मित्र मंडल (रजि.) के द्वारा निर्माणाधीन श्रीहनुमान मन्दिर का भूमि पूजन (शिलान्यास) 25 नवम्बर 2025 को पूर्वाहन 11:30 से 12:15 बजे पर्यन्त अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ किया जाएगा।

जानकारी देते हुए समन्वयक डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि श्रीराम मित्र मंडल (रजि.) के अध्यक्ष आचार्य महन्त रामदेव चतुर्वेदी की अध्यक्षता में होने वाले इस भूमि पूजन शिलान्यास में ब्रज

के कई प्रख्यात सन्त, महामण्डलेश्वर, श्रीमहन्त व धर्माचार्यों के अलावा देश विदेश से आए सैकड़ों भक्त-श्रद्धालु व समस्त ग्राम वासी उपस्थित रहेंगे।

कार्यक्रम के अंतर्गत सायं 05 बजे से वृन्दावन के बांके बिहारी कॉलोनी स्थित श्री कौशल किशोर राम मन्दिर में आचार्य लवदेव चतुर्वेदी एवं आचार्य कुशदेव चतुर्वेदी के द्वारा श्रीराम विवाह महोत्सव आयोजित किया जाएगा।जिसमें सभी भक्त-श्रद्धालु सादर आमंत्रित हैं।

महोत्सव की संयोजक श्रीमती कुंजलता चतुर्वेदी ने सभी से इस आयोजन में उपस्थित होने का अनुरोध किया है।

इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स ऐक्ट, 2025: राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण कदम: वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान

परिवहन विशेष न्यूज

- नए प्रावधान राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करेंगे और अवैध प्रवास की चुनौती से प्रणालीगत ढंग से निपटने में सहायक होंगे: वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान
- नकली पासपोर्ट या जाली वीज़ा के साथ पकड़े जाने पर न्यूनतम 2 साल से 7 साल तक की सज़ा और 1 लाख से 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है: वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ

उत्तर प्रदेश। भारत में अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों और आव्रजन व्यवस्था में बढ़ती अनियमितताओं पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स ऐक्ट, 2025 लागू कर दिया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में भारत सरकार द्वारा लिए गए इस महत्वपूर्ण कदम की सराहना करते हुए वरिष्ठ समाजसेवी मुसरफ ख़ान ने कहा कि यह अधिनियम भारत की सीमा सुरक्षा, आव्रजन व्यवस्था और आतंरिक सुरक्षा को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में एक निर्णायक कदम है। फर्जी दस्तावेज़ों के सहारे देश में प्रवेश कर रहे तत्वों और अवैध रूप से रह रहे विदेशी नागरिकों पर अब पहले की तुलना में कहीं अधिक सख्ती बरती जाएगी। यह कानून भारत की इमीग्रेशन प्रणाली को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप ले जाने का दावा करता है और इसे आधुनिक टेक्नोलॉजी, पारदर्शिता और सख्त प्रवर्तन का समन्वय माना जा रहा है। यह नया कानून एक व्यापक और आधुनिक व्यवस्था का ढांचा प्रस्तुत करता है, जिसके साथ देश में लागू चार पुराने कानूनों को समाप्त कर दिया गया है।

उनका का दावा है कि नए प्रावधान राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करेंगे और अवैध प्रवास की चुनौती से प्रणालीगत ढंग से निपटने में सहायक होंगे। यह प्रावधान अवैध प्रवासियों, मानव-तस्करी और फर्जी दस्तावेज़ बनाने वाले नेटवर्क पर सीधे तौर पर चोट करेगा। कानून के तहत किसी भी संस्थान द्वारा जानकारी छिपाने या अवैध प्रवासियों को आश्रय देने पर उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी, जिसमें पंजीकरण निरस्तीकरण तक शामिल है। उनका कहना है कि इससे अवैध प्रवासियों की पहचान, निगरानी और कार्रवाई की प्रक्रिया अधिक तेज़ और पारदर्शी होगी।

कठोर दंड का प्रावधान - डिजिटल निगरानी और एकीकृत व्यवस्था - ब्यूरो ऑफ इमीग्रेशन को मिले नए अधिकार - चार पुराने कानून अब निरस्त

इस नए एक्ट के कठोर दंड एवं प्रावधान को रेखांकित करते हुए उन्होंने आगे बताया कि इस नए क़ानून इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स ऐक्ट, 2025 के तहत अवैध रूप से भारत में प्रवेश करने या नकली दस्तावेज़ों का उपयोग करने वालों पर भारी दंड लगाया गया है। बिना वैध पासपोर्ट या वीज़ा के देश में प्रवेश पर 5 साल तक की जेल और 5 लाख रुपये तक का जुर्माना तय किया गया है। नकली पासपोर्ट या जाली वीज़ा के साथ पकड़े जाने पर न्यूनतम 2 साल से 7 साल तक की सज़ा और 1 लाख से 10 लाख रुपये तक का जुर्माना लगाया जा सकता है। डिजिटल निगरानी और एकीकृत व्यवस्था - इस अधिनियम का एक प्रमुख स्तंभ है इंटीग्रेटेड इमीग्रेशन मैनेजमेंट सिस्टम (IIMS) एक आधुनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म, जिसमें बायोमेट्रिक डेटा, एआई-आधारित निगरानी और रीयल-टाइम ट्रैकिंग जैसी तकनीकों का उपयोग किया जाएगा। विदेशी नागरिकों का पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। होटल, विश्वविद्यालय, अस्पताल और अन्य संस्थानों को विदेशी नागरिकों से जुड़ी सभी जानकारी नियमित रूप से सरकार को उपलब्ध करानी होगी। पता, रोजगार, विश्वविद्यालय या आवास में परिवर्तन पर विदेशी नागरिकों को एफआरआरओ को तत्काल सूचित करना होगा। ब्यूरो ऑफ इमीग्रेशन को मिले नए अधिकार - इमीग्रेशन एंड फॉरेनर्स ऐक्ट ने ब्यूरो ऑफ इमीग्रेशन (BoI) को अधिक अधिकार और स्वायत्तता प्रदान की है। अब यह एजेंसी: अवैध विदेशी नागरिकों को त्वरित रूप से डिपोर्ट कर सकेगी। राज्यों और अन्य सुरक्षा एजेंसियों के साथ प्रत्यक्ष समन्वय स्थापित कर सकेगी। चार पुराने कानून अब निरस्त - यह नया अधिनियम निम्नलिखित चार पुराने कानूनों को व्यापक रूप से प्रतिस्थापित करता है: 1. पासपोर्ट (एंट्री इंटू इंडिया) अधिनियम, 1920 2. रजिस्ट्रेशन ऑफ फॉरेनर्स अधिनियम, 1939 3. फॉरेनर्स एक्ट, 1946 4. इमीग्रेशन (कैरियर्स लाइबिलिटी) एक्ट, 2000 नए कानून का दायरा नेपाल और भूटान के नागरिकों पर लागू नहीं होगा।

गुरू तेग बहादुर सिंह जी का बलिदान-धार्मिक असहिष्णुता के विरुद्ध वैश्विक मानव अधिकार संघर्ष का ऐतिहासिक आधार

गुरु तेग बहादुर सिंह जी का यह शहादत संदेश केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समय के साथ यह वैश्विक मानवाधिकार आंदोलन की आधारशिला बन गया

गुरु तेग बहादुर सिंह जी के 350 वें शहीदी वर्ष 2025 का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाना ऐतिहासिक,सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर 25 नवंबर 2025 को गुरु तेग बहादुर सिंह जी के 350 वें शहीदी दिवस का आयोजन केवल एक धार्मिक श्रद्धांजलि भर नहीं है, बल्कि मानव सभ्यता के इतिहास में उन दुर्लभ उदाहरणों का स्मरण है जहाँ किसीआध्यात्मिक नेता ने अपने धर्म के अनुयायियों के लिए नहीं, बल्कि दूसरे धर्म की धार्मिक स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की रक्षा के लिए अपना जीवन बलिदान दिया। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे, जिनका जीवन साहस और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। उनका शहीदी दिवस हमें न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा देता है।उनका 350वां शहीदी दिवस इस वर्ष मनाया जा रहा है, और यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे, जिनका बलिदान भारतीय धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे, जिनका जीवन साहस और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। उनका शहीदी दिवस हमें न्याय, समानता और मानवाधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा देता है। गुरु तेग बहादुर जी का 350वां शहीदी दिवस इस वर्ष मनाया जा रहा है, और यह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। गुरु तेग बहादुर जी सिख धर्म के नौवें गुरु थे और उन्हें 'हिंद की चादर' के रूप में भी जाना जाता है। उनका बलिदान भारतीय धर्मनिरपेक्षता और धार्मिक स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। यह घटना विश्व मानवाधिकार इतिहास में अद्वितीय है।17वीं शताब्दी में मुगल शासन के दौरान जब धार्मिक दबाव और जबरन धर्मांतरण की नीति ने भय और आतंक का वातावरण बना दिया था, उस समय कश्मीर के पंडितों ने अपनी अस्तित्वगत पहचान और धार्मिक स्वाधीनता की रक्षा हेतु सहायता की गुहार लगाई। ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर सिंह जी ने अपनी जान की बाज़ी लगाकर न केवल उन्हें संरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया, बल्कि यह संदेश दिया कि मानवता का धर्म किसी भी धार्मिक सत्ता से बड़ा है।उनका दिल्ली के चांदनी चौक में सार्वजनिक रूप से शहीद होना केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि विचारों की वह निर्णायक जीत थी जिसने यह स्थापित किया कि सत्ता किसी व्यक्ति की आस्था, पहचान और स्वतंत्र विचार पर नियंत्रण नहीं कर सकती। विश्व मानवाधिकार घोषणापत्र (यूडीएचआर 1948) में धार्मिक स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विचार की स्वायत्तता के जो सिद्धांत शामिल किए गए, वे गुरु तेग बहादुर जी के बलिदान से सदियों पहले ही व्यवहार रूप में स्थापित हो चुके थे। यही कारण है कि कई अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ता और इतिहासकार उन्हें 'द फर्स्ट ह्यूमन राइट्स डिफेंडर ऑफ़ द मॉडर्न वर्ल्ड' तथा 'द सैंट ऑफ़ फ्रीडम ऑफ़ कंसाइंस' के रूप में स्वीकारते हैं।गुरु तेग बहादुर सिंह जी का यह शहादत संदेश केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि समय के साथ यह वैश्विक मानवाधिकार आंदोलन की आधारशिला बन गया। यह बलिदान यह दर्शाता है कि धार्मिक स्वतंत्रता सिर्फ व्यक्तिगत अधिकार नहीं, बल्कि मानव सभ्यता का मौलिक मूल्य है। उनका बलिदान धार्मिक पहचान की रक्षा नहीं, बल्कि मानव गरिमा की रक्षा थी,और यही उन्हें विश्व इतिहास में अद्वितीय बनाता है।

साथियों बात अगर हम शांति सहअस्तित्व और वैश्विक मानवता का संदेश:अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में गुरु तेग बहादुर की विरासत इसको समझने की करें तो, आधुनिक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब दुनियाँ धार्मिक संघर्षों, नस्लीय विभाजन, सांस्कृतिक असहिष्णुता और अतिवाद की चुनौतियों से जूझ रही है, तब गुरु तेग बहादुर सिंह जी का जीवन संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो गया है। उनका दर्शन इस विचार को मजबूत करता है कि धर्म का उद्देश्य विभाजन नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और समाज में शांति स्थापित करना है। उन्होंने समाज के हाशिये पर खड़े लोगों, दलितों, पीड़ितों, किसानों और उत्पीड़ित समुदायों के अधिकारों के लिए आवाज उठाई। उनके शिक्षण में मनुष्य की समानता, करुणा, निडरता और त्याग के आदर्श स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आज 'इंटरफेथ डायलागर' 'पीसफुल कोक्सीस्टेंस' और 'रिलिजस टॉलरेंस' जैसे विषयों पर चर्चा बढ़ रही है। संयुक्त राष्ट्र और विभिन्न वैश्विक संस्थाएँ शांति और मानवाधिकारों के विस्तार के लिए प्रयास कर रही हैं। ऐसे वैश्विक विमर्श में गुरु तेग बहादुर सिंह जी की विचारधारा एक महत्वपूर्ण संदर्भ प्रदान करती है। वे बताते हैं कि धार्मिक विविधता संघर्ष का कारण नहीं बल्कि मानव संस्कृति की समृद्धि का प्रतीक है।उनकी शिक्षाएँ अहिंसा और आत्मसंयम के माध्यम से संघर्षों के समाधान की ओर प्रेरित करती हैं। उन्होंने सिख परंपरा में 'सरबत दा भला' अर्थात सभी का कल्याण का सिद्धांत मजबूत किया, जो आज संयुक्त राष्ट्र के 'ग्लोबल पीस एंड वेलफेयर' मिशन से गहरे रूप में जुड़ता है। गुरु तेग बहादुर सिंह जी के दर्शन में राष्ट्र, धर्म, जाति और समुदाय से ऊपर उठकर मानवता को प्राथमिकता देने का संदेश है, जो वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सामुदायिक हिंसा, धार्मिक ध्रुवीकरण और युद्ध की स्थितियों से जूझ रही दुनिया के लिए एक मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकता है।उनकी न्यासित विरासत आज कनाडा, ब्रिटेन, अमेरिका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया और एशिया के अनेक देशों में अध्ययन और अनुसंधान का विषय है। विश्वभर में सिख समुदाय और मानवाधिकार संगठन उनके बलिदान को 'फ्रीडम ऑफ़ फेथ' और 'रिलिबर्टी ऑफ़ कोनसाइंस' के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनकी स्मृति में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, अकादमिक परिसंवादों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन यह दर्शाता है कि उनकी विरासत वैश्विक समाज में आज भी जीवंत और प्रभावशाली है।

साथियों बात अगर हम 350 वें शहीदी वर्ष (2025) का वैश्विक महत्व:अंतरराष्ट्रीय संवाद, मानवाधिकार एजेंडा और विश्व समुदाय की भूमिका इसको समझने की करें तो गुरु तेग बहादुर सिंह जी के 350वें शहीदी वर्ष 2025 का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाना ऐतिहासिक,सांस्कृतिक और राजनैतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अवसर दुनिया को यह पुनः स्मरण कराता है कि धार्मिक स्वतंत्रता और मानवाधिकारों के लिए संघर्ष केवल कानूनी या राजनीतिक प्रश्न नहीं, बल्कि मानवीय मूल्य हैं जिनके लिए इतिहास में कई महान व्यक्तित्वों ने अपना जीवन समर्पित किया। आज भी विश्व के अनेक क्षेत्रों,मध्य पूर्व, अफ्रीका, एशिया और यूरोपःमें धार्मिक असहिष्णुता, अल्पसंख्यक उत्पीड़न ,नस्लीय हिंसा और विचारों पर नियंत्रण की घटनाएँ बढ़ रही हैं। ऐसे समय में गुरु तेग बहादुर जी का बलिदान वैश्विक समुदाय के लिए प्रेरणा और चेतावनी दोनों है।2025 में इस अवसर पर यदि वैश्विक नेतृत्व उनकी विरासत को मानवाधिकार नीतियों, धार्मिक स्वतंत्रता संरक्षण, शांति निर्माण और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के ढांचे में शामिल करे, तो यह विश्व व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर यह चर्चा महत्वपूर्ण होगी कि क्या दुनियाँ वास्तव मेंआस्था की स्वतंत्रता को सार्वभौमिक अधिकार के रूप में स्वीकारती है, या अभी भी राजनीतिक स्वार्थ, सत्ता और विचारधारा के दबाव के आगे मानव अधिकार कमजोर पड़ जाते हैं।

साथियों बात अगर हम गुरु तेग बहादुर सिंह जी का शहीदी दिवस अंतरराष्ट्रीय समुदाय को संदेश देने की करें तो,यह अवसर देता है कि वे धार्मिक स्वतंत्रता को केवल दस्तावेजों में नहीं, बल्कि व्यवहारिक रूप से सुनिश्चित करने की दिशा में कार्य करें। शैक्षणिक संस्थानों में उनकी विचारधारा पर शोध, अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संगठनों द्वारा उनके योगदान को मान्यता,और वैश्विक शांति अभियानों में उनके सिद्धांतों को शामिल करना इस वर्ष की प्रमुख उपलब्धियाँ हो सकती हैं।उनका बलिदान यह सिद्ध करता है कि एक व्यक्ति का साहस और नैतिक दृढ़ता इतिहास की दिशा बदल सकता है। यह संदेश आज की पीढ़ी को यह प्रेरणा देता है कि अन्याय, उत्पीड़न और असहिष्णुता के विरुद्ध आवाज उठाना केवल अधिकार नहीं, बल्कि मानवता के प्रति जिम्मेदारी है। विश्व समुदाय यदि इस ऐतिहासिक अवसर का उपयोग मानव मूल्यों को सुदृढ़ करने में करता है, तो यह 350वाँ वर्ष केवल स्मरण नहीं, बल्कि एक वैश्विक परिवर्तन का आधार बन सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि गुरु तेग बहादुर सिंह जी का 350वाँ शहीदी दिवस केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि वैश्विक मानवाधिकार इतिहास की महत्वपूर्ण धरोहर का उत्सव है। उनका जीवन और बलिदान यह प्रमाण है कि मानवता, स्वतंत्रता और शांति के सिद्धांत किसी भी सत्ता से बड़े होते हैं।आज कीदुनियाँ जो संघर्षों और असहिष्णुता से भरी है,उसमें उनका संदेश एक प्रकाश स्तंभ की तरह है, जो भविष्य के लिए दिशा प्रदान करता है। उनका बलिदान मानव सभ्यता को यह सिखाता है कि सच्ची शक्ति तलवार में नहीं, बल्कि सत्य और न्याय के समर्थन में खड़े होने के साहस में होती है। 25 नवंबर 2025 को विश्व जब उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि अर्पित करेगा, तब वास्तव में यह अवसर होगा विचार करने का कि क्या हम उनके आदर्शों के अनुरूप एक ऐसी दुनिया बना पा रहे हैं जहाँ हर व्यक्ति सम्मान, स्वतंत्रता और शांति के साथ जीवन जी सके।

अभी न जाओ छोड़ के... : 'ही मैन' धर्मेंद्र को समर्पित

धर्मेंद्र का जाना सिर्फ एक अभिनेता का जाना नहीं, बल्कि एक युग का शांत हो जाना है। गाँव की मिट्टी से उठकर सिनेमा के आसमान तक पहुँचे इस कलाकार ने अपने अभिनय से नहीं, बल्कि अपनी सादगी और मानवीयता से करोड़ों दिल जीते। रोमांस से लेकर एक्शन और कॉमेडी तक—हर भूमिका में वे जीवन की सच्चाई लेकर आए। "शोले" का वीरू, "चुपके चुपके" का प्रोफेसर, "मेरा गाँव मेरा देश" का नायक—ये सारे सिर्फ किरदार नहीं, हमारी यादों का हिस्सा हैं। धर्मेंद्र चले गए, लेकिन उनका उजाला हमेशा रहेगा।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

हिंदी सिनेमा ने अपने लंबे सफर में कई सितारों को जन्म दिया, पर उनमें कुछ ऐसे हैं जिनकी रोशनी समय के साथ कम नहीं होती, बल्कि हर पीढ़ी की आँखों में एक नई चमक लेकर जीवित रहती है। धर्मेंद्र उन्हीं दुर्लभ सितारों में से थे, जो सिर्फ अभिनेता नहीं थे, बल्कि भारतीय समाज के भावनात्मक ताने-बाने का हिस्सा बन चुके थे। उनका जाना एक ऐसी खामोशी छोड़ गया है, जिसे शब्दों में बाँध पाना मुश्किल है। वे सिर्फ पर्दे पर दिखने वाली एक छवि नहीं थे; वे एक ऐसे इंसान थे, जिनकी गर्माहट और विनम्रता ने दर्शकों को अपने परिवारों के किसी सदस्य की तरह उनसे जोड़ दिया था।

धर्मेंद्र की कहानी किसी फिल्मी पटकथा से कम नहीं। पंजाब के एक छोटे से गांव नसराली से शुरू हुई यह यात्रा संघर्ष, मेहनत और सपनों की शक्ति का जीवंत उदाहरण है। एक साधारण किसान परिवार में जन्मा लड़का जब फिल्मों की दुनिया की चमक-दमक में पहुंचता है, तो आमतौर पर व्यक्ति अपनी मूल पहचान खो बैठता है, लेकिन धर्मेंद्र ऐसे नहीं थे। उन्होंने अपनी जड़ों को कभी नहीं छोड़ा। वही सादगी, वही देसीपन, वही अपनापन उनकी हर मुस्कान में दिखाई देता था। यही कारण है कि वे सिर्फ 'स्टार' नहीं बने, वे 'दिलों का हीरो' बने।

1960 के दशक में जब उन्होंने सिनेमा के परदे पर कदम रखा, तब दर्शकों ने यह अंदाज़ा नहीं लगाया होगा कि यह युवक अगले कई दशकों तक हिंदी फिल्मों का सबसे प्रिय चेहरा बनने वाला है। शुरुआत भले ही धीमी रही हो, पर उनकी आँखों में मौजूद मासूमियत और व्यक्तित्व में छिपा गहरा आत्मविश्वास बहुत जल्द ही लोगों के दिलों तक पहुँच गया। उनकी शुरुआती फिल्मों ने यह दिखाया कि उनमें संवाद की सरलता, भावनाओं की सहज अभिव्यक्ति और अपने किरदार के प्रति ईमानदार दृष्टिकोण जैसी विशिष्ट खूबियाँ हैं।

समय के साथ धर्मेंद्र ने दिखा दिया कि वे सिर्फ एक रोमांटिक हीरो नहीं, बल्कि हर शैली में फिट बैठने वाले अभिनेता हैं। उन्होंने अभिनय के हर रंग को जीया—रोमांस की कोमलता, कॉमेडी की सहजता, एक्शन की तीव्रता और भावुक दृश्यों की गहराई। ₹अनुपमा₹ और ₹अनपढ़₹ में उनकी रोमांटिक छवि दर्शकों का दिल चुरा लेती थी, तो ₹मेरा गांव मेरा देश₹ और ₹शोले₹ में उनका एक्शननुमा अंदाज़ उन्हें 'ही-मान' की उपाधि दिलाता था। यह उपाधि किसी फैशन के कारण नहीं, बल्कि उनके स्वाभाविक दृढ़ व्यक्तित्व का प्रमाण थी।

"शोले" का वीरू भारतीय सिनेमा के इतिहास का वह चरित्र है, जो किसी परिचय का मोहताज नहीं। वीरू की मस्ती, दोस्ती, बेफिक्री और दिल की गहराई ने इस किरदार को अमर बना दिया। धर्मेंद्र कोई भूमिका निभाते नहीं थे, वे उसे जीते थे। यही कारण है कि वीरू आज भी दर्शकों के चेहरों पर मुस्कान ला देता है। लेकिन धर्मेंद्र का जादू सिर्फ वीरू तक सीमित नहीं था। "चुपके चुपके" में उनकी गंभीर-स्वभाव वाली कॉमेडी यह साबित करती है कि हास्य अभिनय हमेशा उछल-कूद या अतिरंजना से नहीं आता; वह शालीनता और समयबद्ध संवादों से भी पैदा हो सकता है। धर्मेंद्र इस बात का जीता-जागता उदाहरण थे।

उनके अभिनय का आधार हमेशा 'सच्चाई' रहा। वे अभिनय नहीं करते थे, वे सत्य को अभिव्यक्त करते थे। यह सत्य कभी प्रेम की कोमलता के रूप में जागता था, कभी संघर्ष की तल्खी के रूप में। आज के समय में जब अभिनय तकनीक और बाहरी सजावट पर अधिक निर्भर होता जा रहा है, धर्मेंद्र हमें याद दिलाते हैं कि अभिनय का सबसे बड़ा केंद्र 'दिल' होता है। यही वह विशेषता है, जिसने उनकी फिल्मों को समय की सीमाओं से मुक्त कर दिया।

धर्मेंद्र की एक और महानता थी—उनकी जमीन से जुड़ाव। उन्होंने कभी खुद को महान या बड़ा साबित करने की कोशिश नहीं की। सैकड़ों फिल्मों की सफलता, लाखों प्रशंसक और दशकों की लोकप्रियता के बाद भी वे एक साधारण ग्रामीण की तरह बात करते थे। उनकी विनम्रता किसी बनावटी विनम्रता का परिणाम नहीं थी; वह उनके स्वभाव का हिस्सा थी। यही कारण है कि वे उद्योग के भीतर और बाहर—दोनों जगह समान आदर के पात्र बने रहे।

धर्मेंद्र ने अपनी निजी और राजनीतिक जिंदगी में भी अपने मूल्यों को नहीं छोड़ा। वे वर्ष 2004 में लोकसभा के लिए चुने गए और अपने तरीके से जनता की सेवा की। हालाँकि वे राजनीति में गहराई से सक्रिय नहीं रहे, लेकिन यह साफ समझ आता है कि वे समाज के प्रति एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपनी भूमिका को समझते थे। उनका चरित्र उतना ही सीधा और स्पष्ट था जितना उनका अभिनय।

उनकी जीवनशैली की सादगी ने भी लोगों को हमेशा प्रभावित किया। मुंबई की भीड़भाड़ से दूर उनका फार्महाउस, धरती पर काम करना, खेतों को सींचना, पशुओं के साथ समय बिताना—ये सब उनकी आत्मा को सुकून देते थे। यह उस अभिनेता की तस्वीर है जो चमकते पर्दे से परे, असली जिंदगी में प्रकृति की गोद में अपने आप को पूरा महसूस करता था। यह गुण किसी अभिनेता में शायद ही देखने मिलता हो।

उनका योगदान सिर्फ उनके समय तक सीमित नहीं। आज की पीढ़ी भी धर्मेंद्र की फिल्मों में वही ताजगी, वही मानवीय संवेदना और वही संवादशक्ति महसूस करती है, जो 40-50 साल पहले दर्शक महसूस करते थे। यह बहुत कम कलाकारों के हिस्से आता है कि उनकी फिल्मों की ताकत पीढ़ियों की सीमाएँ लांघ जाए। धर्मेंद्र यह विरासत अपने साथ लेकर नहीं गए; वे इसे समाज में छोड़ गए हैं।

आज जब हम उन्हें स्मरण करते हैं, तो उनके चेहरे की वह सहज मुस्कान तुरंत आँखों के सामने आ जाती है। ऐसा लगता है जैसे वह अभी भी किसी दृश्य की तैयारी कर रहे हों, या किसी इंटरव्यू में अपनी प्रसिद्ध विनम्रता के साथ कह रहे हों—"अरे, मैं कौन सा बड़ा कलाकार हूँ, बस अपनी कोशिश करता हूँ।" उनकी यह बात ही उन्हें बड़ा बनाती थी।

धर्मेंद्र का जाना भारतीय सिनेमा के लिए सिर्फ एक कलाकार की विदाई नहीं; यह एक युग का अवसान है। वह युग जिसमें सादगी, भावनाएँ और मानवीयता अभिनय की रीढ़ हुआ करती थीं। वह दौर जब सिनेमा सिर्फ मनोरंजन नहीं, बल्कि समाज, परिवार और रिश्तों का आईना होता था। धर्मेंद्र उस आईने की सबसे चमकदार किरण थे।

लेकिन हर महान कलाकार की तरह धर्मेंद्र भी यह सिद्ध करके गए हैं कि शरीर भले चला जाए, कला कभी नहीं जाती। उनकी आवाज़, उनकी हँसी, उनकी आँखों की चमक, उनकी फिल्मों के दृश्य—यह सब कहीं न कहीं हमारे भीतर जीते रहेंगे। वह इसलिए नहीं कि उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया, बल्कि इसलिए कि उन्होंने लोगों के दिलों में जगह बनाई। सिनेमा की असली शक्ति यही है—जब दर्शक अभिनेता को सिर्फ अभिनेता न मानकर परिवार का हिस्सा मानने लगें।

आज, जब हम श्रद्धांजलि देते हुए यह पंक्ति याद करते हैं—"अभी न जाओ छोड़ के..."—तो यह सिर्फ एक गीत की पंक्ति नहीं रह जाती। यह एक युग की पुकार जैसी लगती है। लेकिन महान कलाकार कभी सचमुच नहीं जाते। धर्मेंद्र भी नहीं गए। वे हमारे गीतों में हैं, संवादों में हैं, फिल्मों में हैं, और सबसे बढ़कर, हमारे दिलों में हैं।

भारतीय सिनेमा के उस 'ही-मान' को शत-शत नमन, जिसकी सादगी ने हमें इंसान होना सिखाया और जिसकी मुस्कान ने पीढ़ियों को जीवन की सुंदरता का एहसास कराया।

आज गए धर्मेंद्र जी....

एक–एक कर जा रहे हैं, कोई उन्हें रोक न पाए।
आज धर्मेंद्र जी भी चले, जग को बिना बताए।
असरानी जी मुस्कानों संग, यादों में बस रह जाएँ।
सतीश जी की मधुर हँसी, दिल को फिर से रुलाए।

पर्दे का हर एक दृश्य, अब थोड़ा सूना–सूना है।
जैसे कोई अपना बढ़कर, हमसे दूर चला है।
बीते दिनों की बातें, अब दुआओं में रह गईं।
चलती राहों में उनकी, खुशबू सौरभ बह गई।

कलाकार यूँ जाते नहीं, बस रूप बदलकर आते हैं।
कहानियों, गीतों में ढलकर, फिर दिल में मुस्काते हैं।
एक युग जैसे ढलता है, पर यादें अमर हो जाती हैं।
उनके हर संवाद में, जीवन की गूँज सुनाई देती है।

मन झुककर नमन करता है, इन प्यारी आत्माओं को।
प्रभु दे शांत विश्राम उन्हें, अपने दिव्य द्वारों को।
हम यादों की बाती जलाकर, श्रद्धा से दीप सजाएँ।
ॐ शांति कहकर उनके लिए, मन से प्रार्थना गुनगुनाएँ। 🙏

– डॉ सत्यवान सौरभ

धर्मेन्द्र: पर्दे का हीरो नहीं, दिलों का बादशाह

फ़िल्मी आसमान में कुछ सितारे ऐसे जन्म लेते हैं, जिनकी चमक समय की सीमाओं को लांघ जाती है। धर्मेन्द्र — वह नाम जिसने भारतीय सिनेमा को सिर्फ़ वीरता नहीं, संवेदना भी दी। वह अभिनेता नहीं, भावनाओं का एक संस्थान थे। उनकी आँखों में ग़ज़ब की सच्चाई थी, आवाज़ में गूँजता अपनापन और मुस्कान में वो गर्मजोशी जो किसी गाँव की धूप जैसी लगती थी — कोमल, सच्ची और आत्मीय। धर्मेन्द्र वो इंसान थे जो परदे पर जितने बड़े हीरो दिखे, असल ज़िंदगी में उससे कहीं बड़े इंसान निकले। उनकी शख़्सियत किसी पुराने बरगद की तरह थी — जो हर पीढ़ी को छाँव देता रहा, स्थिरता देता रहा। सूरज भले हर दिन उगता हो, पर कुछ रोशनियाँ ऐसी होती हैं जो एक बार जाती हैं तो युग को अँधेरा दे जाती हैं। 24 नवंबर को ऐसी ही एक रौशनी बुझी — धर्मेन्द्र की। यह सिर्फ़ एक व्यक्ति का जाना नहीं था, यह अभिनय के एक युग का अवसान था। वह युग, जब पर्दे पर मांसपेशियों से नहीं, दिल से नायक गढ़े जाते थे। धर्मेन्द्र सिर्फ़ फ़िल्मों के हीरो नहीं थे, वे उस मिट्टी की आत्मा थे जिसमें भारतीय सिनेमा की जड़ें बसी हैं।

जिस आवाज़ ने कभी सिनेमा हॉलों को हिला दिया था — "कुत्ते, मैं तेरा ख़ून पी जाऊँगा!" — आज वह ख़ामोश है।पर यह ख़ामोशी भी उनकी गूँज को मिटा नहीं सकती। वह मुस्कान, जो पीढ़ियों की थकान मिटा देती थी, आज भी स्मृतियों में धूप की तरह चमक रही है। धर्मेन्द्र गए नहीं, वे बस पर्दे के उस पार चले गए हैं — जहाँ से वे अब भी अपनी आँखों की चमक और दिल के स्नेह से हम सबको देखते रहेंगे। उनके साथ भारतीय सिनेमा का वह स्वर्ण अध्याय बंद हुआ जिसमें सादगी, शौर्य और संवेदना साथ-साथ चलते थे। धर्मेन्द्र के जाने से परदे ने अपना हीरो खो दिया, पर दिलों ने अपना बादशाह पा लिया — हमेशा के लिए।

1960 में "दिल भी तेरा हम भी तेरे" से उनके सफ़र की शुरुआत हुई — एक ऐसा सफ़र जो अगले छह दशकों तक भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में दर्ज हुआ। धर्मेन्द्र ने एक-एक किरदार से साबित किया कि अभिनय सिर्फ़ संवाद बोलने की कला नहीं, बल्कि भावनाओं को जीने का नाम है। एक तरफ़ शोले का वीरू, जो दोस्ती का प्रतीक बन गया, तो दूसरी ओर सत्यकाम का ईमानदार अभियंता, जो आदर्शवाद की मूर्ति बना। उनके किरदारों में देहात की मिट्टी की ख़ुशबू थी, और शहर की समझदारी का संतुलन। वह फ़िल्मी परदे पर रोमांस के राजा भी बने और एक्शन के सम्राट भी। उनकी मुस्कान जितनी प्यारी थी, उनकी मर्दानगी उतनी ही दमदार — इसलिए उन्हें कहा गया, "ही-मैन ऑफ बॉलीवुड"। पर धर्मेन्द्र का आकर्षण सिर्फ़ ताक़त में नहीं था — वह अपनी नज़रों की गहराई में, भावनाओं के कोमलपन में भी बसते थे। वे सिनेमा के वह नायक थे जिनकी आँखें बोलती थीं और मुस्कान सुनाई देती थी।

धर्मेन्द्र कोई साधारण अभिनेता नहीं थे। वे हिंदुस्तान की मिट्टी के बेटे थे — पंजाब के लुधियाना ज़िले के सहनेवाल गाँव में 8 दिसंबर 1935 को जन्मे धर्म सिंह देओल। खेतों की खुशबू, माँ की रसोई की महक और गाँव की सादगी उनके व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा रही। यही ज़मीन उनकी आत्मा बनी — वही ज़मीन जिसने उन्हें गढ़ा और वही ज़मीन जिसने उन्हें धरती का हीरो बनाया। अगर अमिताभ "एंग्री यंग मैन" थे, तो धर्मेन्द्र "ह्यूमन हीरो" थे — जो गुस्से से नहीं, अपनापन से जीतते थे। उनके हर संवाद में मिट्टी की सोंधी गंध थी, हर हावभाव में सहजता। उनकी जोड़ी हेमामालिनी के साथ किसी कविता से कम नहीं थी — जहाँ प्रेम अभिनय में नहीं, एहसास में झलकता था। दोनों की मुस्कानें मिलकर मानो एक चित्रकला बन जाती थीं — रंगों से नहीं, भावनाओं से रची हुई।

धर्मेन्द्र का जीवन संघर्ष से भरा था, पर उन्होंने कभी शिकायत नहीं की। लुधियाना के छोटे से गाँव साहनेवाल से निकलकर उन्होंने फ़िल्मी दुनिया का शिखर छू लिया — लेकिन उस ऊँचाई पर पहुँचकर भी ज़मीन नहीं छोड़ी। वह हमेशा कहते थे — "मैं आज भी वही गाँव का लड़का हूँ, जो अपनी माँ की रसोई की खुशबू नहीं भूला।" उनकी यह विनम्रता ही उन्हें 'लिजेंड' बनाती है। आज जब ग्लैमर की चकाचौंध में सादगी खो रही है, धर्मेन्द्र उस दौर के प्रतीक हैं जहाँ इंसानियत, इज़्ज़त और इमोशन का मेल होता था।

वह हिंदी सिनेमा के सिंहासन के शेर थे, जिनकी दहाड़ पर सिनेमाघरों में सीटियाँ बजती थीं। वह रोमांस के संगीतकार थे, जो बिना शब्दों के प्रेम गा जाते थे। वह एक्शन के आंधी थे, और करुणा के समुद्र। अगर दिलीप कुमार अभिनय के विद्यालय थे, तो धर्मेन्द्र उसकी सजीव पाठशाला। उनकी उपस्थिति वैसी थी जैसे सूरज की — जिसके बिना रोशनी अधूरी लगती है। धर्मेन्द्र सिर्फ़ देखे नहीं जाते थे, महसूस किए जाते थे। आज की पीढ़ी अगर सनी देओल या बॉबी देओल को देखती है, तो उनमें धर्मेन्द्र की परछाईं झलकती है। उनका असर सिनेमा की रगों में दौड़ता है — हर उस अभिनेता में जो अभिनय को भावनाओं की भाषा मानता है। वह हमारे सिनेमा के ध्रुवतारा हैं — जो दिशा दिखाता है, मार्ग रोशन करता है। धर्मेन्द्र सिर्फ़ फ़िल्मों का नाम नहीं, एक संवेदना हैं, जो भारतीय दिलों में हमेशा जीवित रहेगी।

समय चाहे आगे बढ़ जाए, तकनीक बदल जाए, पर एक बात सदा रहेगी — जब भी "यमला पगला दीवाना" गूँजेगा, जब भी "शोले" का वीरू स्क्रीन पर हँसेगा, हर दिल में धर्मेन्द्र मुस्कुराएँगे। वह सिर्फ़ अभिनेता नहीं, वह भारतीय सिनेमा का दिल हैं — जो हर पीढ़ी की धड़कनों में बसता रहेगा। "कुछ लोग जीकर नहीं, दिलों में बसकर अमर होते हैं — धर्मेन्द्र उन्हीं में से एक हैं।" आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, तो लगता है जैसे सूरज ढल गया हो, लेकिन सच में सूरज ढलता नहीं — वह सिर्फ़ दूसरी दुनिया को रोशन करने जाता है। धर्मेन्द्र भी चले गए हैं, पर वे हर उस खेत में हैं जहाँ कोई नौजवान ट्रैक्टर चला रहा है, हर उस बच्चे की आँखों में हैं जो "शोले" देखकर वीरू बनना चाहता है, हर उस प्रेम गीत में हैं जो आज भी गूँजता है — "मैं जट यमला पगला दीवाना..."

धर्मेन्द्र सिर्फ़ अभिनेता नहीं थे, वे भारतीय सिनेमा की आत्मा थे। वे एक पीढ़ी नहीं, कई पीढ़ियों के हीरो रहे — जो पर्दे पर गरजते थे और असल ज़िंदगी में झुकते थे। वे बरगद के उस पेड़ की तरह थे जिसकी छाँव में पूरा बॉलीवुड पला-बढ़ा। उनके बेटे और पोते उसी वटवृक्ष की शाखाएँ हैं। धर्मेन्द्र हमें यह सिखा गए कि असली नायक वह नहीं जो युद्ध जीतता है, बल्कि वह है जो दिल जीतता है। उन्होंने भारतीय सिनेमा को वीरता दी, संवेदना दी, और सबसे बढ़कर — इंसानियत दी।

विश्वसनीयता विपक्ष की सबसे बड़ी समस्या है

राजेश कुमार पासी

बिहार में करारी हार विपक्ष को हजम नहीं हो रही है। वो यह मानने को तैयार नहीं है कि २० साल के शासन के बाद भी नीतीश कुमार को जनता बदलने को तैयार नहीं है। वास्तव में जनता को कोई भी खुश नहीं कर सकता और ये बात जनता भी जानती है कि कोई भी राजनीतिक दल या नेता उसकी उम्मीदों पर पूरी तरह से खरा नहीं उतर सकता। भारत की जनता अब इतनी समझदार हो चुकी है कि वो सिर्फ बदलाव लाने के लिए ही वोट नहीं देती है। वो बदलाव लाने से पहले यह देखती है कि उसके सामने जो विकल्प है, क्या वो वर्तमान नेता या राजनीतिक दल से बेहतर है। नीतीश कुमार के विरोधी यह तो जानते हैं कि उनके प्रति जनता में नाराजगी है लेकिन वो यह नहीं देख पाते कि उनका विकल्प आज भी बिहार की जनता को दिखाई नहीं दे रहा है। भाजपा में ऐसा नेता बन नहीं पाया है, इसलिए भाजपा भी नीतीश कुमार के नेतृत्व को बदलने के लिए उचित समय का इंतजार कर रही है।

भाजपा नेतृत्व हमेशा जमीन से जुड़ा रहता है, इसलिए उससे बहुत कम गलतियां होती हैं। विपक्ष जनता से कट चुका है,इसलिए वो जमीनी हकीकत से दूर रहता है। वो अपनी रैलियों और रोड शो में आई भीड़ से ही अपनी जीत का अंदाजा लगा लेता है। भारत का विपक्ष इतना ज्यादा आलसी हो गया है कि वो इसी उम्मीद के साथ चुनाव में उतरता है कि जनता वर्तमान सत्ता से नाराज है, इसलिए बिना कुछ करे ही उसकी जीत होने वाली है। विपक्ष भी पूरी तरह से गलत नहीं है क्योंकि पहले राजनीति में यह रिवायत बन चुकी थी कि जनता बेशक सत्ता से खुश हो, इसके बावजूद वो सत्ता परिवर्तन कर देती थी। जनता दो प्रमुख दलों में सत्ता की अदलाबदली करती रहती थी। अब ये रिवायत खत्म हो चुकी है, अब जनता तब तक सत्ता परिवर्तन नहीं करती जब तक कि वो वर्तमान सत्ता से ज्यादा नाराज न हो। कांग्रेस ने केंद्र में दस साल तक लगातार शासन किया और अब भाजपा सरकार का तीसरा कार्यकाल चल रहा है। ऐसे ही गुजरात, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, केरल और कई राज्यों में लगातार एक ही पार्टी की सरकार चल रही है।

भारतीय राजनीति पिछले 15-२० सालों में बहुत बदल चुकी है। आम आदमी पार्टी ने लोकलुभावन वादे करके पहले दिल्ली और फिर पंजाब में सत्ता हासिल कर ली। ऐसा लगा कि लोकलुभावन वादे सत्ता हासिल करने का बहुत आसान रास्ता है। आम आदमी पार्टी ने इस रास्ते पर चलकर अन्य कई राज्यों में चुनाव लड़ा, लेकिन उसे सफलता हासिल नहीं हुई। इसकी वजह यह है कि सिर्फ लोकलुभावन वादे करके सत्ता हासिल करना संभव नहीं है, इसके लिए राजनीतिक दल की विश्वसनीयता और अनुकूल राजनीतिक परिस्थितियां भी होनी चाहिए। बिहार में महागठबंधन ने एनडीए से कहीं ज्यादा लोकलुभावन वादे किये थे, लेकिन उसे शर्मनाक हार मिली। विपक्ष की विश्वसनीयता जनता में लगभग खत्म हो चुकी है क्योंकि वो सिर्फ भाजपा और उसके सहयोगी दलों की बुराइयों का ढिंढोरा पीटकर वोट पाने की उम्मीद में रहता है। देश की गरीबी, बेरोजगारी और अन्य मुद्दों की बात करता है लेकिन देश की समस्याओं का उसके पास क्या समाधान है, ये नहीं बताता है। बिहार के चुनाव में तेजस्वी यादव ने वादा किया कि वो हर घर से एक व्यक्ति को सरकारी नौकरी देंगे, लेकिन कैसे देंगे, ये उन्हें पता नहीं था। २०२४ के लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने वादा किया कि हर महिला को एक लाख रुपए हर साल दिए जाएंगे, लेकिन कैसे दिए जाएंगे, ये कांग्रेस बता नहीं सकी। देखा जाए तो दोनों ही वादे इतने आकर्षक हैं कि विपक्ष को तीन चौथाई से भी बड़ा बहुमत दिला सकते थे लेकिन इतने बड़े वादे करने के बाद बिहार में महागठबंधन धराशायी हो गया। लोकसभा में कांग्रेस को जरूर उसके वादे का कुछ राज्यों में फायदा हुआ लेकिन उसकी कुछ दूसरी वजह भी थी। नीतीश सरकार पर आरोप लगाया गया कि उसने एक करोड़ महिलाओं को दस हजार की रिश्वत देकर चुनाव जीत लिया लेकिन तेजस्वी यादव ने तो सरकार बनते ही तीस हजार देने की बात कही, क्या वो रिश्वत नहीं थी। नीतीश कुमार तो दस हजार दे चुके थे, लेकिन तेजस्वी यादव तो देने वाले थे. इस तरह देखा जाए तो महिलाओं को ज्यादा फायदा तो तेजस्वी यादव को वोट देने से मिलने वाला था। बच्चों को सरकारी नौकरी मिलना तो बिहार की महिलाओं के लिए सबसे सुनहरा सपना है लेकिन महिलाओं ने उस सपने के पीछे जाना पसंद नहीं किया। सवाल यह है कि क्या महिलाएं नहीं चाहती हैं कि उनके बच्चों को सरकारी नौकरी मिले। सच तो यह है कि बिहार में हर महिला का ये सपना हो सकता है लेकिन उसे भरोसा नहीं है कि ये सपना तेजस्वी यादव पूरा कर सकते हैं।

मोदी के कट्टर आलोचक और भाजपा के कट्टर विरोधी योगेंद्र यादव कहते हैं कि विपक्ष हमेशा नकारात्मक बातें करता है जबकि मोदी की बातों में 80% बातें सकारात्मक होती हैं। वो हैरानी जताते हुए कहते हैं कि विपक्ष को देश में कुछ भी अच्छा होता हुआ नहीं दिखता है। वैसे देखा जाए तो योगेंद्र यादव के बारे में भी यही कहा जा सकता है कि उन्हें भाजपा और मोदी में कुछ भी अच्छा नहीं दिखता है। बिहार में उनके सारे आंकलन धरे रह गए तो उनके मुंह से कुछ सच बाहर निकल आया। वास्तव में योगेंद्र यादव जैसे लोग भी विपक्ष की बड़ी कमजोरी हैं, जो विपक्ष के नकारात्मक एजेंडे को आगे बढ़ाते हैं। आज योगेंद्र यादव कह रहे हैं कि एसआईआर कोई चुनावी मुद्दा ही नहीं था, उस पर विपक्ष को मेहनत नहीं करनी चाहिए थी लेकिन चुनाव से पहले उन्हें यह बहुत बड़ा मुद्दा दिखाई दे रहा था।

कांग्रेस को खुद से ही एक बात सीखने की जरूरत है कि वो क्यों गांधी परिवार की गुलाम बन कर रह गई है। क्यों राहुल गांधी के बार-बार असफल होने के बावजूद वो उनके पीछे चल रही है। कांग्रेस जानती है कि गांधी परिवार उसकी मजबूरी है, अगर गांधी परिवार कांग्रेस से अलग हो गया तो कांग्रेस खत्म हो जाएगी। राहुल गांधी के सिर पर कितनी भी असफलताएं डाली जाएं लेकिन सच यही है कि वो ही कांग्रेस की आखिरी उम्मीद हैं। ऐसे ही मोदी इस समय देश की मजबूरी बन चुके हैं, क्योंकि उनसे बेहतर नेता इस समय देश में मौजूद नहीं है। भाजपा ही एकमात्र ऐसी पार्टी है, जो देश को एक स्थायी सरकार दे सकती है। जो लोग भाजपा या विपक्ष के कट्टर समर्थक हैं, वो क्या सोचते हैं, ये महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि जो लोग गुण-दोष के आधार पर अपना वोट डालते हैं, उनके सामने मोदी और भाजपा के अलावा क्या विकल्प है। राहुल गांधी कांग्रेस की मजबूरी हैं लेकिन देश की मजबूरी नहीं हैं। देश की मजबूरी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बन चुके हैं. उनसे ज्यादा विश्वसनीय और लोकप्रिय चेहरा इस समय भारतीय राजनीति में कोई नहीं है। कांग्रेस की समस्या यह है कि उसके पास राहुल गांधी से ज्यादा विश्वसनीय और लोकप्रिय चेहरा नहीं है जिसे सामने रखकर वो पूरे देश में जनता से वोट मांग सकती है। समस्या यह है कि जनता राहुल गांधी के चेहरे पर वोट देने को तैयार नहीं है। भाजपा को ऐसी कोई समस्या नहीं है. जब भी मोदी राजनीति को अलविदा कहेंगे, तब भाजपा जिस भी चेहरे को आगे करेगी, उसे जनता का विश्वास मिल जाएगा। विपक्ष के लिए बड़ी समस्या यह है कि मोदी देश को अपना विकल्प देकर जाएंगे. वो इसके लिए नेताओं को तैयार कर रहे हैं।

राहुल गांधी सिर्फ कांग्रेस की समस्या नहीं हैं बल्कि वो पूरे विपक्ष की समस्या हैं क्योंकि उनके अलावा विपक्ष के पास प्रधानमंत्री का कोई और चेहरा नहीं है। वैसे तो विपक्ष किसी को भी प्रधानमंत्री का चेहरा बना सकता है. इसके लिए उसके पास कई अच्छे नेता हैं। समस्या यह है कि विपक्ष के पास ऐसा कोई नेता नहीं है जिसके नाम पर पूरे देश की जनता उसे वोट दे। इसकी वजह यह है कि कांग्रेस के अलावा अन्य सभी विपक्षी दल सिर्फ एक राज्य तक सीमित हैं। बसपा, आम आदमी पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टियां एक से ज्यादा राज्यों में मौजूद हैं लेकिन ये दल इतने कमजोर हो चुके हैं कि विपक्ष का नेतृत्व नहीं कर सकते। एक तरह से ये दल तो अपने अस्तित्व की जंग लड़ रहे हैं। विपक्ष कांग्रेस की कितनी भी आलोचना करे, लेकिन सच यह है कि कांग्रेस उसकी मजबूरी है और कांग्रेस की मजबूरी राहुल गांधी हैं। विपक्ष के अन्य दल राहुल गांधी को अपना नेता मानने को तैयार नहीं हैं इसलिए उनमें नेतृत्व की जंग जारी है। विपक्ष के बड़े नेताओं में ममता बनर्जी, स्टालिन और अखिलेश यादव का नाम लिया जा सकता है लेकिन सवाल यह है कि क्या उनके नाम पर पूरे देश में विपक्ष वोट मांग सकता है। ये नेता अपने राज्यों में तो एक विश्वसनीय और लोकप्रिय चेहरा हैं लेकिन राज्य से बाहर निकलते ही इनका प्रभाव खत्म हो जाता है। विपक्ष के नेताओं में आपसी संघर्ष भी इतना ज्यादा है कि कोई किसी को अपना नेता मानने को तैयार नहीं है।

सवाल यह है कि इस विपक्ष पर देश की जनता कैसे भरोसा कर सकती है। अगर ये दल गठबंधन बनाकर कोई वादा करते हैं तो उसकी जवाबदेही किसकी होगी, यह तय नहीं है। भारत की जनता में राजनीतिक जागरूकता और समझदारी इतनी ज्यादा बढ़ चुकी है कि उसे बरगलाया नहीं जा सकता। २०२४ का चुनाव लड़ने से पहले विपक्ष ने जो गठबंधन बनाया था, आज वो कहां है। चुनाव के बाद इस गठबंधन की किसी बैठक की जानकारी नहीं है। इसके पदाधिकारी कौन है, इसका कार्यालय कहां है, कोई नहीं जानता। दूसरी तरफ एनडीए लगातार मजबूत होता जा रहा है, भाजपा और इसके घटक दलों में गजब का तालमेल दिखाई दे रहा है। विपक्ष की सबसे बड़ी समस्या विश्वसनीयता बन चुकी है और इससे छुटकारा पाना आसान होने वाला नहीं है।

महिलाओं के खिलाफ हिंसा उन्मूलन दिवस- 25 नवम्बर

महिलाओं को सुरक्षित माहौल देना सामूहिक जिम्मेदारी

वीरेन्द्र भाटी मंगल

महिलाओं के खिलाफ हिंसा उन्मूलन दिवस केवल एक औपचारिक दिन नहीं बल्कि वह सामाजिक चेतना का दिवस है जो हमें याद दिलाता है कि महिलाएं समाज की आधारशिला होते हुए भी आज अपने सबसे बुनियादी अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं। महिलाओं की प्रगति, क्षमता और उपलब्धियों के बीच हिंसा, भय और भेदभाव की छाया अभी भी बड़ी चुनौती के रूप में मौजूद है। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं का योगदान अतुलनीय है। शिक्षा, विज्ञान, चिकित्सा, राजनीति, प्रशासन, कला, उद्योग, खेल प्रत्येक क्षेत्र में भारतीय महिला ने अपनी प्रतिभा सिद्ध की है। आज की महिला आत्मनिर्भर है, निर्णय लेने में सक्षम है और घर से बाहर निकलकर समाज निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रही है परंतु इस प्रगति के समानांतर महिलाओं पर हिंसा की वास्तविक तस्वीर अत्यंत चिंताजनक है।

वर्तमान दौर की उपलब्धियों के बावजूद महिलाओं के सामने चुनौतियां कम नहीं हुई हैं। यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, कार्यस्थल पर शोषण, दहेज प्रताड़ना और सार्वजनिक स्थानों पर असुरक्षा ये समस्याएँ लगातार सामने आती रहती हैं। रिपोर्टों के अनुसार देश में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में कमी नहीं बल्कि कई क्षेत्रों में वृद्धि देखी गई है। जहां शहरों और शिक्षित परिवारों में महिलाएं अधिकारों को कुछ हद तक प्राप्त कर रही हैं, वहीं ग्रामीण, पिछड़े, आदिवासी और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं की स्थिति आज भी बेहद खराब है।

कानून बने हैं, योजनाएं बनी हैं लेकिन असल लाभ बहुत सीमित महिलाओं तक ही पहुंच पाता है। अशिक्षा, गरीबी, सामाजिक रूढ़ियाँ और जागरूकता की कमी उन्हें अपने ही अधिकारों से दूर रखती हैं। महिलाएं आज भी हिंसा का सामना क्यों कर रही हैं? इसका सबसे बड़ा कारण है कानूनों की जानकारी का अभाव, शिकायत दर्ज करवाने में सामाजिक दबाव, पुलिस-प्रशासन में संवेदनशीलता की कमी, न्याय प्रक्रिया का लंबा और जटिल होना, समाज में गहरी जमी पुरुषवादी सोच आदि। कानून तभी प्रभावी होते हैं जब उनका कठोरता और निष्पक्षता के साथ क्रियान्वयन हो। आवश्यक है कि पुलिस, न्यायालय और प्रशासन महिलाओं के प्रति अधिक संवेदनशील, तत्पर और जवाबदेह हों।

सही मायने में समाज की मानसिकता बदले बिना हिंसा समाप्त नहीं होगी महिला हिंसा केवल अपराध नहीं, बल्कि मानसिकता का रोग है। इसे समाप्त करने के लिए आवश्यक है परिवार में बचपन से ही 'लड़का-लड़की बराबर' का संस्कार हो, स्कूलों और कॉलेजों में संवेदनशीलता आधारित शिक्षा लागू हो, मीडिया और सोशल प्लेटफॉर्म्स पर सम्मानजनक प्रस्तुति, महिलाओं के प्रति सकारात्मक सामाजिक व्यवहार, पुरुषों में जागरूकता और साझा जिम्मेदारी के साथ महिलाएं जब-जब अवसर पाती हैं, वे प्रगति की राह पर आगे बढ़ती हैं। समाज को यह स्वीकार करना होगा कि महिला कमजोर नहीं, अवसरों से वंचित की गई है।

महिला को सुरक्षित माहौल देना समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। एक सुरक्षित समाज वही है जहाँ महिलाएं निर्भय होकर घर से निकल सकें, कार्यस्थल पर सम्मान पाएं और अपने सपनों को पूरा करने का अधिकार हासिल करें। महिलाओं को हिंसा, उत्पीड़न और अत्याचार से मुक्त वातावरण देना समाज का कर्तव्य ही नहीं, बल्कि उसकी सभ्यता का मापदंड भी है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा उन्मूलन दिवस हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि महिलाओं की सुरक्षा, सम्मान और समानता मात्र आदर्श नहीं बल्कि आवश्यक वास्तविकता है। भारत की आधी आबादी यदि सुरक्षित, शिक्षित और सशक्त होगी, तभी राष्ट्र सशक्त होगा। समाज, प्रशासन, शिक्षा जगत, मीडिया, परिवार सभी को मिलकर वह वातावरण तैयार करना होगा जिसमें महिला हिंसा का अंत और महिला सम्मान का आरंभ हो सके।

ऑल इंडिया रेडियो के सर्वभाषा कवि सम्मेलन 2026 में डॉ. गीतांजलि अरोरा का चयन

नई दिल्ली, 24 नवम्बर।

ऑल इंडिया रेडियो द्वारा गणतंत्र दिवस के अवसर पर हर वर्ष आयोजित किए जाने वाले विश्व के सबसे बड़े सर्वभाषा कवि सम्मेलन के 70वें संस्करण में इस बार दिल्ली की प्रसिद्ध साहित्यकार, कवयित्री एवं गीतांजलि काव्य प्रसार मंच दिल्ली की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. गीतांजलि नीरज अरोरा 'गीत' का चयन डोगरी भाषा के अनुवादक कवि के रूप में किया गया है। 22 भारतीय भाषाओं के प्रतिनिधित्व वाला यह प्रतिष्ठित मंच साहित्य जगत में विशेष सम्मान माना जाता है।

डॉ. गीतांजलि के चयन पर साहित्यिक और सांस्कृतिक जगत में खुशी की लहर है। धरा धाम इंटरनेशनल के प्रमुख एवं मानद कुलपति डॉ. सौरभ पांडे, मंच के सलाहकार, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ.प्रेम भारद्वाज ज्ञानभिक्षु ,वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर एवं अंतरराष्ट्रीय लेखक–पत्रकार डॉ. शंभू पंवार, कला भारती फाउंडेशन की प्रमुख ममता सोनी, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सविता चड्ढा, शिक्षाविद एवं साहित्यकार डॉ. पुष्पा जोशी, डॉ. अंजु क्वात्रा, डी.पी. शर्मा, डॉ. मंजू वर्मा, पुनीता सिंह, मनोज कामदेव, जयवीर सिंह अत्री, भाविका अरोड़ा, अनुराग स्वामी, आयुषी

गौतम, जतिन अरोरा, डॉ. सुमन मोहिनी, डॉ. सूक्ष्मता महाजन, सकून मित्तल, सरिता विजय शर्मा और पूनम माटिया सहित अनेक साहित्यप्रेमियों ने हर्ष व्यक्त करते हुए उन्हें हार्दिक बधाइयाँ दीं।

जो बच्चे छोटी उम्र में ही फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और व्हाट्सएप जैसे एप्स से जुड़ जाते हैं, वे वास्तविक दुनिया से कटते जा रहे हैं।

विजय गर्ग

यह समय अभिभावकों के लिए एक बड़ी चुनौती लेकर आया है। बच्चों को मोबाइल फ़ोन देकर, उन्हें अनजाने में ही खतरनाक कंटेंट की दुनिया में धकेला जा रहा है। हर अभिभावक को अपने बच्चों के फ़ोन में ज़रूरी कंटेंट सेफ्टी सेटिंग्स ज़रूर सेट करनी चाहिए। साथ ही, उन्हें अपने बच्चों से खुलकर बात करनी चाहिए कि सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाली ज़िंदगी हमेशा असली नहीं होती।

डॉ. विजय गर्ग

आज के डिजिटल युग में, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सोशल मीडिया हमारी ज़िंदगी का एक हिस्सा बन गया है। हालाँकि इन उपकरणों का इस्तेमाल सूचना, मनोरंजन और शिक्षा के लिए किया जा सकता है, लेकिन ये बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा ख़तरा भी बन गए हैं। आजकल, छोटी उम्र में ही फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट और व्हाट्सएप जैसे ऐप्स से जुड़े बच्चे अपनी ज़िंदगी से ज़्यादा दूसरों की ज़िंदगी से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं।

तुलनात्मक दौड़

आजकल बच्चों में एक नई मानसिकता विकसित हो रही है और वह है तुलना की होड़। जिस भी बच्चे को सोशल मीडिया पर ज़्यादा फ़ॉलोअर्स या लाइक्स मिलते हैं, उसे सफल माना जाता है। जो बच्चा सोशल मीडिया से दूर रहता है, उसे लूज़र कहा जाता है। यह सोच न सिर्फ़ कुंठा पैदा करती है, बल्कि अहंकार और अवसाद जैसी नकारात्मक भावनाओं को भी जन्म देती है। सोशल मीडिया के ज़रिए बच्चे अपनी वास्तविकता से दूर होते जा रहे हैं। वे अपनी असली खुशियों की बजाय कैमरे के सामने दिखावा करने में ज़्यादा विश्वास करने लगे हैं। दिखावे की यह मानसिकता उनकी मानसिक शक्ति को कमज़ोर कर रही है।

माता-पिता की ज़िम्मेदारी

यह समय अभिभावकों के लिए एक बड़ी चुनौती लेकर आया है। बच्चों को मोबाइल फ़ोन देकर, उन्हें अनजाने में ही खतरनाक कंटेंट की दुनिया में धकेला जा रहा है। हर अभिभावक को अपने बच्चों के फ़ोन में ज़रूरी कंटेंट सेफ्टी सेटिंग्स ज़रूर सेट करनी चाहिए। साथ ही, उन्हें अपने बच्चों से खुलकर बात करनी चाहिए कि सोशल मीडिया पर दिखाई जाने वाली ज़िंदगी हमेशा असली नहीं होती। बच्चों को यह सिखाने की ज़रूरत है कि असल में प्रगति नहीं, बल्कि तुलना महत्वपूर्ण है। बच्चों को उनके आत्म-विकास और खुशी की ओर मोड़ना ही मानसिक स्वास्थ्य की सबसे बड़ी दवा है।

स्कूली शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता

आज के स्कूलों में शैक्षणिक शिक्षा तो दी जा रही है, लेकिन मानसिक शिक्षा का अभाव है। नैतिक विज्ञान जैसे विषय केवल पाठ्यपुस्तकों के स्तर तक ही सीमित रह गए हैं। बच्चों को मानसिक रूप से मज़बूत कैसे बनें, ईर्ष्या, क्रोध और तनाव आदि से कैसे निपटें, यह नहीं सिखाया जा रहा है। स्कूलों में एक नया विषय अनिवार्य किया जाना चाहिए और वह विषय है मानसिक शक्ति और सकारात्मक सोच की शिक्षा, जिसके माध्यम से बच्चों को धैर्य, आत्मविश्वास, आपसी सहयोग और आत्म-संयम की शिक्षा दी जानी चाहिए। यह विषय उन्हें जीवन की चुनौतियों से लड़ने की शक्ति और क्षमता प्रदान करेगा।

सामाजिक उत्तरदायित्व को समझने की आवश्यकता

न केवल अभिभावकों और शिक्षकों को, बल्कि पूरे समाज को इस मुद्दे पर ज़िम्मेदारी से सोचना चाहिए। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म को भी अपनी भूमिका निभानी चाहिए और बच्चों के लिए उपयुक्त सामग्री और समय-सीमा निर्धारित करने की आवश्यकता है। इसी प्रकार, सामाजिक स्तर पर परामर्श शिविर, कार्यशालाएँ और डिजिटल डिटॉक्स कार्यक्रम आदि आयोजित किए जाने चाहिए ताकि बच्चे अपने मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को समझ सकें।

बुद्धिमानी से उपयोग करें.

हमें यह समझना होगा कि सोशल मीडिया के युग को रोका तो नहीं जा सकता, लेकिन इसका समझदारी से इस्तेमाल ज़रूर सिखाया जा सकता है। बच्चों को यह समझाना ज़रूरी है कि असली खुशी लाइक्स या फॉलोअर्स में नहीं, बल्कि खुद से संतुष्ट होने में है। अगर हम आज बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखेंगे, तो कल का समाज असंतुलित और असुरक्षित होगा। इसलिए, माता-पिता, शिक्षकों और स्कूल प्रशासकों को मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर बच्चा न केवल समझदार हो, बल्कि मानसिक रूप से भी मज़बूत हो।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

बड़वा गाँव : हरियाणा की 'छोटी काशी'

परंपरा, अध्यात्म और संस्कृति से धरा एक जीवंत ग्राम

बड़वा, हरियाणा के भिवानी ज़िले का एक ऐसा प्राचीन और गौरवशाली गाँव है, जिसके कण–कण में इतिहास, अध्यात्म और संस्कृति रच-बस गए हैं। गाँव के उत्तर-पूर्व में हिसार, दक्षिण में सीवानी कस्बा, उत्तर में चौधरीवास, पूर्व में रावतखेड़ा तथा पश्चिम में नलोई और गावर गाँव स्थित हैं। इसका पिन कोड १२७०४५ है। अपनी विशिष्ट संस्कृति, मंदिरों की बहुलता और आस्थापूर्ण जीवन के कारण बड़वा को हरियाणा की 'छोटी काशी' कहा जाता है। यहाँ का वातावरण इतना सौम्य, सादा और मानवीय है कि कोई भी आगंतुक गाँव में प्रवेश करते ही आत्मिक शांति का अनुभव करता है।

यह गाँव हरियाणवी और राजस्थानी संस्कृति के सुंदर संगम का अद्भुत प्रमाण है। यहाँ के लोग सहज, शरीफ़, धार्मिक प्रवृत्ति के और अत्यंत विनम्र स्वभाव के हैं। सरल जीवन और ऊँचे विचार इस समुदाय की पहचान हैं। जीवन को त्यौहार की तरह जीने की कला, हर पल में आनंद ढूँढ लेने का दृष्टिकोण और मिल-जुलकर रहने की परंपरा इस गाँव की सामाजिक आत्मा है। बड़वा का सामुदायिक माहौल इतना सौहार्दपूर्ण है कि यह गाँव केवल एक बस्ती नहीं, बल्कि एक विस्तृत परिवार की तरह दिखाई देता है।

गाँव के उत्तर भाग में स्थित माँ दुर्गा मंदिर नवरात्रों का प्रमुख केंद्र है। नवरात्रों के दिनों में यहाँ प्रतिदिन सवा मणि भोग का वितरण भक्तिभाव और परंपरा का अनुपम उदाहरण है। मंदिर में उमड़ने वाली श्रद्धा, रोज़ाना कीर्तन और सामूहिक सहभागिता गाँव की आध्यात्मिकता को सजीव करती है। चारों दिशाओं में फैले मंदिरों का विस्तार बड़वा की धार्मिक विरासत को और भी उजागर करता है। उत्तर दिशा में पुराना ठाकुर जी मंदिर, श्रीकृष्ण मंदिर, शिव मंदिर, हनुमान मंदिर, पक्का (केसर) जोहड़, दुर्गा मंदिर और सती दादी मंदिर स्थित हैं। दक्षिण दिशा में बाबा रामदेव मंदिर, बाबा गोगा पीर मंदिर, विश्वकर्मा मंदिर, गाँव का स्टेडियम और पशु चिकित्सालय है। पूर्व दिशा में शनि देव मंदिर, निर्माणाधीन श्री श्याम मंदिर तथा कई छोटे मंदिरों की शृंखला है। पश्चिम दिशा में गोरी दादी मंदिर और झांग आश्रम गाँव की पवित्र पहचान को और भी गहरा करते हैं।

बड़वा की प्राचीनता उसकी हवेलियों से झलकती है। यहाँ की २० से अधिक भव्य और कलात्मक हवेलियाँ गाँव के सुनहरे अतीत की प्रतिनिधि हैं। इन्हें देखकर स्पष्ट होता है कि यह गाँव कभी समृद्ध व्यापारिक, सांस्कृतिक और सामाजिक केंद्र रहा होगा। पुराने समय में यहाँ कई प्रतिष्ठित और बड़े सेठ रहते थे, जिनमें श्री परशुराम सेठ और श्री लायक राम सेठ के नाम विशेष सम्मान और श्रद्धा के साथ स्मरण किए जाते हैं। हवेलियों की विशालता, स्थापत्य कला और परिवारों की विरासत आज भी इस गाँव की गरिमा को उजागर करती हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी बड़वा अग्रणी है। गाँव में १०+२ राजकीय बालक विद्यालय, राजकीय बालिका उच्च विद्यालय, शिवालिक हाई स्कूल, टैगोर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, दयानंद हाई स्कूल तथा उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला टैगोर कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन स्थित है। यह शैक्षणिक विस्तार ग्रामीण परिवेश में शिक्षा के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त करता है। गाँव के मध्य में अवस्थित रामलीला मैदान सांस्कृतिक चेतना का केंद्र है, जहाँ हर वर्ष अत्यंत विधि-विधान और भक्ति के साथ रामलीला का मंचन किया जाता है। वर्षभर सत्संग-कीर्तन का सिलसिला गाँव की आध्यात्मिक ऊर्जा को निरंतर सक्रिय बनाए रखता है।

गौशाला का संचालन ग्रामीणों के सहयोग, दान और सेवा-भाव पर आधारित है, जो बड़वा के सामुदायिक संस्कारों का सच्चा प्रतीक है। गाँव के भीतर व आसपास के धार्मिक स्थलों में बाबा कमलगिरी की कुटिया, गुरु जाम्बेश्वर मंदिर, जमानी बुआ स्थित श्रीकृष्ण मंदिर, मुख्य बाज़ार का श्री रघुनाथ मंदिर और रोषड़ा (स्थानीय उच्चारण–रोहसड़ा) जोहड़ के समीप स्थित भभूता मंदिर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दक्षिण दिशा में सीवानी मार्ग पर स्थित काली माई मंदिर (महावतार धाम) अपनी दिव्य ऊर्जा और आस्था के कारण दूर-दूर तक प्रसिद्ध है।

पिछले बीस वर्षों से सतत साहित्य-साधना में रत तथा पच्चीस से अधिक कृतियों के रचनाकार, गाँव के युवा साहित्यकार एवं सामाजिक चिंतक दम्पति — डॉ. सत्यवान सौरभ और डॉ. प्रियंका सौरभ — के अनुसार बड़वा केवल एक भौगोलिक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना, परंपरा, अध्यात्म और आधुनिकता के संतुलन का जीवंत उदाहरण है। उनके शब्दों में, "बड़वा हरियाणा के उन विरल गाँवों में से है, जहाँ संस्कृति केवल संरक्षित नहीं, बल्कि प्रतिदिन जी जाती है।"

इसी सांस्कृतिक जीवंतता का प्रमाण है कि पिछले ० वर्षों से रोषड़ा (स्थानीय उच्चारण–रोहसड़ा) जोहड़ पर कलयुग के अवतार माने जाने वाले 'रुन्चे वाले बाबा रामदेव महाराज' का विशाल मेला और खेल प्रतियोगिताएँ निरंतर आयोजित होती आ रही हैं। यह मेला न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि यह खेल भावना, सामाजिक सहभागिता और सामुदायिक एकजुटता का भी महत्त्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। इसी प्रकार गोगा पीर मंदिर प्रांगण में आयोजित डफ प्रतियोगिता हर वर्ष क्षेत्रीय लोक-संस्कृति को जीवंत करती है, जिसमें दूर-दराज़ के कलाकार और श्रद्धालु बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

बड़वा की पहचान केवल मंदिरों, मेलों और परंपराओं से ही नहीं बनती, बल्कि यहाँ की जनता के संस्कार, व्यवहार, शिक्षा-स्तर और सरलता भी इसे विशेष बनाती है। लोग अत्यंत शालीन, शिक्षित, व्यवस्थित और आपसी सहयोग की भावना से परिपूर्ण हैं। यहाँ की सामाजिक एकता, पारिवारिक संस्कृति और आपसी सम्मान का वातावरण एक आदर्श ग्रामीण जीवन की छवि प्रस्तुत करता है।

अंततः, बड़वा हरियाणा की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक पहचान का एक उज्ज्वल प्रतीक है — एक ऐसा गाँव, जहाँ परंपरा और आधुनिकता सहज संतुलन में सह-अस्तित्व रखती हैं; जहाँ धर्म, लोक-जीवन, शिक्षा और सामाजिक सौहार्द एक ही धारा में प्रवाहित होते हैं; और जहाँ हर आने वाला व्यक्ति अपनत्व और शांति का अनुभव करता है।

बड़वा गाँव एक नज़र में

हरियाणा का प्राचीन और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध गाँव

'छोटी काशी' के नाम से प्रसिद्ध

२० से अधिक भव्य हवेलियाँ — 'हवेलियों का गाँव'

प्रत्येक दिशा में प्रतिष्ठित मंदिरों का विशाल विस्तार

माँ दुर्गा मंदिर में नवरात्रों के दौरान प्रतिदिन सवा मणि भोग

पिछले ० वर्षों से रोषड़ा (रोहसड़ा) जोहड़ पर बाबा रामदेव महाराज का विशाल मेला

गोगा पीर मंदिर प्रांगण में वार्षिक डफ प्रतियोगिता

उत्कृष्ट शैक्षणिक संस्थानः १०+२ विद्यालय, हाई स्कूल, टैगोर कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन

साहित्यकार दम्पति डॉ. सत्यवान सौरभ एवं डॉ. प्रियंका सौरभ का प्रेरक योगदान

कला के आयाम

डॉ विजय गर्ग

जब भी हम कला और उसके कलाकार के बारे में सोचते हैं, हमारे मन में कई छवियां उभरने लगती हैं। हमें कला के विभिन्न रूप अनूठे, उत्कृष्ट और विशिष्ट लगने लगते हैं, फिर चाहे वह चित्रकारी, गीत, गायन, लेखन, नृत्य, नाटक जैसी अनगिनत विधाएं हों । कलाकार की मेहनत और उसके समर्पण भाव से जीवंत हुई हर कृति हमें चकित कर देती है । वास्तविक या सपनीली दुनिया को कैनवास पर या मंच पर उकेरता या रेखांकित करता कलाकार जब अपनी नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति सजग रहता है, तब वह बिना किसी हथियार और बल के अपनी संवेदनाओं की प्रभावी अभिव्यक्ति के माध्यम से समाज में सकारात्मक क्रांति लाने में सक्षम हो जाता है। वह कभी शोषितों की आवाज बनकर न्याय रंगों से पूरा कैनवास भर देता है, तो कभी सभागार कंपित जाता है उसकी ऊंची पुकार 1

यह कला है या जिद है कलाकार की कि वह निस्वार्थ भाव से चाहता है दुनिया को सुंदर रंगों से भर देना, मीठी सुरीली तान में सबको एक सुर में बांधकर । देखना चाहता है सबको एक साथ हंसते-मुस्कुराते। वह लिखता है लगातार इस उम्मीद से कि किसी दिन उम्मीदों से भरे शब्द कागज के 'पन्नों से निकलकर उसके सामने जीवंत रूप में समाज में घुल-मिल जाएंगे। संवेदनाओं से भरा कलाकार मनुष्यता के उजले रंगों को संभाले रखने के लिए किसी सिपाही की तरह हमेशा डटा रहता है । यही कारण है कि कलाकार किसी क्षेत्र या वर्ग का नहीं होता, वह सबका होता है और सबको अपना मानता है। आम इंसान भी अपने जीवन की जटिलताओं में व्यस्त होते हुए कला में सुकून पाता है ।

कलाकार की यह संवेदनाओं से भरी दुनिया थोड़ी ज्यादा भली, स्वस्थ और सुरक्षित प्रतीत होती है। लगने

लगता है कि अगर मनुष्य अपने सामान्य जीवन में भी इतना ठहराव ला सके कि उसका हर कदम और निर्णय गहराई लिए हो, तो आम इंसान की दुनिया भी किसी अर्थपूर्ण कृति की तरह ही सुंदर और स्वस्थ नजर आने लगेगी। कलाकार और उसकी दुनिया को खिन्न कर देते हैं सांप्रदायिकता, क्रोध, भ्रष्टाचार और शोषण जैसे दुखद प्रसंग। आम इंसान और कलाकार की दुनिया की भिन्नता को खोजने की कोशिश करें, तो मालूम पड़ता है कि किसी भी सृजन के लिए बहुत अधिक समर्पण, अध्ययन और मेहनत लगती है । अपने ही बनाए पर बार-बार पुनर्विचार करना होता है, लेकिन क्या इसे भी भिन्नता माना जा सकता है ? आम जीवन के हर विचार को जो व्यक्ति गहराई से डूबकर और

सबके हितों में सोचते हुए निर्णय लेता है, उसे भी तो कलाकार ही कहा जा सकता है। जो खुद के और दूसरों के जीवन में मधुर संगीत घोल दे, सही के पक्ष में हमेशा खड़ा रहे और गलत को गलत कहने का साहस रख सके, वह भी तो कलाकार ही है ।

हर इंसान को कला और कलाकार का संसार कभी न कभी आकर्षित जरूर करता है, लेकिन यह मत हावी होने लगता है। कि आम इंसान, जिसका जीवन मूलभूत जरूरतों को पूरा करने में गुजर रहा है, उसका विषय कला कैसे हो सकता है। हां, अगर हुनर के जरिए अपने जीवन की आवश्यक जरूरतें पूरी होने लगें, व्यवसाय के रूप में परिवर्तित किया जा सके या फिर बेहद प्रतिभाशाली होने के कारण आर्थिक स्थिति मजबूत बन जाए या फिर कोई अन्य आय का जरिया हो, तो फिर सोचा जा सकता है। इस विचारधारा के विपरीत, अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी अक्सर कला तो जन्म ही वही लेती है, जहां विषमताओं के बाद भी थोड़ी-सी नमी बची रहती है, जो किसी व्यक्ति के भीतर की अच्छाई को लगातार सींचती रहती है। समानुभूति के बिना किसी भी कला को उकेरना कठिन है । यही कारण है कि हर कृति में कलाकार के जीवन के अलग-अलग पड़ाव की यात्रा भी होने लगती है । जिसने जितनी गहराई में उतरकर जीवन का अनुभव किया है, उतनी ही कुशलता उसके काम में नजर आने लगती है।

संभव है कि कला के माध्यम से हर इंसान के जीवन की आर्थिक स्थिति मजबूत न हो सके, पर यह भी निश्चित है कि कलात्मक सोच हमारे जीवन को हर परिस्थिति में निखार देती है। कैनवास, मंच, कागज पर उकेरने से कहीं पहले कला का उद्गम हमारे मन में होता है, हमारे विचारों में । कलात्मक सोच हमें मजबूत, निष्पक्ष और स्वस्थ बनाती है। यह हमारे जीवन के लगभग हर पक्ष पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ती है। कलात्मक सोच के माध्यम से हम विकर्षणों से दूर, वापस अपने मूल स्वभाव पर लौटते हैं। हम चीजों को गहराई से समझने लगते हैं। अपनी इंद्रियों का

सही अर्थों में उपयोग कर रहे होते हैं। यह हमें कई बंधनों से मुक्त कर देती है। हम खुलकर प्यार कर पाते हैं, खुलकर रोते हैं, खुद को अभिव्यक्त करने का साहस जुटा पाते हैं- उन वास्तविक भावनाओं को सहज रूप से स्वीकार कर पाते हैं, जिन्हें अक्सर छिपा लिया जाता रहा है । सबसे सुंदर और बहुमूल्य तोहफा जो कला हमें देती है, वह है एक अवसर, जब हम स्वार्थ पूर्ति के लिए बनी सभी रेखाएं मिटाकर एक साथ बैठते हैं, एक दिशा में देखते हैं, महसूस करते हैं, सीखते हैं, आनंदित होते हैं और आभार व्यक्त करते हैं कि सतही उजली दुनिया में भी हमने जमीनी संवेदनाओं के लिए छोटा सा कोना सुरक्षित कर रखा

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कब और कैसे करना है

डॉ विजय गर्ग

कक्षा तीन से कृत्रिम बुद्धिमत्ता की पढ़ाई अनिवार्य बनाना जल्दबाजी ही होगी। यह आयु बच्चों के संज्ञानात्मक, मानसिक और बौद्धिक विकास की है। स्कूलों में बालसुलभ शैक्षणिक परिवेश हो जहां अनुशासन के बीच उनमें सरलता, जिज्ञासा व खिलंदड़पन बना रहे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) अब यहां आ चुकी है, और ऐसा लगता है कि आपको और मुझे, आज नहीं तो कल, इससे समझौता करना ही पड़ेगा। फिर भी, यह बात मुझे परेशान करती है कि कक्षा तीन (मुश्किल से नौ साल का बच्चा) के छात्रों को भी एआई एक अनिवार्य विषय के रूप में अब सीखना पड़ेगा। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) ने फैसला लिया है कि 2026-27 के शैक्षणिक सत्र से कक्षा तीन से आगे के सभी छात्रों के लिए एआई पढ़ाया जाए।

इस कदम के अर्थ को गहराई से समझने के लिए, या जिसको शिक्षा मंत्रालय 'आधुनिक इतिहास में महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम सुधारों में से एक' ठहरा रहा है, इस पर, जीवन की लय, तकनीक, संस्कृति और शिक्षा शास्त्र से संबंधित दो मुद्दों पर विचार करना ज़रूरी हो जाता है। शुरुआत करते हुए, यह समझना ज़रूरी है कि इस अति-आधुनिक समय में, हम तकनीकी नवाचार के हर नए हिस्से को अंगीकार करने के लिए लगभग मजबूर हैं - और अक्सर, बिना जरा सी भी अस्पष्टता के। हालांकि, यह बाध्यता अक्सर एक प्रकार के प्रलोभन में बदल जाती है। तीन साल के बच्चों को भी स्मार्टफोन से 'खेलते' देखना कोई असामान्य बात नहीं है; और स्क्रीन की इस लत के परिणाम में उसके लिए खुले, विशाल आकाश को निहारना, किसी पेड़ को देखना, किसी पक्षी को उड़ते हुए देखकर रोमांचित होना या किसी फूल और तितली की लयबद्ध अठखेली को महसूस करना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। जी हां, तकनीकी उपकरण मानो उनकी आत्मा में घर कर चुके हैं।

चूंकि हम जीवन के लगभग हर क्षेत्र में तकनीक की इस घुसपैठ को सामान्य मानने लगे हैं, इसलिए कोई हैरानी नहीं कि सीबीएसई भी यह महसूस करता है कि कक्षा तीन के बच्चों को भी पीछे नहीं रहना चाहिए, और उन्हें एआई के बुनियादी अवयव 'खेल-खेल में/संवादात्मक' तरीकों से सीखने शुरू कर देने चाहिए। फिर, एआई को कौन 'न' कह सकता है, खासकर जब तकनीकी-कॉर्पोरेट वाला कुलीन वर्ग और बाज़ार-संचालित विज्ञापन तंत्र हमें इसकी 'क्रांतिकारी' क्षमता के बारे में लगातार याद दिलाते रहते हैं? और संभवतः, कई महत्वाकांक्षी माता-पिता यह भी सोचते हैं कि इस तेज़ी से बदलती दुनिया में, यदि उनके बच्चे जल्द से जल्द एआई के साथ सहज महसूस नहीं करेंगे, तो वे पिछड़ जाएंगे और डेटा विश्लेषण, रोबोटिक्स एवं डिज़ाइन नवाचार जैसे नए उभरते क्षेत्रों से कदमताल करने में असफल हो जाएंगे!

हालांकि, इस तकनीकी आकर्षण के बीच, हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि शिक्षा के क्षेत्र में एआई के उपयोग के बारे में ज़रूरी नहीं कि सब कुछ आशाजनक ही हो। प्रमुख आईआईटी और

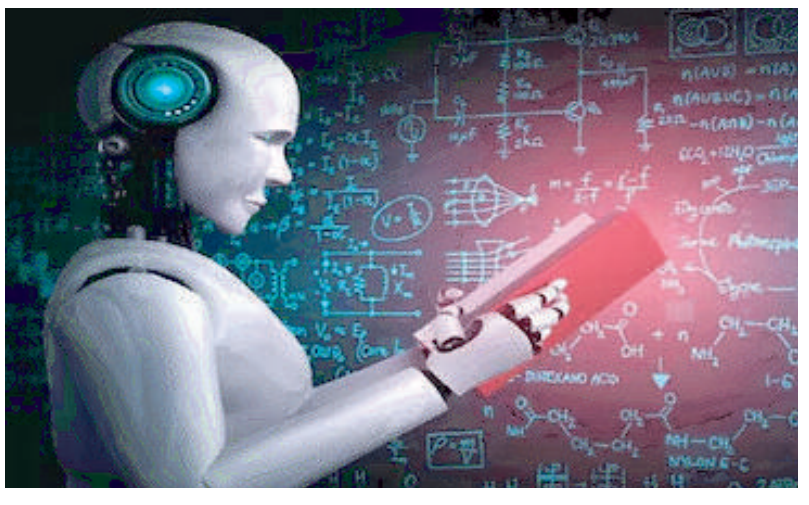

आईआईएम के प्रोफेसरों ने इस प्रवृत्ति पर गंभीर चिंता व्यक्त की है। हाल ही में, आईआईटी-दिल्ली के निदेशक प्रोफेसर रंजन बनर्जी ने अपने छात्रों को याद दिलाया कि 'एआई पर अत्यधिक निर्भरता आलोचनात्मक सोच कौशल जैसे आवश्यक शिक्षण परिणामों में बाधा डाल सकती है'। इसी तरह, आईआईएम में, जैसाकि एक प्रोफेसर ने गहरी पीड़ा के साथ पाया है, कुछ छात्र एआई प्लेटफॉर्म से फील्ड स्टडी तैयार करने का अनुरोध कर रहे हैं।

दरअसल, जब अन्यथा ये प्रतिभाशाली छात्र अपनी आलोचनात्मक/रचनात्मक सोच को त्यागकर एआई-मध्यस्थता वाले असाइनमेंट तैयार करने के लिए प्रलोभित होते हैं, तो वे खुद को उन चीज़ों से वंचित कर लेंगे जो उन्हें मानवीय बनाती हैं: उनकी व्यक्तिपरकता, उनका अभिकरण , उनका अनुभवजन्य ज्ञान, उनकी 'अपूर्णता', उनका कठिन बौद्धिक श्रम, और सबसे बढ़कर, गलतियां करने का उनका अधिकार। इसे स्वीकार करें : एआई को लेकर अत्यधिक महिमामंडन के पीछे एक कठोर तथ्य छिपा है। जैसा कि इस्राइली इतिहासकार युवाल नोआ हरारी हमें आगाह करते हैं, यह ऐसी स्थिति पैदा कर सकता है जिसमें मनुष्य अपने ही आविष्कार पर नियंत्रण खो सकते हैं। क्या यह भयावह नहीं है?

इसके अलावा, बतौर शिक्षक, मैं अक्सर खुद से पूछता हूं : कक्षा तीन के बच्चों को अपने संज्ञानात्मक, मानसिक, सौंदर्यपरक और बौद्धिक विकास के लिए वास्तव में क्या चाहिए? क्या यह एआई है या कुछ और? सबसे पहले, आइए हम यह स्वीकार करें कि स्कूली शिक्षा के मूल अर्थ को बदले बिना, कोई भी तकनीक बच्चों में सक्रिय सीखने की रुचि नहीं जगा सकती। स्कूलों को जेलों जैसा न बनने दें; स्कूलों को हमारे बच्चों को इस तरह 'बांधने' न दें कि वे अपनी सरलता, जिज्ञासा, आश्चर्य और खिलंदड़पन खो दें।

बेशक, उन्हें थोड़ा-बहुत बुनियादी गणित सीखना चाहिए। उन्हें पढ़ना, लिखना और अपनी बात कहना सिखाने की जरूरत है। उनके लिए साझेदारी बनाना, दूसरों से जुड़ना और समूह में काम करना सीखना भी उतना ही ज़रूरी है। उन्हें रोज़मर्रा की गतिविधियों के ज़रिये बुनियादी अंकगणित सीखने दें, जिनमें जोड़, घटाव, गुणा, भाग और कुछ तरह का नाप या माप करना शामिल हो।

एटलस, ग्लोब और कहानी सुनाने की कला के साथ खेलकर उन्हें बाहर की दुनिया में अपनी रुचि विकसित करने दें। उन्हें अच्छी/रंगीन किताबें देखने, छूने, इनकी गंध महसूस करने और पढ़ने दें, और पढ़ने का शौक विकसित करने दें। उन्हें अवलोकन करने और तर्क करने की क्षमता विकसित करने दें। उन्हें अपने हाथों और पैरों से काम करने दें। और सबसे ऊपर, उन्हें खेलने दें और अपनी शारीरिक/गतिज ऊर्जा को धार देने दें। उन्हें कोई फूल, कोई पेड़, कोई नदी निहारते हुए आश्चर्य और रहस्य का अनुभव करने दें। और हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस तरह की संवेदनशीलता ही बुद्धिमत्ता का सर्वोच्च रूप है। इसलिए, मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं कि कक्षा तीन के छात्रों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की ज़रूरत नहीं। इसके बजाय, उन्हें ऐसे बालसुलभ शैक्षणिक परिवेश की जरूरत है जिसका प्रयोग रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी और जिद्दू कृष्णमूर्ति जैसे लोगों ने किया था।

ज़रा सोचकर देखिए, इन कोमल बच्चों को कितना 'ज्ञान' ढोना पड़ रहा है: अंग्रेज़ी, विज्ञान, नागरिक शास्त्र, गणित, कंप्यूटर एप्लीकेशन और अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस! हम उनसे उनका बचपन छीनने पर क्यों तुले हैं? हम यह क्यों नहीं समझते कि अगर शुरुआती सालों में उन्हें प्यार व संभाल के साथ विकसित होने दिया जाए, और पिछड़ने के डर के बिना सीखने/अनसीखने को प्रेरित किया जाए, तो आगे चलकर वे बौद्धिक रूप से जागृत, भावनात्मक रूप से संतुष्ट और सौंदर्यबोध से ओतप्रोत नागरिक बनेंगे?

उनके लिए अपनी अतिरिक्त रचनात्मक क्षमता और आलोचनात्मक सोच को बनाए रखना मुश्किल नहीं होगा। और जैसे-जैसे वे बड़े होंगे, उनके लिए यह तय करना संभव होगा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल कब और कैसे करना है, और सबसे महत्वपूर्ण यह, कि कब इसे 'न' कहना है, और इस बात पर ज़ोर देना है कि मानवीय होने का मतलब तकनीक का मालिक बनना है, न कि इसका गुलाम।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

राज्य कांग्रेस उस व्यक्ति की तलाश कर रही है जो बिभीषण है और पार्टी के अंदर दरार बढ़ रही है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : नुआपाड़ा में हार के बाद कांग्रेस में नाराज़गी की आग जल रही है। सीनियर नेताओं और युवा नेताओं के पतन के बाद भक्त दास सामने आए हैं। उन्होंने कहा कि कुछ नेता बाहरी ताकतों के नाम पर बयान दे रहे हैं। इस बीच, सुर राउतरिया ने आग में घी डालने का काम किया है।नुआपाड़ा विधानसभा उपचुनाव में कांग्रेस को अपमानजनक हार का सामना करना पड़ा।लेकिन कांग्रेस के नेता बिना सोचे-समझे बयान देने में लगे हैं। PCC प्रेसिडेंट भक्त दास के पार्टी में मतभेद वाले बयान के बाद पार्टी पर पॉलिटिक्स गरमा गई है। विवाद बढ़ने के बाद आज खुद PCC प्रेसिडेंट सामने आए। उन्होंने कहा, मैंने कोई विवादित बात नहीं कही। जब पत्रकार ने पूछा तो मैंने कहा कि अगर पार्टी में मतभेद हैं तो पता करूंगा। अगर किसी को कोई दिक्कत है तो सीधे बात करें। कुछ नेता मीडिया में बाहरी ताकतों के बारे में बयान दे रहे हैं। उन्हें ऐसा करने से बचना चाहिए। नुआपाड़ा में हार के बाद भक्त के आरोपों पर कुछ सीनियर नेताओं ने मुंह खोला। सीनियर नेता मोकिम ने सवाल उठाए और डिसिप्लिनरी कमिटी को चिट्ठी लिखी। शनिवार को कुछ युवा नेताओं ने भक्त के खिलाफ बात की। और इस बयान ने पार्टी और पार्टी लीडरशिप को बदनाम कर दिया है। उन्होंने इनडायरेक्टली भक्त पर उंगली उठाई है और नया विवाद खड़ा कर दिया है। इस बीच, कांग्रेस नेता ने विवाद खड़ा करने वाले नेताओं पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा, मैं बातें छोड़ूंगा और हम साथ मिलकर काम करेंगे। दुख भुलाने के लिए फिर से मिलेंगे। भक्त दास कल कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मिलने के बाद भुवनेश्वर लौटे। और आज उन्होंने जिला अध्यक्ष और PCC कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। कहा जा रहा है कि उन्होंने संगठन पर चर्चा की।

पाजी को हमेशा याद करेगा जहां।

फिल्म दुनिया की इस रंग बिरंगी दुनिया में एक मुकाम होता है। हर एक कलाकार का, चलचित्रों में अभिनय उसका अपना परिदृश्य जो लोगों के दिलों में सदियों तक बना रहता है। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता धर्मेन्द्र जी का दुनिया से अलविदा कह देना। लोगों को आज भी गले नहीं उतर रहा है। शायद या खबर भी झूठी हो। लेकिन यहां सच है शोले के जय और वीरू में से वीरू ने दोस्ती तोड़ दी। समय के चक्र के आगे आना-जाना तो चलता रहता है। लेकिन 89 साल की उम्र में उनके जैसा ही मैन दूसरा कोई नहीं होगा। आज वह हमारे बीच नहीं हैं सादगी व जिंदादिली व्यक्तित्व के साथ वहां बहुत संवेदनशील भी थे। परोपकार करने में वह पीछे नहीं रहते थे अपने साथियों सह-कलाकारों की भी मदद करते थे। ठेठ देशी पंजाबी अंदाज में उन्हें अपनी मिट्टी से बहुत प्रेम था। पहली फिल्म दिल भी देते हम भी तेरे से फिल्म दुनिया में आये। 65 वर्ष उन्होंने फिल्मी दुनिया में अपना नाम रोशन किया। पुरस्कार कम मिले पर लोगों के दिलों में उनका रिश्ता अटूट रहा। यही सबसे बड़ा पुरस्कार है।

वह जट यमला पगला दीवाना
गुड्डी से मिला और चुपके-चुपके
आँखें, और ललकार, बगावत के बाद शोले में अमर किरदार में वीरू हमेशा याद आते रहेंगे। इसी फिल्म ने उन्हें बना दिया रही मैनर। पाजी कभी बने, वह नौकर बीबी का और राजपूत, राजिया सुल्तान, के साथ जानी दोस्त के साथ अलीबाबा और चालीस चोर हों या शालीमार फिल्म ने उन्हें बना दिया रही मैनर। फिल्म धरमवीर से एक महल हो सपनों का, लोफर, यादों की बरात के साथ जूगनू लिए ब्लैक मेल कर चलें वहां झील के उस पार बन कर दो चोर व प्रतिज्ञा ने बना दिया, उन्हें हम सब के दिलों में रही मैन र मेरा गांव मेरा देश से मंझली दीदी या अनुपमा के साथ फूल और पत्थर व काजल में उनका अभिनय गज़ब था। राजतिलक कर राजा जानी और हकीकत सभी ने देखी थी। तभी तो वहां यादों की बरात के साथ बन गए रही मैनर। राम बलराम, सीता गीता या प्रतिज्ञा से अपने कर्तव्य से शराफ़त उन्होंने निभाई। नया जमाना के साथ दिल भी तेरा हम भी तेरे ने ज़ीरो को हीरो बना दिया। तभी गुलामी व हकीकत के बाद वहां कहलाए रही मैनर। चाहे रेशम की डोरी हो या मां, यह अनपढ़ के साथ आईं मिलन की बेला से दिल ने फिर याद किया, तभी तो प्रोफेसर प्यारेलाल बनकर वह कहलाएं हम सब के हीरो यानी धर्मेन्द्र जी, तभी तो भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण दिया गया। धर्मेंद्र जी जो आज भी हम उनके चाहने वालों के दिलों में हमेशा बनें हुए हैं रही मैनर। सत्यकाम, क्रोधी जैसी खुबसूरती फिल्मों ने अभिनेता पाजी को पूरी दुनिया हमेशा याद करेगा जहां में। वह एक जिंदादिल इंसान व महान अभिनेता व जन जन के दिलों पर राज करने वाले पद्मभूषण से सम्मानित सदाबहार फिल्मी कलाकार धर्मेंद्र जी के निधन पर हम सभी की और से भावभीनी श्रद्धांजलि व शत-शत नमन।

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

गांधी मार्ग, भुवनेश्वर में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की भारी भीड़

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भूबनेश्वर गांधी मार्ग पर आंगनवाड़ी वर्कर्स की भारी भीड़। हज़ारों आंगनवाड़ी वर्कर्स और हेल्पर्स ने भुवनेश्वर में प्रोटेस्ट किया। पता चला है कि वे टीचर की पहचान और सैलरी बढ़ाकर 18,000 रुपये करने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने एक बड़ी भीड़ इकट्ठा की और कुल 11 मांगों को लेकर प्रोटेस्ट किया।जानकारी के लिए: ऑल ओडिशा आंगनवाड़ी लेडीज़ वर्कर्स एसोसिएशन ने विधानसभा में विरोध प्रदर्शन का आह्वान किया है। उन्होंने सैलरी बढ़ाने, मोबाइल फ़ोन देने जैसी कई मांगों को लेकर विधानसभा में विरोध प्रदर्शन करने के लिए जुलूस निकाला है। वे विधानसभा के सामने बैठ गईं और विरोध किया। उन्होंने अपनी सैलरी बढ़ाने की मांग की है। उन्होंने मांग की है कि आंगनवाड़ी वर्कर्स की कम से कम सैलरी 18,000 रुपये और हेल्पर्स की सैलरी 9,000 रुपये की जाए। उन्होंने यह भी मांग की है कि 10 लाख रुपये की रिटायरमेंट सहायता, पेंशन और ग्रेच्युटी दी जाए। इसी तरह, न्यूट्रिशन ट्रैकिंग के काम के लिए 2G मोबाइल नेटवर्क ठीक नहीं है, जिससे उन्हें अक्सर परेशानी का सामना करना पड़ता है। इसलिए, उन्होंने मांग की है कि 5G मोबाइल फ़ोन दिए जाएं। इसे लेकर राज्य के लगभग सभी ज़िलों से हज़ारों आंगनवाड़ी वर्कर्स राजधानी में जमा हुई हैं। इस बीच, आंगनवाड़ी वर्कर्स के विरोध प्रदर्शन को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था कड़ी कर दी गई है। विधानसभा परिसर में भारी पुलिस बल तैनात किया गया है।

कृष ओरा सोसाइटी में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

डॉ.शंभू पंवार

नई दिल्ली। 24 नवंबर। कृष ओरा सोसाइटी, पोडियम पार्क भिवाड़ी में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा में आज का दिन भावनाओं और भक्ति रस से सराबोर रहा। व्यास पीठ से कथा वाचक शिवदत्त महाराज ने श्रीराम जन्म, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव एवं नंदलाल की मनमोहक बाल लीलाओं का ऐसा अद्भुत और सजीव चित्रण किया कि उपस्थित श्रद्धालु भक्ति भाव में डूब गए।

श्रीराम–सीता विवाह और माता सीता विदाई के भावपूर्ण प्रसंग ने पंडाल में उपस्थित सभी जनों की आँखें नम कर दीं। कथा के दौरान शिवदत्त महाराज की यह मार्मिक पंक्तियाँ पूरे वातावरण में गूँज उठीं रजब राम जन्म लेत हैं, तब भाग खुलत सबके... और जब कृष्ण मुस्काए, तब प्रेम बरसत सब पे।" महाराज ने आगे कहा "सीता विदाई केवल एक विवाह का संस्कार नहीं, त्याग और मर्यादा का वह दीपक है, जो युगों-युगों तक धरती को रोशन करता है।"इन भावपूर्ण प्रसंगों ने श्रद्धालुओं को भक्ति रस श्रद्धालुओं को भक्ति रस में इस तरह डुबो दिया

कि भजन-कीर्तन के दौरान लोग झूमने लगे और पूरा पंडाल 'हरे राम... हरे कृष्ण...' के नाम से गूंज उठा। कथा के मुख्य यजमान ओमप्रकाश एवं सुमन महावार थे, जिन्होंने परिवार सहित विधि-विधान से पूजा -अर्चना कर शिवदत्त महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया।इस अवसर पर सोसायटी के अध्यक्ष सुतेश यादव, ओमप्रकाश महावार, राजेश अग्रवाल, अनीता यादव, सुमन महावार, निशा देवी, सोनम, पूजा मराठा, रश्मि चौहान, कुसुम तिवारी, कविता, बबीता सहित काफी संख्या श्रद्धालु उपस्थित रहे।

आर्थिक तंगी और पारिवारिक कलह के चलते संसार को अलविदा कह बैठे कानपुर के तीन लोग

सुनील बाजपेई

कानपुर। आर्थिक तंगी और उसकी वजह से ही पारिवारिक कलह के चलते तीन लोगों ने संसार को अलविदा कह दिया। आत्महत्या करने वाले तीनों लोगों की लाशों को पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भिजवाने के बाद घटना की छानबीन भी शुरू कर दी है। वहीं उनके परिवार में कोहराम भी मचा हुआ है।

आत्महत्या के रूप में असमय मौत को गले लगाने की यह घटनाएं पनकी, बर्रा व सचेंडी थानाक्षेत्र में अलग-अलग कारणों सें हुई।

पहली घटना के बारे में मिली जानकारी के अनुसार बर्रा विश्वबैंक निवासी छक्की लाल (56) लोडर चालक थे, परिवार में पत्नी शांति व दो बेटे अश्वनी और नीरज हैं। अश्वनी ने बताया कि पिता सांस की बीमारी से ग्रसित थे, जिसका इलाज चल रहा था। रविवार रात 8 बजे घर लौटने के बाद वह बेटे अंश व सोम के साथ खेल रहे थे। कुछ देर बाद वह बिना बताए घर से निकल गए। काफी देर तक वापस न आने पर तलाश शुरू की, लेकिन कोई पता नहीं चला। रविवार सुबह पनकी पुलिस को कपली गांव के पास ट्रेन की पटरी पर शव पड़ा मिला।

इसी तरह की दूसरी घटना के मुताबिक नौबस्ता के सिमरा गांव निवासी अविनाश पाल ऑटो पार्ट्स की दुकान में काम करते हैं। परिवार में 24 वर्षीय पत्नी सोनी, दो बच्चे अश्वनी और सात माह का बेटा है। परिजनों ने बताया कि रविवार को सोनी का पति अविनाश से खाना बनाने को लेकर झगड़ा हो गया, जिसके बाद पति सब्जी लेने बाजार चला गया।

इस बीच सोनी ने अपने सात माह के बेटे को सास को देकर फंदे से लटक कर आत्महत्या कर ली, जब पति सब्जी लेकर घर लौटा तो उन्हें घटना की जानकारी हुई। नौबस्ता थाना प्रभारी बहादुर सिंह ने बताया कि पति से विवाद के बाद पत्नी ने आत्महत्या की है। जबकि तीसरी घटना के बारे में मिली जानकारी के मुताबिक सचेंडी के रामनारायण पुरवा निवासी ओम प्रकाश ट्रक ड्राइवर हैं। उनके परिवार में पत्नी, चार बेटे और एक शादीशुदा बेटी है। परिजनों ने बताया कि 20 वर्षीय बेटा विशाल ट्रक में क्लीनर का काम करता था। रविवार रात को वह घर लौटा और अपने कमरे में सोने चला गया। आज सोमवार सुबह परिजन उठे तो उसका सब फंदे से लटकता हुआ मिला। घटना की जानकारी के बाद परिवार में कोहराम मच गया। पुलिस सूत्रों के मुताबिक इन तीनों घटनाओं का संबंध आर्थिक तंगी और इसी वजह से पारिवारिक कलह से जुड़ी बताई गई है। पुलिस ने तीनों की लाशों को पोस्टमार्टम भेजने के बाद घटना की छानबीन शुरू कर दी है।

झारखंड के सभी नगर निगम तथा निकायों का चुनाव हेतु रस्ता साफ़

चुनाव आयोग ने बंद लिफाफे में हाईकोर्ट को दी जानकारी

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, झारखंड में लंबे समय से लंबित शहरी निकाय चुनाव नहीं होने पर रौशनी खलखो की ओर से दायर अवमानना याचिका पर सोमवार को झारखंड हाईकोर्ट के जस्टिस आनंदा सेन की अदालत में सुनवाई हुई है. राज्य निर्वाचन आयोग ने कोर्ट को बताया है कि विस्तृत तैयारी के लिए 8 सप्ताह की जरुरत पड़ेगी. साथ ही चुनावी प्रक्रिया पूर्ण करने में अतिरिक्त 45 दिन लगेंगे. इस बाबत सीलबंद शपथ पत्र 22 नवंबर को ही दाखिल कर दिया गया था. याचिकाकर्ता के अधिवक्ता विनोद सिंह ने ईटीवी भारत को बताया कि सभी पक्षों की दलील सुनने के बाद कोर्ट ने सुनवाई की अगली तारीख 30 मार्च तय कर दी है.

प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता विनोद सिंह जबकि राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता ने पक्ष रखा. वहीं राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से अधिवक्ता सुमित गड़ोदिया ने दलील पेश की. महाधिवक्ता ने बताया कि चुनाव से जुड़े सभी निर्णयों की प्रतियां राज्य निर्वाचन आयोग को दे

दी गई हैं. वहीं राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से कहा गया है कि चुनाव कराने को लेकर आयोग गंभीर है. लेकिन इसकी तैयारी के लिए 8 सप्ताह और चुनाव प्रक्रिया पूर्ण करने के लिए 45 दिन लगेंगे. कोर्ट ने राज्य निर्वाचन आयोग की ओर से दाखिल सीलबंद शपथ पत्र का अवलोकन करने के लिए सुनवाई की अगली तारीख 30 मार्च 2026 तय की है.

झारखंड में ये है नौ

रांची, हजारीबाग, मेदनीनगर, धनबाद, गिरिडीह, देवघर, चास, आदित्यपुर और मानगो

बीस है नगर परिषद :गढ़वा, विश्रामपुर, चाईबासा, झुमरी तिलैया, चक्रधरपुर, चतरा, चिरकुंडा, दुमका, पाकुड़, गोड्डा, गुमला, जुगसलाई, कपाली, लोहरदगा, सिमडेगा, मधुपुर, रामगढ़, साहिबगंज, फुसरो और मिहिजाम.

उन्नीस है नगर पंचायत नगर, मझिआंव, हुसैनाबाद, हरिहरगंज, छतरपुर, लातेहार, कोडरमा, डोमचांच, बड़की सरैया, धनवार, महगामा, राजमहल, बरहरवा, बासुकीनाथ, जामताड़ा, बुंडू, खूंटी, सरायकेला और चाकुलिया.

पिछली सुनवाई में हाईकोर्ट ने चुनाव की संभावित तारीख की मांग करते हुए सुनवाई के लिए 24 नवंबर की तारीख तय की थी. तब महाधिवक्ता राजीव रंजन की ओर से कोर्ट को बताया गया था कि सरकार ने नगर निकाय चुनाव के लिए कराए गए ट्रिपल टेस्ट की रिपोर्ट राज्य निर्वाचन आयोग को सौंप दी है. सीटों के आरक्षण, जनसंख्या सूची सहित कुछ बिंदुओं पर आयोग ने अतिरिक्त जानकारी मांगी है, जिसे जल्द मुहैया करा दिया जाएगा.

बता दें कि जून 2020 से 12 शहरी निकायों में चुनाव नहीं हुए हैं. इसके अलावा 27 अप्रैल 2023 के बाद से राज्य में कोई शहरी निकाय चुनाव नहीं हुआ है. इसमें नगर निगम, नगर परिषद और नगर निकायों की कुल संख्या 48 है. हाईकोर्ट ने 4 जनवरी 2024 को आदेश पारित कर तीन सप्ताह के भीतर चुनाव सुनिश्चित कराने को कहा था.

इस डेडलाइन के फेल होने पर अवमानना याचिका दायर हुई थी. अब राज्य निर्वाचन आयोग के रुख से स्पष्ट है कि झारखंड में अब 30 मार्च 2026 से पहले निकाय चुनाव का काम पूरा कर लिया जाएगा. उम्मीद जताई जा रही है कि फरवरी 2026 से मार्च 2026 के बीच चुनाव का कार्य पूरा करा लिया जाएगा.

झारखंड का चर्चित शराब घोटाले पर जमशेदपुर डीसी कर्ण सत्यार्थी से एसीबी की लंबी पूछताछ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, झारखंड में हुए शराब घोटाले के मामले में भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की कार्रवाई जारी है. सोमवार को एसीबी ने इस सिलसिले में जमशेदपुर के उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी से लंबी पूछताछ की. गौरतलब है कि कर्ण सत्यार्थी पूर्व में राज्य के उत्पाद आयुक्त के पद पर भी पदस्थापित रह चुके हैं. एसीबी ने पूछताछ के दौरान कर्ण सत्यार्थी से कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर गहन जानकारी ली. अधिकारियों का मुख्य ध्यान इस बात पर था कि उत्पाद आयुक्त के तौर पर उन्होंने प्लेसमेंट एजेंसियों के खिलाफ क्या कदम उठाए थे. उत्पाद आयुक्त रहते हुए उन्होंने फर्जीवाड़े में शामिल प्लेसमेंट एजेंसियों के

खिलाफ क्या कार्रवाई की? क्या उन्होंने एजेंसियों द्वारा दी गई बैंक गारंटी की जांच कराई थी? अगर जांच नहीं कराई गई, तो इसके पीछे की वजह क्या थी?

यह पूरा मामला राज्य में शराब की बिक्री से जुड़ा है, जिसमें दो एजेंसियों – मेसर्स विजन हॉस्पिटलिटी और मार्शन इनोवेटिव ने गंभीर अनियमितताएं बरती थीं. इन दोनों एजेंसियों ने विभाग को पांच-पांच करोड़ रुपये से अधिक की फर्जी बैंक गारंटी दी थी. मैनपावर सप्लाई करने वाली इन एजेंसियों ने शराब की बिक्री के बाद उपभोक्ताओं से जुटाई गई राशि को भी विभाग में जमा नहीं कराया था.

यह पहला मौका नहीं है, जब इस घोटाले में किसी बड़े अधिकारी से पूछताछ की गई है. इस केस में उत्पाद विभाग के कई बड़े अधिकारी पहले ही जांच के दायरे में आ चुके हैं. उत्पाद विभाग के पूर्व सचिव विनय चौबे और अमित प्रकाश को इस मामले में गिरफ्तार किया गया था, जो वर्तमान में जमानत पर हैं. उत्पाद विभाग के दो अन्य पूर्व सचिवों मनोज कुमार व मुकेश कुमार के साथ-साथ पूर्व उत्पाद आयुक्त फैज अक अहमद से भी एसीबी पहले ही पूछताछ कर चुकी है.

कॉप-30 सम्मेलन-वक्त कम, अपेक्षाओं का है अंबार !

ब्राजील के बेलेम में 10 नवंबर से 21 नवंबर 2025 तक आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु शिखर सम्मेलन (कॉप-30) शुक्रवार को (21 नवंबर 2025) खत्म हो गया। उम्मीद जताई गई कि बेहतर भविष्य के लिए सभी देश मिलकर काम करेंगे, लेकिन जैसी उम्मीद की जा रही थी, वैसा कुछ खास हासिल नहीं हुआ। पाठकों को बताता चलूं कि कॉप सम्मेलन(कान्फ्रेंस आफ पार्टीज) का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए देशों को एक साझा मंच पर लाना है, जहाँ वे पर्यावरण संरक्षण, ग्रीनहाउस गैसों में कमी, तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने और टिकाऊ वैश्विक विकास की दिशा में सामूहिक निर्णय लेते हैं। जानकारी के अनुसार सम्मेलन के आखिरी दिन जीवाश्म ईंधन(कोयला , पेट्रोलियम (कच्चा तेल) और प्राकृतिक गैस) को चरणबद्ध तरीके से खत्म करने को लेकर जिस तरह की खींचतान होती रही, वह दुनिया को बहुत आश्वस्त करने वाली नहीं थी। कितनी बड़ी और आश्चर्यजनक बात है कि जिस वैश्विक योजना का जिक्र कॉप सम्मेलन के शुरुआती ड्राफ्ट में था, उसे बाद के संशोधित ड्राफ्ट से हटा ही दिया गया। इससे यह साफ है कि जीवाश्म ईंधन से जुड़े विवाद जल्द सुलझने वाले नहीं हैं। यह सम्मेलन 10 नवंबर 2025 को शुरू हुआ था और उम्मीद थी कि दुनिया के तमाम देश 'ग्लोबल वार्मिंग' के खिलाफ कोई ठोस फैसला लेंगे, लेकिन सम्मेलन धीमी रफ्तार से आगे बढ़ा, और कुछ विशेष सामने नहीं आया। इस बार हुए कॉप-30 से उम्मीदें इसलिए भी ज्यादा थीं, क्योंकि पेरिस समझौते को दस साल पूरे हो चुके हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि पेरिस जलवायु समझौता वर्ष 2015 में दुनिया के लगभग सभी देशों के बीच हुआ एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समझौता है। इसका मुख्य उद्देश्य बढ़ते वैश्विक तापमान को नियंत्रण में रखना है, ताकि धरती को जलवायु परिवर्तन के गंभीर खतरों से बचाया जा सके। इस समझौते के तहत देश यह प्रयास करते हैं कि पृथ्वी का तापमान औद्योगिक युग से पहले की तुलना में 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहे और संभव हो तो 1.5 डिग्री तक सीमित किया जाए। हर देश अपनी क्षमता के अनुसार ग्रीनहाउस गैसों में कमी लाने की योजना बनाता है, जिसे एनडीसी मतलब 'नेशनली डेटेरमाइंड कंट्रीब्यूशन्स' (यह वह योजना है जिसे हर देश खुद बनाता है कि वह कितनी ग्रीनहाउस गैसें कम करेगा, पर्यावरण की रक्षा के लिए क्या-क्या कदम उठाएगा और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए कैसी तैयारी करेगा) कहा जाता है। साथ ही, विकसित देश गरीब और विकासशील देशों को आर्थिक एवं तकनीकी सहायता भी प्रदान करते हैं, ताकि वे जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए जरूरी कदम उठा सकें। यह समझौता पूरी दुनिया को जलवायु संकट से बचाने का सामूहिक प्रयास है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज पूरी दुनिया जिस गंभीर जलवायु संकट से गुजर रही है, वह किसी से छिपा नहीं है। इसके बावजूद ज्यादातर देश अब भी ग्लोबल तापमान को दो डिग्री सेल्सियस से नीचे रखने और 1.5 डिग्री के लक्ष्य को हासिल करने के प्रति गंभीर नहीं दिखते। ऐसे में विकासशील देशों की स्थिति और भी चिंताजनक है, क्योंकि जलवायु संकट में उनका योगदान सबसे कम है, लेकिन नुकसान उन्हें सबसे ज्यादा झेलना पड़ रहा है। पिछले कुछ सालों से बढ़ते कार्बन उत्सर्जन और असहनीय गर्मी ने आज मानव जीवन को चुनौती दे दी है। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि विकसित देश अपने वादों को ठीक से पूरा नहीं कर रहे हैं। हमारे देश के पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने भी इस सम्मेलन में इस बात को साफ कहा है कि विकसित देशों को तय समय से पहले 'नेट-जीरो' लक्ष्य हासिल करना चाहिए।उनकी यह बिल्कुल उचित मांग है, क्योंकि सबसे ज्यादा प्रदूषण उन्हीं देशों ने किया है, इसलिए जिम्मेदारी भी उनकी ज्यादा बनती है। यहां गौरतलब है कि विकसित देशों में प्रदूषण का स्तर उनकी ऊँची ऊर्जा-खपत और औद्योगिक गतिविधियों के कारण स्वाभाविक रूप से अधिक रहा है। ऐतिहासिक रूप से देखें तो वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में सबसे बड़ी हिस्सेदारी इन्हीं देशों की रही है। आंकड़े बताते हैं कि साल 1850 से 2019 तक उत्तरी अमेरिका और यूरोप ने कुल उत्सर्जन का लगभग आधा हिस्सा पैदा किया। आज भी प्रति व्यक्ति

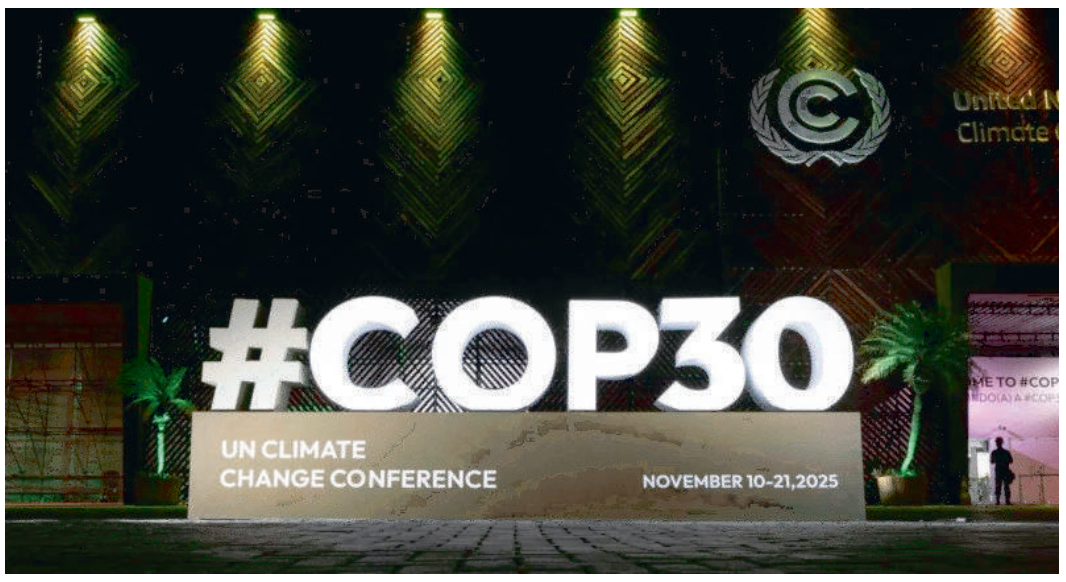

उत्सर्जन के मामले में विकसित देश काफी आगे हैं; जहां उच्च-आय वाले देशों में प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन करीब 8–9 मीट्रिक टन तक है, वहीं विकासशील देशों में यह लगभग आधा होता है। यद्यपि तकनीक, नियमों और बेहतर निगरानी के कारण इन देशों ने वायु-गुणवत्ता में सुधार किए हैं, और कुछ देश पीएम$_{2.5}$ प्रदूषण को विश्व स्वास्थ्य संगठन मानकों के अनुरूप रखने में सफल भी हुए हैं, फिर भी वैश्विक तापमान वृद्धि और ग्रीनहाउस गैसों की समस्या में उनका योगदान निर्णायक बना हुआ है। यही कारण है कि जलवायु परिवर्तन की अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं में विकसित देशों से अधिक जिम्मेदारी और तेज उत्सर्जन-कटौती की अपेक्षा की जाती है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि इस संबंध में, भारत ने बेहतर उदाहरण पेश किया है। विकास भी जारी है और पर्यावरण संरक्षण भी। यह काबिले-तारीफ है कि साल 2005 से अब तक भारत ने अपने कार्बन उत्सर्जन में 36% से ज्यादा कमी की है, और बिजली उत्पादन में गैर-जीवाश्म स्रोतों का हिस्सा 50% से अधिक हो चुका है। हाल फिलहाल, यह भी माना जा रहा है कि भारत 2070 से पहले ही नेट-जीरो का लक्ष्य हासिल कर सकता है। सम्मेलन में एनडीसी का मुद्दा भी उठा, लेकिन भारत ने भरोसा दिलाया है कि 2035 तक संशोधित एनडीसी समय पर घोषित कर दिए जाएंगे और पहली द्विवार्षिक पारदर्शिता रिपोर्ट भी जारी कर दी जाएगी।अंत में, यही कहूंगा कि कॉप-30 सम्मेलन का मुख्य ध्यान तीन बातों पर केंद्रित था। मसलन, देश जलवायु कार्रवाई कैसे आगे बढ़ाएँगे, जरूरतमंद देशों को तकनीक और वित्तीय मदद कैसे मिलेगी, और दुनिया मिलकर जलवायु प्रयासों को कैसे आगे ले जाएगी ? वास्तव में, अब पेरिस समझौते को लागू करने के लिए समय बहुत कम बचा है। इसलिए विकासशील देशों के हितों को प्राथमिकता देना जरूरी है, क्योंकि उन्होंने संकट में कम योगदान दिया है, लेकिन नुकसान सबसे ज्यादा वही झेल रहे हैं। अब सबकी नजरें तुर्की में होने वाले कॉप-31 पर हैं, इस उम्मीद के साथ कि वहां से कोई ठोस और सकारात्मक निर्णय निकल सके।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ़, उत्तराखंड।

बिगड़ गया TMC का खेल- SIR ने खोला बंगाल की राजनीति का सबसे बड़ा राज!

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। देशहित में, इस सराहनीय कार्य के लिए इलेक्शन कमीशन का धन्यवाद व्यक्त किया और तारीफ़ करते हुए लोगों ने बताया कि बहुत जरूरी था SIR दूध का दूध पानी का पानी हो जाएगा। सच्चाई सामने आ जाएगी जो 23 साल से अंधेरे में थी। इलेक्शन कमीशन बहुत ही बढ़िया और बेहतरीन काम कर रहा है। यह मामला सिर्फ अवैध प्रवास का प्रमाण नहीं बल्कि उस खतरनाक राजनीतिक तंत्र का खुलासा है जिसे लंबे वक़्त तक देश से छिपाया गया था। यही वह देशविरोधी खतरनाक संरचना है जिस पर 'TMC की वोट राजनीति' कई सालों से टिकी हुई थी।

ममता की रणनीति फेल - TMC को यह बात पहले से पता थी कि ये प्रभावित समूह विरोध में सड़क पर अवश्य उतरेंगे, जिससे राजनीतिक संदेश जाएगा कि 'जनता चुनाव आयोग के खिलाफ है, लेकिन आपको जानकार हैरानी होगी कि इसके थीक उल्टा हुआ। लोग सड़क पर आने के बजाय एकदम से गायब होने लगे। घुसपैथियों के द्वारा किसी तरह का विरोध हुआ ही नहीं और पलायन की घटनाएँ तैजी बढ़ गयीं बस यही TMC के लिए बड़ा झटका है। इससे साबित हुआ कि ₹जो वोट बैंक आपका है ही नहीं, वह आपके लिए खड़ा भी नहीं होता।₹

राज्य के बॉर्डर इलाकों में इन दिनों अजीब माहौल है बना हुआ है। बसों में बैठे कई परिवार, छोटे-छोटे बैग लिए लोग, इधर-उधर देखते चेहरे, सीमा चौकियों पर बढ़ती भीड़ आदि। कई रिपोर्ट में इस बात का दावा किया गया है जिनमें लोग खुद स्वीकार करते दिख रहे हैं कि "हमारे पास वैध दस्तावेज नहीं पकड़े जाने की वजह से बचने के लिए वापस जा रहे हैं।" इतना ही नहीं BSF के अनुसार, सीमा पर संदिग्ध समूह लगातार पकड़े जा रहे हैं। यह मामला सिर्फ अवैध घुसपैठ का नहीं बल्कि उस देश विरोधी राजनीतिक सिस्टम का खुलासा है, जिसे 23 सालों से देश की जनता से छिपाया गया था।

आखिर ममता बनर्जी SIR के खिलाफ क्यों?

20 नवंबर 2025 को ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग को पत्र लिखकर SIR प्रक्रिया को अव्यवस्थित, खतरनाक और जल्दबाजी में शुरू किया गया बताया लेकिन राजनीतिक विश्लेषकों का ऐसा मानना है कि असली चिंता कहीं और है। SIR के बाद - फर्जी प्रविष्टियां हट जाएंगी। आधार लिंकिंग सख्ती से लागू होगी। साल 2002 की वोटर लिस्ट से मिलान अनिवार्य होगा। UIDAI पहले ही लाखों आधार कार्ड निष्क्रिय कर चुका है। ऐसे में सालों पहले से बने फर्जी कार्ड, राशन और योजनाओं का लाभ बंद हो सकता है। यही वह खतरनाक संरचना है जिस पर 'TMC की वोट राजनीति' कई सालों से टिकी हुई थी।

राज्य की राजनीति में भूचाल

4 दिसंबर 2025 को वेरिफिकेशन खत्म हो जाएगा और असली वोटर लिस्ट सामने आएगी और तब पता चलेगा कि, कितनी फर्जी प्रविष्टियां हटाई गईं, कितने नाम गलत पाए गए और कितनी आबादी वास्तविक रूप से नागरिक है। अगर बड़े पैमाने पर नाम हटते हैं तो देश की जनता से 23 साल तक छुपाई गई सच्चाई देश और पूरी दुनियां के सामने आएंगे। यह SIR 'बंगाल की ख़तरनाक राजनीति और भृष्ट सिस्टम की सबसे बड़ी जनसंख्या-सर्जरी साबित होगी।

14 महीने में CJI सूर्यकांत के सामने होंगे कई बड़े केस, जाने

परिवहन विशेष न्यूज

जस्टिस सूर्यकांत को भारत के राष्ट्रपति ने मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) नियुक्त किया है. उन्होंने देश के 53वें सीजेआई के तौर पर शपथ ली. वह पूर्व सीजेआई बीआर गवई का स्थान लेंगे. इनका कार्यकाल 14 महीने का होगा. क्योंकि जस्टिस सूर्यकांत फरवरी 2027 में सेवानिवृत हो जाएंगे.

जज के तौर पर पहले भी कई बड़े देशव्यापी मसलों की सुनवाई में शामिल रहे हैं और आगे भी उनके सामने राष्ट्रहित से जुड़े मामले चुनौती के रूप में आने वाले हैं।

जस्टिस सूर्यकांत सिर्फ 38 साल की उम्र में हरियाणा के एडवोकेट जनरल बने थे. वो हरियाणा के रहने वाले हैं. उनका जन्म 10 फरवरी 1962 को हिसार में हुआ था. यही वजह है कि वह सिर्फ 14 महीने इस पद पर रहेंगे. इन 14 महीनों में उनके सामने कई ऐसे मामले आने वाले हैं, जो उनके लिए बड़ी चुनौती होगी.

एसआईआर और वक्फ एक्ट का मामला होगी बड़ी चुनौती अभी देशभर में एसआईआर चल रहा है. कई जगहों पर इसका विरोध भी शुरू हो गया है. इसको लेकर भी मामला सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गया है. ऐसे में सीजेआई के तौर पर जस्टिस सूर्यकांत के सामने यह एक बड़ा मामला होगा. इसी तरह वक्फ एक्ट का मामला भी एक बड़ी चुनौती होगी

तलाक-ए- हसन और दिल्ली-एनसीआर प्रदूषण का मामला भी है अहम इसके अलावा दिल्ली-एनसीआर में प्रदूषण से जुड़ा मामला भी सुप्रीम कोर्ट में अटका हुआ है इसको लेकर भी सभी की नजरें जस्टिस सूर्यकांत के फैसले पर होगी. इसके अलावा तलाक-ए-हसन पर सुप्रीम कोर्ट में चल रही सुनवाई भी अहम मामाला है. इस प्रथा के मुताबिक तीन महीने के अंदर पति एक-एक बार तलाक कहकर शादी को खत्म कर सकता है. इसी प्रथा की वैधता को चुनौती दी गई है.

बिहार एसआईआर, आर्टिकल 370 और एएमयू मामले में दिए अहम फैसले देश के लिए अहम मुद्दा बनने वाले कई मामलों की सुनवाई में जस्टिस सूर्यकांत ने अहम भूमिका निभाई है. उन्होंने 300 से अधिक अहम फैसले दिए हैं. इनमें से कई संविधान, प्रशासन और सामाजिक न्याय से जुड़े मुद्दे रहे हैं. जम्मू और कश्मीर से आर्टिकल 370 हटाने के फैसले को जस्टिस सूर्यकांत की बेंच ने ही बरकरार रखा था.

बिहार एसआईआर मामले में भी जस्टिस सूर्यकांत ने वोटर लिस्ट से हटाए गए नामों की जानकारी सार्वजनिक करने का निर्देश दिया था. इसके अलावा धारा 144, जनजातीय अल्पसंख्यक अधिनियम और उस शराब नीति मामले की सुनवाई में अहम भूमिका निभाई थी, जिसमें पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को जमानत दी गई थी.

पेगासस मामले में निभाई थी अहम भूमिका जस्टिस सूर्यकांत पेगासस जासूसी मामले की सुनवाई वाले बेंच में भी शामिल थे. उस वक्त जासूसी मामले की जांच के लिए विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाई गई थी. इसमें उन्होंने कहा था कि नेशनल सिक्योरिटी के नाम पर सरकार को असीमित अधिकार नहीं दिए जा सकते.

यहां से हुई शुरुआत जस्टिस सूर्यकांत 2018 में हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस बने थे. उन्होंने कानून की पढ़ाई महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक से की है. बाद में उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से 2011 में एलएलएम (एलएलएम) किया. उन्होंने 1984 से ही वकालत शुरू कर दी थी. शुरुआत उन्होंने हिसार जिला अदालत से की. फिर वो चंडीगढ़ जाकर पंजाब और हरियाणा हाईकोर्ट में प्रैक्टिस करने लगे.

2019 में बने थे सुप्रीम कोर्ट के जज 2000 में हरियाणा के एडवोकेट जनरल बन गए थे. मार्च 2001 में बार काउंसिल ने उन्हें उनकी कानूनी विशेषज्ञता के कारण सीनियर एडवोकेट घोषित कर दिया. जनवरी 2004 में वे पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के जज बने. मई 2019 में जस्टिस सूर्यकांत को हिमाचल प्रदेश के हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस से सुप्रीम कोर्ट के जज के रूप में पदोन्नत किया गया

170वीं बस यात्रा के तहत श्रद्धालुओं को माता चिंतपूर्णी मंदिर और शिव बाड़ी मंदिर के दर्शन करवाए

एकनूर सेवा ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे कार्य सराहनीय-पार्षद लक्की

अमृतसर 24 नवंबर (साहिल बेरी)-

राष्ट्रीय नौजवान सोशल एंड स्पोर्ट्स सोसाइटी के धार्मिक यूनिट एकनूर सेवा ट्रस्ट की ओर से 170वीं मासिक बस यात्रा के तहत श्रद्धालुओं को माता चिंतपूर्णी मंदिर और शिव बाड़ी मंदिर (हिमाचल प्रदेश) के दर्शन करवाए गए। महामाई चिंतपूर्णी के जयकारों की गूंज में बस यात्रा का शुभारंभ मजीठा रोड से पार्षद राज कंवलप्रीत पाल सिंह लक्की द्वारा किया गया। लक्की ने कहा कि पिछले करीब 15 सालों से हर महीने श्रद्धालुओं को अलग-अलग मंदिरों, गुरुद्वारों वह अन्य धार्मिक संस्थाओं के दर्शन करवाना पुण्य का काम है। ऐसे धार्मिक और सामाजिक कार्य करके खासकर युवाओं को सामाजिक बुराइयों से दूर रहने व धार्मिक कार्यों के प्रति रुझान बढ़ता है। उन्होंने कहा कि वह समाज की सेवा में समर्पित संस्थाओं के साथ मिलकर दिन-रात सेवा करने के लिए हमेशा तैयार हैं। हम सभी को राजनीति से ऊपर उठकर एकजुट होकर सामाजिक कार्यों में अधिक से अधिक योगदान अदा करना चाहिए। संस्था के अध्यक्ष अरविंदर वड़ैच ने अतिथियों को सम्मानित करते उनका धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि हमारी संस्था पिछले 30 वर्षों से हर तरह के सामाजिक कार्यों में योगदान दे रही है। जिसके लिए पूरी टीम के सदस्य बधाई के पात्र हैं। यात्रा के दौरान धार्मिक जागरण गायक सनी सिंह, रिंकू शर्मा, लवलीन वडैच, आशा रानी, कनिका विभिन्न प्रतिभागियों ने भजन गाते हुए भक्तों को मंत्रमुग्ध किया। यात्रा के दौरान पार्षद अमन ऐरी, बलबीर भसीन, डॉ. नरिंदर चावला, धीरज मल्होत्रा, अर्जुन मदान, विकास भास्कर, जतिंदर अरोड़ा, सुशील शर्मा, राम सिंह पवार, दीपक सभरवाल, प्रिंस, ललित मल्होत्रा, हरमिंदर सिंह उप्पल, कमल शर्मा, रमेश चोपड़ा, जतिन नन्नू, संदीप शर्मा, विने अरोड़ा, देव शर्मा, मोनू शर्मा का विशेष सहयोग रहा। इस अवसर पर अशोक कुमार, जसबीर कौर, अर्जुन चोपड़ा, भूपिंदर सिंह, महेश कुमार, गौतम शर्मा, गुंजन शर्मा, मुन्ना ममता, बबीता, मानसी, नीलम रामपाल, सीमा शर्मा, विशाली, शैली, शिवम राजपूत, ज्योति कपूर, मनिंदर कौर आदि उपस्थित थे।

सब्ज़ी मंडी नारायणगढ़, छेहरटा में चलाया गया 'संयुक्त प्रवर्तन अभियान'

अमृतसर, 24 नवंबर (साहिल बेरी)

कमिश्नर, नगर निगम अमृतसर श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल के निर्देशों के तहत वेस्ट ज़ोन में स्थित सब्ज़ी मंडी नारायणगढ़, छेहरटा में संयुक्त प्रवर्तन अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान रेहड़ी/फड़ी वालों को गंदगी फैलाने से रोकने की चेतावनी दी गई तथा कूड़ा केवल निर्धारित स्थानों पर ही डालने के निर्देश दिए गए। स्वच्छता नियमों का उल्लंघन करने वालों के चालान भी काटे गए।

यह जोर दिया गया कि शहर की स्वच्छता, जन-स्वास्थ्य और पर्यावरण संरक्षण सामूहिक ज़िम्मेदारी है। सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने, अव्यवस्था पैदा करने या सफाई कार्य में बाधा डालने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई जारी रहेगी। साथ ही विक्रेताओं, दुकानदारों और नागरिकों से नगर निगम के साथ सहयोग कर अपने आसपास सफाई रखने की अपील की गई।

इस कार्रवाई के दौरान डॉ. रमा, चीफ़ एस.आई. अनिल डोगरा, वेस्ट ज़ोन के सैनिटरी इंस्पेक्टर, सी.एफ. स्टाफ और मोटिवेटर्स मौजूद रहे।

गा लो मुस्कुरा लो, महफ़िलें सजा लो,जीवन की डोर बड़ी कमज़ोर

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

कमजोरी को आध्यात्मिक दृष्टि से जोड़कर प्रस्तुत करता है। जीवन की डोर, जो रिश्तों और संबंधों की सूक्ष्म धागे जैसी होती है, वह न केवल हमारे सांसारिक बंधनों का प्रतीक है, बल्कि यह आत्मा के उस सफर का भी प्रतिनिधित्व करती है जहाँ हम इस पदार्थ जगत से परे जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से, यह डोर अभिप्राय जीवन, अल्पकालीन है क्योंकि हम सब इस सांसारिक शरीर और संसार को छोड़कर वापस परमात्मा के चरणों में लौटते हैं। इसलिए "गा लो मुस्कुरा लो महफ़िलें सजा लो" यह हमें सिखाता है कि इस क्षणभंगुर जीवन में प्रेम, मेलजोल और आनंद का संचार करना आवश्यक है क्योंकि सांसारिक रिश्ते अस्थायी हैं।आध्यात्मिकता में यह स्वीकार है कि जीवन की डोर कमजोर है, लेकिन आत्मा अमर है। जैसे पतंग धागे पर निर्भर है, वैसे ही मनुष्य का सांसारिक जीवन परमात्मा की योजनाओं और कर्मों पर टिका होता है। डोर टूटने का अर्थ मृत्यु नहीं, बल्कि एक नई यात्रा की शुरुआत है, जब आत्मा अपने नश्वर शरीर को छोड़कर अनंत यात्रा पर चलती है। इस दार्शनिक समझ से, जीवन के दुख, बिछड़ाव और क्षणभंगुरता को सहन करना सिखाया जाता है, और यह भी सिखाया जाता है कि खुशियों और महफिलों को सजाना, मुस्कुराना और प्रेम बांटना ही असली आध्यात्मिक प्रगति है।आध्यात्मिक विचारों में, यह डोर हमें यह भी समझाती है कि जीवन में जो भी आता है वह ईश्वर की माया है, और हर सुख-दुख एक शिक्षण प्रक्रिया है, जो हमारे कर्मों का परिणाम और आत्मा के विकास का माध्यम है। जब हम डोर को ईश्वर के हाथ में सौंप देते हैं, तो भय और चिंता से मुक्त होकर निष्काम भक्ति और आस्था से जीवन बिताने का बल मिलता है। इसलिए यह पंक्तियाँ जीवन की क्षणभंगुरता के बीच आध्यात्मिक शांति और जीवन के अनमोल पल जीने का साहस देती हैं। इस प्रकार, जीवन की कमजोर डोर का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि सांसारिक बंधनों और खुशियों का आनंद लेते हुए भी हमें नश्वरता को स्वीकारना चाहिए, अपने कर्मों में स्वच्छता और प्रेम बनाए रखना चाहिए, और परमात्मा की ओर समर्पित होकर जीवात्मा की सच्ची यात्रा पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। यह दृष्टिकोण जीवन के प्रति एक सकारात्मक और ऊर्जावान भावना उत्पन्न करता है, जहां हर क्षण में दिव्यता का अनुभव संभव होता है।

भागतावाला डंप साइट पर चल रहे बायो-रीमेडिएशन कार्य की समीक्षा

अमृतसर 24 नवंबर (साहिल बेरी)

नगर निगम आयुक्त श्री बिक्रमजीत सिंह शेरगिल के दिशा-निर्देशों अनुसार, अतिरिक्त आयुक्त श्री सुरिंदर सिंह ने भागतावाला डंप साइट पर चल रहे बायो-रीमेडिएशन कार्य की समीक्षा की। इस दौरान उनके साथ एम.ओ.एच. डॉ. किरण तथा नगर निगम के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

निरीक्षण के दौरान अतिरिक्त आयुक्त ने दैनिक प्रोसेसिंग आंकड़ों तथा कचरे के निस्तारण की समग्र प्रगति का मूल्यांकन किया। साइट के आंकड़ों के अनुसार 31-10-2025 तक कुल 29,445 मीट्रिक टन लेगेसी वेस्ट का प्रोसेस किया जा चुका था, जबकि 1 नवंबर से 23 नवंबर 2025 के बीच अतिरिक्त 38,576 मीट्रिक टन कचरे का निस्तारण किया गया, जिससे कुल प्रोसेसिंग बढ़कर 68,021 मीट्रिक टन हो गई है।

नवंबर माह के दौरान दैनिक कचरा निस्तारण लगभग 1,677 मीट्रिक टन प्रतिदिन रहा, जो संचालन क्षमता में सुधार को दर्शाता है। अतिरिक्त आयुक्त ने कार्यकारी कंपनी को निर्देश दिए कि बायो-रीमेडिएशन कार्य को और तेज किया जाए, पर्याप्त मशीनरी व मानव संसाधन तैनात किए जाएं, कार्य बिना बाधा जारी रखा जाए तथा साइट पर स्वच्छता और सुरक्षा मानकों का पालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने परियोजना को समय पर पूरा करने पर विशेष जोर दिया, जिससे आसपास के क्षेत्रों को दीर्घकालिक पर्यावरणीय राहत मिल सके।

नगर निगम अमृतसर वैज्ञानिक प्रक्रिया और सतत निगरानी के माध्यम से भागतावाला स्थल को पुनर्स्थापित करने और टिकाऊ कचरा प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है।

हेमन्त सोरेन ने दुमका से "झारखंड फ्लाइंग इंस्टीट्यूट" का किया उद्घाटन

मुख्यमंत्री ने 190 .647 करोड़ रुपये की 12 योजनाओं का किया उद्घाटन, 123 .48 करोड़ रुपये की 14 योजनाओं की रखी आधारशिला

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

जमशेदपुर, राज्य गठन के 25 वर्ष पूरे होने के अवसर पर झारखंड विकास के एक नए दौर में प्रवेश कर रहा है। संथाल परगना से खींची गई विकास की लकीर अब राजधानी रांची तक फैलेगी। यह सिर्फ भौगोलिक विस्तार नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में बड़ा कदम है। आने वाले समय में यह फ्लाइंग इंस्टीट्यूट राज्य के युवाओं के सपनों को साकार करने के साथ-साथ झारखंड को विमानन प्रशिक्षण के क्षेत्र में देशभर में एक विशिष्ट पहचान दिलाएगा। वर्ष 2008 में जिसकी आधारशिला रखी गई थी, उस फ्लाइंग इंस्टीट्यूट ने आज अपने सपनों के पंख खोल दिए हैं। यह सिर्फ एक संस्थान नहीं बल्कि बाबा दिशोम गुरु शिबू सोरेन के सपनों को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है₹। उक्त बातें मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने आज सिदो–कान्हू एयरपोर्ट, दुमका से झारखंड फ्लाइंग इंस्टीट्यूट के उद्घाटन समारोह में कहीं।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि इस फ्लाइंग इंस्टीट्यूट के माध्यम से पहले चरण में 30 पायलटों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। इनमें से 15 पायलटों के प्रशिक्षण का पूरा खर्च राज्य सरकार स्वयं वहन करेगी। इससे झारखंड के युवाओं को न केवल उच्चस्तरीय विमानन प्रशिक्षण मिलेगा, बल्कि वे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकेंगे। उन्होंने कहा कि कोरोना काल के दौरान राज्य सरकार ने मानवता की मिसाल पेश करते हुए हवाई जहाज से हजारों प्रवासी श्रमिकों को उनके घर सुरक्षित वापस लाया था। आज, उन्हीं श्रमिक परिवारों के बेटों और बेटियों में से पायलट और विमान इंजीनियर तैयार करने की दिशा में ठोस कदम उठाया जा रहा है। यह बदलाव की वह कहानी है जो झारखंड की नई उड़ान का संकेत दे रही है।

इस मौके पर मुख्यमंत्री ने प्रशिक्षण से जुड़ी हर बारीकी को गहराई से समझा। उन्होंने स्वयं प्रशिक्षुओं और कैप्टन के साथ मिलकर विमानन प्रशिक्षण की तकनीकों, उपकरणों और ट्रेनिंग के हर पहलू का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने इस दौरान विमानन सुरक्षा, पायलटों को दी जाने वाली कड़ी थ्योरी कक्षाओं, सिम्युलेटर ट्रेनिंग, फ्लाइट ऑपरेशंस और आपात स्थिति प्रबंधन की विधियों को भी देखा।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि "हमारी सरकार जो कहती है, करके दिखाती है,"— राज्य की आधी आबादी को सशक्त बनाने के लिए सरकार ने शिक्षा, स्वास्थ्य, और आर्थिक सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में विशेष कदम उठाए हैं। शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट विद्यालयों की स्थापना से गुणवत्ता शिक्षा पहुंचने लगी है, जिससे युवाओं का सर्वांगीण विकास संभव हो रहा है। विशेष रूप से, रमरांग गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना₹ राज्य सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जो उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को विदेश भेजकर उनके भविष्य को उज्जवल बनाने का काम करती है। इस योजना के तहत हर वर्ष 25 छात्र-छात्राओं को चयनित कर उनकी विदेश में पढ़ाई का पूरा खर्च राज्य सरकार उठाती है। इसमें अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक समुदाय के छात्र शामिल होते हैं। यह कदम राज्य सरकार की उस प्रतिबद्धता का उदाहरण है जो वह कहती है उसे पूरा करके दिखाती है। यह योजना न केवल उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करती है, बल्कि युवाओं को आत्म-निर्भर बनाने और उन्हें वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करने में भी सहायक है।

एसआईआर पर बयान को लेकर मंत्री इरफान फंसे, झारखंड में राजनीतिक घमासान आरंभ

मंत्री के बीएलओं को गेट बंद कर ताला मारने वाली बात पर चुनाव आयोग ने भी खड़े किए कान

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची, अपने बयानों को लेकर सदैव चर्चा में रहने वाले झारखंड के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी ने एसआईआर को लेकर दी गयी वीडियो से झारखंड का सियासी माहौल गरमा गया है। इस वीडियो में इरफान अंसारी चुनाव आयोग की ओर से चलाए जा रहे मतदाता सूची के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन यानी एस आई आर के मसले पर एक सभा में कहते नजर आ रहे हैं कि यदि कोई बूथ लेवल अधिकारी यानी बीएलओ आपके इलाके में एसआईआर के तहत वोटर लिस्ट से नाम काटने के लिए आए तो उसे घर में बंद कर दें। इस पर भाजपा ने पलटवार किया है तो चुनाव आयोग ने भी झारखंड सरकार से रिपोर्ट तलब की है। वहीं मंत्री इरफान अंसारी का कहना है कि उन्होंने नकली बीएलओ के बारे में बयान दिया था जिसे भाजपा तोड़-मरोड़ कर पेश कर रही है।

वायरल वीडियो जामताड़ा जिले में आयोजित सेवा के अधिकार सप्ताह कार्यक्रम का बताया जा रहा है। वायरल वीडियो में इरफान अंसारी कहते नजर आ रहे हैं कि यदि कोई अधिकारी बी एल ओ आपके इलाके में एस आई आर के तहत वोटर लिस्ट से नाम काटने के लिए आए तो उसे गेट में बंद कर दें और ताला मार दें। इसकी जानकारी मुझे दें। हालांकि बयान पर इरफान अंसारी का स्पष्टिकरण भी आ गया है।

इस बयान के बाद भाजपा ने इरफान अंसारी की तीखी आलोचना करते हुए इसे लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उल्लंघन और अराजकता को बढ़ावा देने वाला करार दिया। भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कहा- झारखंड के मंत्री इरफान अंसारी सार्वजनिक तौर पर बोल रहे हैं कि यदि चुनाव आयोग का कोई बूथ स्तर का अधिकारी आपके पास जानकारी लेने आए तो उसे बंधक बना लो। मैं इंडी गठबंधन से पूछना चाहता हूं कि यह लोकतंत्र को बंधक बनाने की निंदनीय कोशिश है या नहीं? क्या संविधान खतरे में है या नहीं?

भाजपा सांसद सुधाशु त्रिवेदी ने आगे आरोप लगाया कि जहां इंडी गठबंधन के लोग सत्ता में आते हैं, वहां संविधान की भावना दरकिनार कर दी जाती है। किस के लिए? कुछ संदिग्ध स्रोतों से वोट प्राप्त करके सत्ता पर काबिज होने के लिए।

वहीं इस पूरे प्रकरण पर चुनाव आयोग ने झारखंड सरकार से रिपोर्ट मांग ली है। चुनाव आयोग ने कहा है कि एसआईआर एक संवैधानिक प्रक्रिया है जिसका मकसद मतदाता सूची को साफ-सुथरा बनाना है। झारखंड में इस प्रक्रिया का अभी पूर्वाभ्यास चल रहा है लेकिन राजनीतिक दल इसे चुनावी हथियार बना रहे हैं। एसआईआर की प्रक्रिया में मतदाता सूची से मृत, फर्जी या अयोग्य मतदाताओं के नाम हटाने और नए पात्र मतदाताओं को जोड़ने का काम होता है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023